सुबह सवेरे

A Daily News Magazine

इंदौर

सोमवार, 31 मार्च, 2025

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 10 अंक 170, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

subahsaverenews@gmail.com

facebook.com/subahsaverenews

www.subahsavere.news

twitter.com/subahsaverenews

पहली बात

‘घरेलू सकल-व्यवहार’ -सामाजिक अध:पतन में सहभागिता की तस्वीर

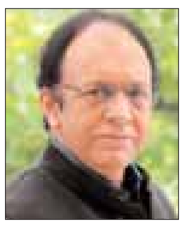

उमेश त्रिवेदी
प्रधान संपादक

जब जहन में ‘इंडिया-फर्स्ट’ की उतावली लहरें ज्वार-भाटे की उन्मादी शक्ल अख्तियार करने लगती हैं, तो कई सवाल कुहराम मचाने लगते हैं...जैसे कि हम ‘इंडिया फर्स्ट’ के इंडेक्स को कैसे नाप रहे हैं? ‘इंडिया फर्स्ट’ के कैनवास में ‘हैप्पीनेस’ के रंगों को कैसे और किस क्रम में उकेरा जा रहा है? भारत की तस्वीर और तकदीर की पायदानों पर पहले, दूसरे, तीसरे अथवा उसके आगे पैमानों की कहानी क्या है? उसकी संवैधानिक थीसिस क्या है? उसमें राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक सरोकारों का संयोजन क्या है? सांस्कृतिक अस्मिता के उत्प्रेरक क्या हैं?

ये सवाल महज बानगी हैं। ‘इंडिया फर्स्ट’ की विस्तारित धारणाओं के घनीभूत होने के साथ ही सवालों का वृत्ताकार भी बढ़ता जा रहा है। ‘इंडिया फर्स्ट’ के ‘इंडेक्स’ को हकीकत में तब्दील करने के लिए इन सवालों के मूल्यों का निर्धारण जरूरी है, ताकि पायदानों की प्राथमिकताएं तय हो सकें। ‘इंडिया फर्स्ट’ की अवधारणाएं कई कड़वी और कठोर सच्चाइयों के रूबरू खड़ी हैं। यह देश के दिशा-बोध को बंधक बनाने वाले सियासी समाज की स्याह हकीकत है। लेकिन पाप की भागीदार वह सिविल सोसायटी भी है, जिसके सोचने-समझने के तौर-तरीकों ने गतिशीलता के पांव में बेड़ियां बांध रखी हैं।

राष्ट्रीय पत्रिका ‘इंडिया टुडे’ ने हाल में एक सर्वेक्षण किया है, जिसमें भारत के ‘सकल घरेलू-व्यवहार’ की थाह पाने की कोशिश की गई है। देश के वित्तीय स्वास्थ्य को आंकने के लिए हर साल होने वाले सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के आर्थिक-सर्वेक्षण की तर्ज पर सकल घरेलू-व्यवहार (जीडीबी) का यह सर्वेक्षण देश में अपनी तरह का पहला सर्वे है। सर्वे भारतीयों की रोजमर्रा की आदतों, तौर-तरीकों और सामाजिक आचार-व्यवहार के बारे में है। इसमें कई चौंकाने वाले खुलासे किए गए हैं।

यह आत्मावलोकन समाज के रूप में खुद को टटोलने के लिए उत्प्रेरित करता है। ‘इंडिया-फर्स्ट’ की उतावली शब्दावली में धैर्य एवं धीरता आवश्यक हैं। सर्वेक्षण कहता है कि ‘जीडीबी’ में उल्लेखित मुद्दों पर पार पाने के लिए लगातार बहस जरूरी है। समाज में बहस को गहरा और व्यापक आकार देना होगा। विकसित राष्ट्र का दर्जा पाने का सफर महज आर्थिक बदलाव की राहों पर चलने वाला सफर नहीं है। इसे हासिल करने के लिए नागरिक के रूप में आचार-व्यवहार और तौर-तरीकों में क्रांतिकारी परिवर्तनों की जरूरत है। क्रांतिकारी बदलावों के प्रति नागरिकों को जागरूक करने के लिए निरन्तर जूझना होगा। इसके बिना विकसित राष्ट्र रूप में भारत का चेहरा बेनूर ही होगा।

फिलवक्त भारत आर्थिकी की लहरों पर सवार है। आर्थिक महाशक्ति बनने के लिए आतुर भारत एक असहज सच्चाई के रूबरू भी खड़ा है। भारत 2030 तक 70 खरब डॉलर याने 581 लाख करोड़ के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के साथ दुनिया की तीसरी अर्थ व्यवस्था बनने के लिए प्रयासरत है। लेकिन हमारी आधी-अधूरी नागरिक चेतना ग्रहण बनकर इन प्रयासों को ग्रस रही है। सामाजिक ताने-बाने में कई ब्लैकहोल हैं। सकल घरेलू-व्यवहार (जीडीबी) के आकलन के लिए देश के नागरिकों से शालीन व्यवहार, हमदर्दी, और नेकनीयती के बारे में बातचीत की गई है।

इसके नतीजे बिल्कुल खुश करने वाले नहीं है। देश के 61 फीसदी लोग अपने काम करवाने के लिए रिश्वत देने को तैयार हैं। 52 प्रतिशत लोग करों से बचने के लिए नकद लेन-देन को सही बताते हैं। 69 प्रतिशत लोग मानते हैं कि घर के मामलों में अंतिम फैसला पुरूषों को लेना चाहिए। देश की करीब आधी आबादी अंतर-धार्मिक या अंतर-जातीय विवाहों के खिलाफ है। देश की वैश्विक आर्थिक महत्वाकांक्षा और उसके सकल घरेलू-व्यवहार में यह चौडी खाई चिंतनीय है। घरेलू व्यवहार से जुडे मुद्दे संविधान में गहराई से रेखांकित हैं। दिलचस्प तथ्य यह है कि लोग इन मुद्दों की महत्ता और आवश्यकता से भलीभांति परिचित हैं। फिर भी वो इन सामाजिक उसूलों की अनदेखी करते हैं।

आम जनता के सकल घरेलू व्यवहार (जीडीबी) का आकलन करने वाले ‘इंडिया टुडे’ के सर्वे में कई मुद्दों को समेटा गया है। दुनिया में देश और समाज की परिस्थितियों के आकलन के लिए सर्वेक्षणों का सिलसिला नया नहीं है। ‘इंडिया टुडे’ ने अपने तरीके से भारतीय समाज की बहुसंख्यक आबादी की ‘करप्ट’ मनोवृत्तियों को उजागर किया है। भ्रष्टाचार, बे-ईमानी, टैक्स-चोरी जैसे मसलों के प्रति भारतीय समाज की सहिष्णुता और स्वीकार्यता सबसे बड़ा चौंकाने वाला तथ्य है। आम आदमी के सामाजिक मूल्यों में उदघाटित यह पतनशीलता देश के कर्णधारों को निरंकुश बनने के लिए उत्प्रेरित कर सकती है।

भारतीय जन-मानस की भ्रष्ट मनोवृत्तियों के ये सूचकांक अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों की उन रिपोर्टों को संपुष्ट करते हैं, जिनमें भारत में भ्रष्टाचार और लोकतांत्रिक मूल्यों मे गिरावट को लेकर चिंताए प्रकट की गई हैं। भ्रष्टाचार और कर-चोरी जैसे मामलो में देश की आधी से ज्यादा आबादी का सहिष्णु रुख दर्शाता है कि पूरे कुँए में भांग घुली है। विडम्बना यह है कि देश में भ्रष्टाचार बढ़ता जा रहा है। ट्रांसपेरेंसी इंटर-नेशनल की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत में भ्रष्टाचार पहले के बनिस्बत ज्यादा घनीभूत हो रहा है। रिपोर्ट के मुताबिक 2022 में ‘करप्शन परसेप्शन इंडेक्स’ की 85वीं सीढ़ी पर काबिज भारत 2023 में उछल कर 93 वीं सीढ़ी पर जा बैठा है। इस प्रकार भारत की रैंकिग 8 स्थान नीचे फिसल गई है।

देश में समाज में भ्रष्टाचार या नैतिक अध:पतन से निपटने के उपायों के सिरे हमेशा खुल होते हैं। सरकार व्दारा भ्रष्टाचार या राजनैतिक-सामाजिक पतन पर लगाम लगाने का उपायों पर लोगों को लेशमात्र विश्वास नहीं है। विडम्बना यह है कि एक निश्चित सामाजिक स्वीकृति के साथ भ्रष्टाचार समाज में जीवन के हिस्से के रूप में जड़ें जमा चुका है।

नैतिक तकाजों के फुगावे और जज्बातों के नकली औजारों के साथ भ्रष्टाचार और अनैतिकता के खिलाफ रणनीति कतई कारगर नहीं होने वाली है। भ्रष्टाचार के खिलाफ नकली और खोखले चिंतन से उपजने वाले विकल्पों में ईमानदारी का ‘स्पेस’ निरंतर कम होता या संकरा होता जा रहा है।

गौरतलब है कि नैतिक अध:पतन के मामलों में सबके अपने-अपने और अलग-अलग सच हैं। तर्क-वितर्क की दुनिया में सच के बेडौल प्रारूप आसानी से पहचान में आने वाली भ्रष्टाचार की हकीकत पर हमेशा भारी पड़ते हैं। इस दौर में यह सवाल गैर-मौजूं है कि मौजूदा राजनीतिक या प्रशासनिक व्यवस्था भ्रष्टाचार के खिलाफ कोई ‘ग्रैंड नेरेटिव’ गढ़ सकेगी ? बल्कि प्रश्न यह है सार्वजनिक जीवन में मूल्यों के अध:पतन को थामने वाले जो पारम्परिक प्रहरी दर किनार हो चुके हैं, उनकी पुनर्स्थापना के उपाय हो सकेंगे अथवा भ्रष्ट यथास्थिति ही बरकरार रहेगी।.

सुप्रभात

वो आएगा नुमाइश ए सामान देखकर,
क्यों कारोबार छोड़ दूं नुक़सान देखकर.!!

नख़रे उठा रही हूं तुम्हारी तलाश के,
रुकती नहीं हूं रास्ता वीरान देखकर.!!

सोचा नहीं था मैंने कभी तेरे जैसा शख्स,
मुंह फेर लेगा मुझको परेशान देखकर.!!

वो तेरा लम्स वो तिरि बाहों की ख़ुशबुएं,
लौटी हूं जैसे कोई गुलिस्तान देखकर.!!

तू लाख बेवफ़ा है मगर सर उठा के चल,
दिल रो पड़ेगा तुझको पशेमान देखकर.!!

ज़ाहिर न हो कि मुझसे तेरा वास्ता भी है,
सबकी नज़र है तुझपे मेरी जान देखकर.!!

– हिमांशी बाबरा

धार किले की प्राचीर से हुआ हिन्दू नववर्ष अभिनंदन, सूर्य अर्घ्य और पूजन

महाराजा भोज फाउंडेशन द्वारा 15 वर्षों से किया जा रहा है आयोजन

धार। महाराजा भोज फाउंडेशन द्वारा आयोजित हिन्दू नववर्ष अभिनंदन में पंद्रह वर्ष से आयोजित किए जा रहे सूर्य अर्घ्य और पूजन कार्यक्रम धार किले की प्राचीर से सम्पन्न हुआ । हिन्दू नववर्ष गुड़ी पड़वा चैत्र शुक्ल प्रतिपदा पर आयोजित इस कार्यक्रम का उद्देश्य अपनी प्राचीन संस्कृति और संस्कारों को आने वाली पीढ़ी को हस्तांतरित करना है। आज के भौतिक युग में हम अपनी सनातन सभ्यता को भुलते जा रहे हैं जबकि दुनिया हिंदुत्व का अनुसरण कर रही है । इस परिस्थिति में हम हिन्दूओं का दायित्व बढ़ गया है आने वाले समय में भारत दुनिया को मार्गदर्शन देने की भुमिका निभाने के लिए तैयार रहे। अपने धर्म, संस्कृति, सभ्यता और धर्म ग्रंथों के प्रति हमें जागरूक बनना होगा, इन्ही उद्देश्यो के लिए यह कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। संस्था द्वारा संस्कृति संरक्षण और पर्यावरण संरक्षण के लिए समाज में जनजागरण करने का संकल्प लिया है। कार्यक्रम में धार नगर की जनता ने बड़ी संख्या में सपरिवार सम्मिलित हो कर कार्यक्रम को सफल बनाया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि वरिष्ठ पत्रकार एवं भाजपा नेता ज्ञानेंद्र त्रिपाठी थे, विशेष अतिथि वरिष्ठ समाजसेवी मोहन जोशी, ओम प्रकाश सोनी एवं प्रसिद्ध चिकित्सक डॉ संदीप खटोड़ थे। अतिथियों का स्वागत, कार्यक्रम संयोजक विनीता रावल, सह संयोजक वर्षा व्यास, कविता मालवीय, श्वेता चौरसिया ने किया। संचालन कार्यक्रम व्यवस्थापक शैलेन्द्र चौरसिया ने किया। सूर्य अर्घ्य और पुजन डॉ निलेश व्यास के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ, कार्यक्रम को सफल बनाने में संस्था के पदाधिकारी राजेश गुप्ता, दीपक श्रीवास्तव, अभिषेक चौधरी, दिपक सिंघारे, दिक्षांत तराणेकर, सुरेन्द्र ठाकुर, योगेन्द्र शर्मा, विकास गुणे, रिंकु मेरवानी की महत्वपूर्ण भूमिका रही। जानकारी संस्था के दीपक बिड़कर ने दी।

हम देव से देश, राम से राष्ट्र का मंत्र लेकर चल रहे हैं

मोदी बोले–संघ अमर संस्कृति का वट वृक्ष, स्वयंसेवक का जीवन निस्वार्थ

नागपुर (एजेंसी)। प्रधानमंत्री मोदी रविवार को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ मुख्यालय केशव कुंज पहुंचे। वे सुबह 9 बजे से दोपहर 1 बजे तक यहां रहे। उन्होंने संघ के संस्थापक केशव बलिराम हेडगेवार और दूसरे सरसंघचालक माधव सदाशिव गोलवलकर (गुरुजी) के स्मारक स्मृति मंदिर पहुंचकर श्रद्धांजलि दी। बतौर प्रधानमंत्री मोदी की यह संघ मुख्यालय का पहला दौरा था। इससे पहले जुलाई 2013 में वह लोकसभा चुनाव के सिलसिले में हुई बैठक में शामिल होने नागपुर आए थे। प्रधानमंत्री ने संघ के माधव नेत्रालय के एक्सटेंशन बिल्डिंग की आधारशिला रखी। प्रधानमंत्री मोदी ने 34 मिनट की स्पीच में देश के इतिहास, भक्ति आंदोलन, इसमें संतों की भूमिका, संघ की निःस्वार्थ कार्य प्रणाली, देश के विकास, युवाओं में धर्म-संस्कृति, स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार, शिक्षा, भाषा और प्रयागराज महाकुंभ की चर्चा की। उन्होंने संघ की जमकर तारीफ की।

संघ की तारीफ, राष्ट्रीय चेतना को बुझने नहीं दिया

स्वामी विवेकानंद से लेकर डॉक्टर साहब तक, किसी ने भी राष्ट्रीय चेतना को बुझने नहीं दिया। राष्ट्रीय चेतना के जिस विचार का बीज 100 वर्ष पहले बोया गया था, वह आज एक महान वटवृक्ष के रूप में खड़ा है।

दीक्षांत समारोह वास्तव में सेवा के संकल्प का समारोह है : राज्यपाल पटेल

विक्रम विश्वविद्यालय अब सम्राट विक्रमादित्य विश्वविद्यालय के नाम से जाना जाएगा : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भोपाल /उज्जैन (नप्र)। राज्यपाल मंगुभाई पटेल और मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की उपस्थिति में रविवार को विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन का 29वां दीक्षांत समारोह आयोजित हुआ। स्वर्ण जयंती सभागार में आयोजित समारोह में मुख्यमंत्री डॉ. यादव और हार्टफुलनेस संस्था के संस्थापक श्री कमलेश पटेल को विश्वविद्यालय द्वारा डी-लिट की मानद उपाधि प्रदान की गई। साथ ही 70 विद्यार्थियों को उपाधि, 99 को मेडल और 2 शोधार्थियों को डी-लिट उपाधि प्रदान की गई।

राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि विक्रम विश्वविद्यालय में आयोजित दीक्षांत समारोह में सम्मिलित होकर अत्यंत आनन्द का अनुभव हो रहा है। दीक्षान्त समारोह में अपनी उपाधियाँ प्राप्त करने वाले सभी छात्र-छात्राओं को मैं आत्मीय बधाई देता हूँ। राज्यपाल ने सभी विद्यार्थियों के यशस्वी एवं मंगलमय भविष्य की कामना करते हुए कहा कि दीक्षांत समारोह वास्तव में सेवा के संकल्प का समारोह है। जीवन में सफलता के लिए कठोर अनुशासन की आवश्यकता होती है।

राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि शिक्षा, धर्म, साहित्य, संस्कृति, विज्ञान और व्यापार के क्षेत्रों में भारत के मानचित्र पर उज्जैन की अपनी विशिष्ट पहचान है। क्षिप्रा के पवित्र तट पर बसे उज्जैन नगर में विद्याध्ययन की अभिलाषा से आये श्रीकृष्ण की कथा पूरे संसार में प्रसिद्ध है। महर्षि सान्दीपनि के

गुरुकुल का यह पुरातन क्षेत्र आज भी जन-जन की आस्था का केन्द्र है, जहाँ स्वयं जगद्गुरु ने शिक्षा पायी थी। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में ज्ञान-विज्ञान के अनेक नवीन क्षेत्र प्रकाश में आ रहे हैं। पारम्परिक विषयों के साथ अनेक नवीन विषयों में उच्च शिक्षा के नये आयाम विकसित हुए हैं। भारत के प्रतिभा सम्पन्न छात्र-छात्राओं ने विश्व फलक पर अपनी प्रतिभा और क्षमता का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है।

राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि दीक्षित होने वाले विद्यार्थी अपने माता-पिता और गुरुजनों का आजीवन सम्मान करें। माता-पिता कई कष्टों को झेलकर अपने बच्चों का पालन-पोषण और शिक्षा-दीक्षा की व्यवस्था करते हैं। अतः जीवन में अपने माता-पिता का सदैव सम्मान करें और उनकी सेवा करें, तभी हम अपने समाज और राष्ट्र की सेवा कर सकेगें और हमारा जीवन बेहतर होगा। एक अच्छे और जिम्मेदार नागरिक बन कर हम अपने देश की प्रगति में योगदान दे सकेंगे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि आज का दिन कई मायनों में हम सब के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। उज्जैन नगरी सात पवित्रतम नगरियों में से एक है। हर कल्प में इसका विशेष महत्व रहा है। आज भारतीय नव वर्ष प्रतिपदा पर हम सब हर्षोल्लास के साथ गुड़ी पड़वा और चैटी चंड पर्व मना रहे हैं। आज उज्जैन का गौरव दिवस भी है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि विक्रम विश्व विद्यालय अब सम्राट विक्रमादित्य के नाम से जाना जाएगा। माधव विज्ञान महाविद्यालय के परिसर में शीघ्र ही विशाल सभागार बनाया जाएगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सभी को बधाई देते हुए कहा कि जिन विद्यार्थियों को उपाधि प्रदान की गई है, वे अपनी प्रतिभा का उपयोग अभीष्ट उद्देश्य की प्राप्ति के लिए करें। समाज-सेवा और राष्ट्र की सेवा करें। भविष्य कि अपार संभावनाएं आपका इंतजार कर रही हैं। हमारे शोधार्थी विश्व पटल पर अपने शहर, राज्य और देश का नाम लेकर जाएं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने उज्जयिनी के गौरव दिवस और विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह की बधाई देते हुए कहा कि विद्यार्थियों ने अपनी प्रतिभा और परिश्रम के आधार पर प्रावीण्य सूची में स्थान प्राप्तकरने के साथ अन्य उपलब्धियां अर्जित की हैं। यह उपलब्धियां विद्यार्थियों के ज्ञान और विद्या के साथ उनका उत्तरदायित्व भी बढ़ाती हैं। विद्यार्थियों के लिए भविष्य की अनेक संभावनाएं विद्यमान हैं। यही कामना है कि विद्यार्थी न केवल देश एवं प्रदेश की सेवा करें अपितु अपने कर्म और योगदान के आधार पर विक्रम विश्वविद्यालय के साथ प्रदेश और देश का नाम भी दुनिया में रोशन करें। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने दीक्षांत समारोह में सम्मिलित सभी विद्यार्थियों को उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दीं।

शाह ने बिहार सीएम के नाम का कर दिया ऐलान

कहा-मोदी और नीतिश के नेतृत्व में यहां बनाइए सरकार

पटना (एजेंसी)। बिहार विधानसभा चुनाव में एनडीए के सीएम फेस को लेकर जारी चर्चा के बीच केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने इशारों-इशारों में संकेत दे दिया है, कि नीतिश कुमार ही मुख्यमंत्री का चेहरा होंगे। पटना के बापू सभागार में सहकारिता विभाग के एक कार्यक्रम में शाह ने कहा कि ‘2025 में मोदी जी और नीतिश जी के नेतृत्व में बिहार में एक

बार फिर से एनडीए की सरकार बनाइए और भारत सरकार को बिहार के विकास का मौका दीजिए’ बिहार को बदलने में नीतिश कुमार की अहम भूमिका रही है। उन्होने 2025 के चुनाव में मोदी और नीतिश के नेतृत्व में एनडीए की सरकार बनाने की अपील की। शाह ने कहा जेडीयू और भाजपा मिलकर बिहार को विकास के रास्ते पर तेजी से ले जाएंगे। 2025 में प्रचंड बहुमत के साथ एनडीए की सरकार बनेगी। अमित शाह के बयान से एनडीए के सीएम कैंडीडेट का मसला साफ होता दिख रहा है। बीजेपी और जदयू के नेता पहले से ही नीतिश कुमार के नेतृत्व में 2025 का चुनाव लड़ने की बात कहते आ रहे हैं।

लालू और राबड़ी पर बरसे जंगलराज की याद दिलाई

मैं लालू जी से पूछता हूं कि आपने गरीबों के लिए कुछ किया हो तो खाका लेकर आइए। लालू यादव ने गरीबों ने कुछ नहीं किया। राजद के शासन काल में अपहरण, हत्या, लूट और नरसंहार होता था। बिहार का नाम बदनाम हुआ। एनडीए की सरकार ने बिहार के विकास के लिए काम किया। बिहार में जंगलराज है अब ये नहीं कहा जा सकता। लालू यादव के शासन में विकास चौपट हुआ। चीनी मिले बंद हुईं। मैं जनता से कहने आया हूं कि फिर से एनडीए की सरकार बनाइए, हम चीनी मिलों को फिर से शुरू करेंगे। लालू यादव और यूपीए की सरकार पर निशाना साधते हुए अमित शाह ने कहा कि जब केंद्र में यूपीए की सरकार थी, लालू यादव मंत्री थे।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 22°c
न्यूनतम 16°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ सोमवार,31 मार्च 2025

> जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।
>
> चाणक्य नीति

ओडिशा के कटक में बेंगलुरु-कामाख्या एक्सप्रेस बेपटरी

11 एसी कोच पटरी से उतरे, 1 की मौत, 25 लोग घायल

भुवनेश्वर (एजेंसी)। ओडिशा के कटक में रविवार को बेंगलुरु-कामाख्या सुपरफास्ट एक्सप्रेस (12551) के 11 एसी कोच पटरी से उतर गए। हादसे में एक यात्री की मौत हो गई जबकि 25 अन्य घायल हैं। मेडिकल और इमरजेंसी टीम मौके पर भेजी गई है। हादसा सुबह 11.54 बजे नेरगुंडी स्टेशन के पास हुआ। अधिकारियों ने बताया कि हादसे की वजह से तीन ट्रेन डायवर्ट की गई हैं। फंसे हुए यात्रियों को कामाख्या ले जाने के लिए विशेष ट्रेन 4.10 बजे घटनास्थल पर पहुंच गई है। इससे पहले ईस्ट कोस्ट रेलवे के अफसर अशोक मिश्रा ने बताया था कि सभी यात्री सुरक्षित हैं। हालांकि न्यूज एजेंसी की तरफ से जारी विजुअल्स में एक घायल स्ट्रेचर पर ले जाए जाते दिख रहा था। ईस्ट कोस्ट रेलवे के सीपीआरओ अशोक कुमार मिश्रा ने ट्रेन के पटरी से उतरने की पुष्टि की है। मिश्रा ने कहा कि कटक में नेरगुंडी रेलवे स्टेशन के पास कामाख्या एक्सप्रेस ट्रेन के कुछ कोच पटरी से उतरे हैं। उन्होंने कहा कि हमें जानकारी मिली है कि 11 एसी डिब्बे पटरी से उतर गए हैं। कोई भी घायल नहीं हुआ है। सभी यात्री सुरक्षित हैं। जहां तक हमें जानकारी मिली है, दुर्घटना राहत ट्रेन, आपातकालीन चिकित्सा उपकरण भेजे गए हैं। सीपीआरओ अशोक कुमार मिश्रा ने कहा कि वरिष्ठ अधिकारी जल्द ही घटनास्थल पर पहुंचने वाले हैं। डीआरएम खुर्दा रोड, जीएम/ईसीओआर और अन्य उच्च स्तरीय अधिकारी घटनास्थल पर पहुंच गए हैं। जांच के बाद हमें पटरी से उतरने का कारण पता चलेगा। हमारी पहली प्राथमिकता मार्ग पर प्रतीक्षा कर रही ट्रेनों को डायवर्ट करना और बहाली का काम शुरू करना है।

रेलवे ने हेल्पलाइन नंबर जारी किए

ईस्ट कोस्ट रेलवे ने बेंगलुरु-असम कामाख्या एक्सप्रेस के पटरी से उतरने के बाद हेल्पलाइन नंबर जारी किए हैं। रेलवे की तरफ से कहा गया है कि इस घटना में कोई भी यात्री की मौत नहीं हुई। हालांकि बाद न्यूज एजेंसी ने बताया कि एक व्यक्ति की मौत हो गई है। तमाम आलाधिकारी मौके पर पहुंच चुके हैं। बाकी अण्धिकारी भी पहुंच रहे हैं। ट्रेन में सवार यात्रियों को स्नैक्स और पीने का पानी दिया है। कटक में कामाख्या एक्सप्रेस के पटरी से उतरने की यह घटना ऐसे वक्त पर सामने आई है जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी छत्तीसगढ़ के दौरे में आ रहे। रेलवे की तमाम परियोजनाओं का शिलान्यास कर दिया है। पीएम मोदी ने अभनपुर से रायपुर के बीच एक मेमू ट्रेन को भी रवाना किया है।

म्यांमार भूकंप में अब तक 1644 की मौत, 3400 घायल

- 334 एटॉमिक बम ब्लास्ट के बराबर था भूकंप का असर

नेपीदा (एजेंसी)। म्यांमार में शनिवार दोपहर 3.30 बजे फिर भूकंप आया। रिक्टर स्केल पर इसकी तीव्रता 5.1 मापी गई। इस तरह बीते 2 दिन में 5 से ज्यादा तीव्रता वाले तीन भूकंप आए हैं। शुक्रवार सुबह 11.50

बजे 7.7 तीव्रता के भूकंप के बाद म्यांमार में भारी तबाही हुई। म्यांमार और थाईलैंड में यह 200 साल का सबसे बड़ा भूकंप था। एजेंसी ने एक जियोलॉजिस्ट के हवाले से बताया है कि इस भूकंप का असर 334 एटॉमिक बम में ब्लास्ट के बराबर था। न्यूज एजेंसी के मुताबिक शनिवार तक मरने वालों का आंकड़ा 1644 हो चुका है, जबकि 3,408 से ज्यादा लोग घायल हुए और 139 लोग लापता हैं। उधर, थाईलैंड की राजधानी बैंकॉक में एक 30 मंजिला इमारत गिर गई।

हिमाचल में लैंडस्लाइड में 4 कारें दबीं, 6 की मौत

- मणिकर्ण गुरुद्वारे के पास कुछ टूरिस्ट के मलबे में दबे होने की आशंका

कुल्लू (एजेंसी)। हिमाचल प्रदेश के धार्मिक पर्यटन स्थल मणिकर्ण में गुरुद्वारे के पास रविवार शाम करीब 4 बजे पहाड़ी से लैंडस्लाइड हो गया। ये लैंडस्लाइड तेज तूफान के कारण भारी भरकम पेड़ के गिरने से हुआ। पेड़ सड़क पर पहले से ही खड़ी करीब 6 गाड़ियों पर गिरा। जिससे इन

गाड़ियों में सवार कुल 6 लोगों की मौत हो गई। इसके अलावा कुछ लोगों के मलबे में दबे होने की आशंका भी है। प्रशासन और पुलिस रेस्क्यू में जुटी हुई है। हादसे के बाद काफी देर तक कुछ लोग गाड़ियों के अंदर ही फंसे रहे, जिन्हें पुलिस ने बाहर निकाला। घायलों की संख्या अभी स्पष्ट नहीं है। स्थानीय लोगों की मदद से घायलों को नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया गया है और गंभीर रूप से घायल लोगों को कुल्लू रेफर किया गया है। सड़क पर आए मलबे को हटाकर दबे लोगों की तलाश जारी है।

कला समीक्षक से ज़्यादा प्रोत्साहक की भूमिका निभाई : शकील अख्तर

इंदौर। 'रंगमंच के एक कलाकार के रूप में मैंने इंदौर से अपनी कला का सफ़र शुरू किया था। आज मुझे कला समीक्षक का सम्मान दिया गया है। परंतु मैं समझता हूँ कि मैंने अपने थियेटर जर्नलिज़्म में बतौर कला समीक्षक के दृष्टिकोण की जगह कलाकारों के हित में एक प्रोत्साहक (आर्ट प्रमोटर) की भूमिका निभाने की कोशिश की है। इसकी वजह यह है कि मैं ख़ुद एक कलाकार रहा हूँ और रंगमंच के कलाकारों के संघर्ष और दर्द को समझता हूँ'। यह बात वरिष्ठ पत्रकार,लेखक और कला समीक्षक शकील अख़्तर ने कही। अभिनव रंगमंडल द्वारा उन्हें 'राष्ट्रीय अभिनव कला समीक्षक सम्मान' प्रदान करने के अवसर पर वे अपने विचार व्यक्त कर रहे थे।

इंदौर के आनंद मोहन माथुर सभागृह में यह अभिनव राष्ट्रीय नाट्य समारोह की समापन की यह तीसरी और अंतिम संध्या थी। इस दिन तीसरी प्रस्तुति के रूप में प्रेमचंद रचित और वीणा शर्मा निर्देशित हास्य नाटक 'रसिक संपादक' का प्रभावशाली मंचन किया गया। यह रंग विशारद, दिल्ली की यादगार प्रस्तुति रही। कायक्रम में बतौर अतिथि स्टेट प्रेस क्लब और अभिनव कला समाज,इंदौर के अध्यक्ष प्रवीण कुमार खारीवाल, रचनात्मक गतिविधियों के संरक्षक व्यक्तित्व राहुल जैन और अभिनव रंगमंडल के प्रमुख वरिष्ठ नाट्य निर्देशक शरद शर्मा मौजूद थे। इस अवसर पर अख्तर का अतिथियों द्वारा श्रीफल और शाल से सत्कार किया गया। उन्हें प्रशस्ति पट्टिका और 11,000/ रूपए की राशि भेंट की गई।

अपने सम्बोधन के दौरान भावुक हुए शकील अख़्तर ने अपने रंगमंच के सफ़र से जुड़े उन मंचों, कलाकारों और निर्देशकों को भी याद किया, जिनकी वजह से उनमें कला की समझ और रचनात्मक दृष्टि पैदा हुई।

स्टेट प्रेस क्लब के प्रवीण कुमार खारीवाल ने अपने सम्बोधन में कहा कि शकील अख़्तर बहुआयामी प्रतिभा के धनी हैं, उनके पास हर तरह के काम का व्यावहारिक अनुभव है। इससे भी बढ़कर वे एक सहज और सरल इंसान हैं। वे वर्षो से अभिनव कला समाज और स्टेट प्रेस क्लब के आयोजनों में अपनी अहम भूमिका निभाते रहे हैं। वे हमेशा ही नई कल्पनाओं के साथ पत्रकारिता और कलाकारों के हित से जुड़े कामों के लिये निरंतर बेहतर प्रयास करते रहते हैं।

अपने सम्बोधन में अभिनव रंगमंडल के प्रमुख शरद शर्मा ने कहा, शकील अख़ूतर 11 वें ऐसे कला व्यक्तित्व हैं जिन्हें कला समीक्षक यह सम्मान प्रदान किया गया है। नाट्य समीक्षाओं में उनकी दृष्टि और उनके किये कामों ने उन्हें इस सम्मान का अधिकारी बनाया है। कलाकारों के हितैषी राहुल जैन ने कहा, शकीलजी को मैं वर्षों से जानता हूँ। उन्होंने इंदौर से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक समाचार पत्रों और टीवी ज़र्नलिज़्म में अपनी अलग पहचान वाली भूमिका निभाई है। मैं उन्हें एक ज़िम्मेदार कला समीक्षक कहना चाहूँगा। अंत में शरद शर्मा ने आभार व्यक्त किया। शकील अख़ूतर ने रसिक सम्पादक में मुख्य भूमिका निभाने वाले कलाकार सुशील शर्मा का पुष्पहार से स्वागत किया। सभी कलाकारों की प्रशंसा करते हुए उनकी 71 वीं प्रस्तुति की प्रशंसा की।

गृह मंत्रालय ने जारी किया आदेश

मणिपुर, नागालैंड और अरुणाचल प्रदेश में फिर बढ़ाया गया अफ्सपा

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्र सरकार ने पूर्वोत्तर के 2 राज्यों मणिपुर और नागालैंड में सशस्त्र बल विशेष शक्तियां अधिनियम (अफस्पा) को 6 महीने के लिए बढ़ा दिया है। मौजूदा हालात को देखते हुए अरुणाचल प्रदेश को लेकर भी यह फैसला लिया गया है। गृह मंत्रालय की अधिसूचना के अनुसार, केंद्र सरकार ने मणिपुर राज्य में कानून और व्यवस्था की स्थिति की समीक्षा की। इसके बाद, सशस्त्र बल विशेष शक्तियां अधिनियम, 1958 (1958 का 28) की धारा 3 की ओर से प्रदत्त शक्तियों का इस्तेमाल किया। 5 जिलों के 13 थानों के अधिकार क्षेत्र में आने वाले इलाकों को छोड़कर पूरे मणिपुर को 1 अप्रैल 2025 से 6 माह तक अशांत क्षेत्र घोषित किया जाता है। मणिपुर के इंफाल, लांफेल, सिटी, सिंगजामेई, पाटसोई, वांगोई, पोरोम्पैट, हिंगांग, इरिलबुंग, थौबल, बिष्णुपुर, नामबोल और काकचिंग थाना क्षेत्र में अफस्पा प्रभावी नहीं होगा। अरुणाचल प्रदेश के तीन जिलों (तिरप, चांगलांग और लोंगडिंग) और राज्य के 3 पुलिस थाना क्षेत्रों में अफस्पा को छह महीने के लिए बढ़ाया गया है। मंत्रालय ने बताया कि यह अधिनियम केंद्र की मंजूरी के बिना अशांत क्षेत्रों में काम कर रहे सशस्त्र बलों को व्यापक शक्तियां और अभियोजन से छूट देता है। मणिपुर, नागालैंड और अरुणाचल प्रदेश में अफ्सपा क्रमशः 1958, 1958 और 1972 से लागू है। इसकी मुख्य वजह इन क्षेत्रों में सक्रिय अलगाववादी और उग्रवादी समूहों की गतिविधियां हैं, जो भारत की संप्रभुता के खिलाफ हिंसक संघर्ष करते रहे हैं।

शराब से 5 हजार करोड़ दूध से 210 करोड़ टैक्स

- दिल्ली में 2023-24 में हर रोज 6 लाख लीटर शराब बिकी

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली सरकार ने मौजूदा वित्त वर्ष में शराब पर टैक्स से 5,068.92 करोड़ रुपये की कमाई की है, जबकि दूध और डेरी प्रोडक्ट से सिर्फ 209.9 करोड़ रुपये मिले हैं। यह जानकारी विधानसभा में बीजेपी विधायक अभय वर्मा के सवाल पर सरकार ने दिया। राज्य सरकार के मुताबिक, दिल्ली में 2023-24 में 21.27 करोड़ लीटर शराब बिकी, यानी हर दिन करीब 5.82 लाख लीटर। 2022-23 में यह आंकड़ा 25.84 करोड़ लीटर था। आप सरकार ने नवंबर 2021 में नई शराब नीति लागू की थी, जिससे शराब की बिक्री सिर्फ निजी दुकानों तक सीमित हो गई थी लेकिन सितंबर 2022 में पुरानी नीति दोबारा लागू होने के बाद सरकारी शराब दुकानें फिर से खुल गईं।

विज्ञान उत्सव में 38 युवा वैज्ञानिक हुए पुरस्कृत

विज्ञान प्रौद्योगिकी में नवाचार से ही विकास संभव: सीएम यादव

विक्रमोत्सव

डॉ. जफर महमूद
उज्जैन से

125 दिवसीय विक्रमोत्सव में राष्ट्रीय वैज्ञानिक सम्मेलन एवं विज्ञान उत्सव का आयोजन हुआ। इस मौके पर देशभर से पधारे वैज्ञानिकों ने कहा प्राचीन भारतीय वैज्ञानिक विरासत ही विकास का मार्ग प्रशस्त रही है। महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ तथा मध्य प्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित सम्मेलन में विभिन्न श्रेणियों में उत्कृष्ट शोध कार्य प्रस्तुत करने वाले युवा वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं को मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद द्वारा पुरस्कृत किया गया। पुरस्कार वितरण समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ के निदेशक श्रीराम तिवारी ने युवा वैज्ञानिकों को सम्मानित करते हुए विज्ञान और नवाचार के क्षेत्र में उनके योगदान की सराहना की। इस अवसर पर मध्य प्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद के महानिदेशक डॉ.अनिल कोठारी ने सम्मेलन की सफलता पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए सभी प्रतिभागियों, आयोजकों और वैज्ञानिक समुदाय का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के आयोजन वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देने और युवा वैज्ञानिकों को प्रेरित करने में सहायक होते हैं। इस सम्मेलन के सफल आयोजन ने वैज्ञानिक नवाचार को प्रोत्साहन देने और भविष्य की संभावनाओं को तलाशने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम रखा है।

सम्मेलन में भारतीय विज्ञान परंपरा, स्वदेशी विज्ञान, टेक्नोलॉजी, रक्षा प्रणाली और नवीन वैज्ञानिक खोजों पर विस्तृत विचार-विमर्श किया गया। आयोजन का मुख्य उद्देश्य भारतीय वैज्ञानिक विरासत और आधुनिक विज्ञान के मध्य समन्वय स्थापित करना था,ताकि देश की वैज्ञानिक प्रगति को और अधिक गति मिल सके। इस सम्मेलन में देशभर से 250 से अधिक वैज्ञानिकों एवं युवा शोधकर्ताओं ने भाग लिया। उन्होंने अपने शोध-पत्र प्रस्तुत किए और विभिन्न वैज्ञानिक विषयों पर अपने विचार साझा किए। सम्मेलन के दौरान विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार से जुड़े महत्वपूर्ण पहलुओं पर गहन चर्चा की गई।

राष्ट्रीय वैज्ञानिक सम्मेलन एवं विज्ञान उत्सव का शुभारंभ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने करते हुए कहा कि उज्जैन विज्ञान प्रेमियों का नगर हमेशा से ही रहा है । यह नगर कालगणना के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। विज्ञान प्रौद्योगिकी और उसमें नवाचार के माध्यम से ही हम विकास की बात कर सकते हैं और यही आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। मध्यप्रदेश जल्द ही अपनी नई स्पेस पॉलिसी बनाएगा। मध्यप्रदेश विज्ञान अनुसंधान केंद्र की स्थापना के क्षेत्र में भी कदम बढ़ाएगा। हमेशा विकट परिस्थितियों एवं चुनौतियों के बीच देश के वैज्ञानिकों ने ही देश को सुरक्षित किया है। आज विज्ञान के क्षेत्र में भारत ग्लोबल लीडर बन रहा है। मुख्यमंत्री यादव ने कहा कि हमारी सनातन संस्कृति विज्ञान आधारित है। विज्ञान आधारित आज कृषि, रक्षा सहित अनेक क्षेत्रों को विज्ञान ने बहुत ही सशक्त और जनसुलभ बनाया है। इससे हमारी आर्थिक प्रगति भी हुई है। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए वैज्ञानिक रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के डॉ. सुधीर कुमार मिश्रा ने कहा कि मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में मध्यप्रदेश में अनुसंधान और विज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य हो रहे हैं। वर्तमान में देश में युवा वैज्ञानिकों के लिए बहुत अवसर है उन्हें इस क्षेत्र में आगे आना चाहिए। सुदूर संचार उपग्रह केंद्र हैदराबाद के डॉ. प्रकाश चौहान संबोधित करते हुए कहा कि देश में स्पेस पॉलिसी के माध्यम से युवाओं को बेहतर रोजगार के अवसर मिलेंगे ।नए स्टार्टअप सामने आयेंगे। हमारा प्रयास युवा वैज्ञानिकों और उनकी सोच को उचित स्थान देना है। विश्व की आर्थिक प्रगति में विज्ञान ने हमेशा ही महत्वपूर्ण योगदान दिया है। जब तक हम विज्ञान और टेक्नोलॉजी पर जोर नहीं देंगे तब तक आर्थिक व सामाजिक रूप से हम सक्षम नहीं हो सकते।मध्य प्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद् के महानिदेशक डॉ. अनिल कोठारी तथा विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन के कुलगुरु अर्पण भारद्वाज ने डॉ. सुधीर कुमार मिश्रा, विवेकानंद पाई-राष्ट्रीय महासचिव विज्ञान भारती, डॉ. प्रकाश चौहान, डॉ. आरसी रानाडे, डॉ. राकेश सिंघाई का स्वागत किया।

38 युवा वैज्ञानिक हुए पुरस्कृत

विक्रमोत्सव में मध्य प्रदेश काउंसिल ऑफ साइंसेस एंड टेक्नोलॉजी भोपाल के द्वारा विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन के सहयोग से आयोजित युवा वैज्ञानिक सम्मेलन में युवा

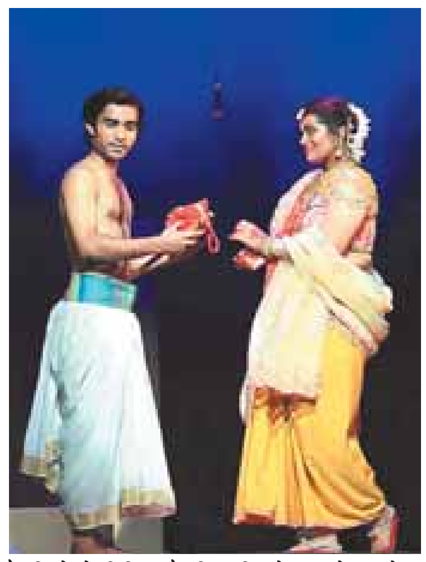

वैज्ञानिकों ने विभिन्न वैज्ञानिक विषयों पर शोध पत्रों का वाचन किया। इनमें निम्न को पुरस्कार प्राप्त हुआ। कृषि विज्ञान पर जबलपुर के सत्येंद्र ठाकुर को प्रथम और भोपाल के अभिषेक उपाध्याय को द्वितीय ।केमिकल इंजीनियरिंग में भोपाल की प्राची उपाध्याय को प्रथम। केमिकल साइंसेस में भोपाल के शांति सारंगी को प्रथम, समीक्षा अग्रवाल को द्वितीय तथा शशांक शर्मा और इन्दौर की रोमिका जैन को तृतीय। सिविल इंजीनियरिंग में इंदौर के संचित गुप्ता को प्रथम। कंप्यूटर साइंस इंजीनियरिंग एंड इनफॉरमेशन टेक्नोलॉजी में भोपाल की स्वाधीन अग्रवाल प्रथम आकांक्षा शर्मा एवं इंदौर की भावना लखानी को द्वितीय । अर्थ और एटमॉस्फेरिक साइंसेस में सागर के अमन सोनी को प्रथम। इलेक्ट्रिकल और इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग में इंदौर के विकास कुमार वर्मा को प्रथम। एनवायरमेंटल साइंस में इंदौर के विजय जैन को प्रथम तथा ग्वालियर की सोनल सिंह को प्रथम। लाइफसाइंसेस में भोपाल की रूपल राय को प्रथम गरिमा जोशी को द्वितीय एवं सुखराज कौर एवं जबलपुर की सुश्री पलक नैब को तृतीय। मैथमेटिकल साइंस में भोपाल की सुश्री भावना सिंह को प्रथम सागर की साक्षी गौतम को प्रथम एवं उज्जैन की आकांक्षा अग्रवाल को द्वितीय। मैकेनिकल इंजीनियरिंग में इंदौर की दीक्षा जौरकर को प्रथम। मेडिकल साइंसेस एवं आयुष में भोपाल की मोइरंगथेन संगीता को प्रथम, शहडोल की मनीषा शुक्ला को द्वितीय। न्यू बायोलॉजी में इंदौर की मीनाक्षी कंडपाल प्रथम ग्वालियर के अंशुमान बैहरा एवं इंदौर की बुशरा खान द्वितीय। फार्मेसयुटीकल साइंसेस में

साक्षी सोनी सागर को प्रथम अमरकंटक के मनीष शाक्य को द्वितीय तथा सागर की सृजना रायकवार तथा छतरपुर की जागृति चौरसिया को तृतीय। फिजिकल साइंसेस में उज्जैन की सुश्री मोनिका बैरागी को प्रथम इंदौर की कृतिका शर्मा को द्वितीय तथा ग्वालियर की साक्षी गौतम को तृतीय। प्लांट साइंसेस में भोपाल की ऋतुपर्णा एवं इंदौर की समीरा मंसूरी को प्रथम। वेटरनरी साइंस में जबलपुर की सुश्री सुप्रिया सचान को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ।

नवाचारी मृच्छकटिकम् के मंचन के साथ विक्रम नाट्य समारोह संपन्न

महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ द्वारा विक्रमोत्सव के अंतर्गत विक्रम नाट्य समारोह के समापन अवसर पर मध्य प्रदेश नाट्य विद्यालय भोपाल द्वारा तैयार किया गया नाटक मृच्छकटिकम् का मंचन हुआ। मध्यप्रदेश नाट्य विद्यालय के निदेशक टीकम जोशी द्वारा निर्देशित 'मृच्छकटिक' शास्त्रीय, भारतीय नाट्य परम्परा का श्रेष्ठ नाटक है। विद्यार्थियों के व्यावहारिक ज्ञान के लिए इस प्रकरण में विभिन्न चरित्र अभिनेताओं को आकर्षित करते है, इस प्रकरण में आये विभिन्न रस, भाव, अभिनय, गीत-संगीत आदि नाट्य शास्त्र को सहज रुप से समझने में सहायक हैं।

कवि शूद्रक द्वारा रचित नाट्य शास्त्र में बताए दस रुपकों में से एक प्रकार है। यह नाटक की तरह ही लिखा जाता है। इसकी कथा काल्पनिक होती है। इस प्रकरण के प्रथम चार अंक कुछ परिवर्तन के साथ भास के 'दरिद्र चारुदत्त' की प्रतिकृति है। अन्त के छः अंक राजनीति, षड्यंत्र, न्यायपालिका, भ्रष्टाचार आदि के विषय नाटक को आधुनिक बना देते हैं। चारुदत्त एवं बसंत सेना के प्रेम (श्रृंगार रस) प्रसंग को इनके साथ बहुत ही अच्छी तरह से मिश्रण किया है। सहज रुप से समझने में सहायक है। नवाचारों के साथ प्रस्तुत यह नाटक दर्शकों को रोचकता के साथ प्रदर्शित किया गया। मंचन से पूर्व महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ के निदेशक श्रीराम तिवारी, विक्रमोत्सव आयोजन समिति के सदस्य राजेश सिंह कुशवाह एवं वरिष्ठ पुराविद डॉ. रमण सोलंकी ने कलाकारों का स्वागत किया।

नवरात्र प्रथम दिन, देवी मंदिरों में उमड़ी श्रद्धालुओं की भीड़

महाराष्ट्रीयन परिवारों में सजाई थी गुड़ी, महिलाओं ने बनाई रंगोली

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में हिंदू नववर्ष गुड़ी पड़वा पर राजवाड़ा में विशेष आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत प्रातः 5.30 बजे हुई। कार्यक्रम में द्वीप प्रज्वलन और संस्कार भारती का ध्येय गीत प्रस्तुत किया गया। यहां सभी ने उगते सूर्य को वैदिक मंत्रोच्चार के साथ अर्घ्य देकर नव वर्ष का स्वागत किया। इसके बाद दोपहर से देवी मंदिरों में श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ पड़ी थी। नवरात्रि के पहले दिन अन्नपूर्णा मंदिर में श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ी। मंदिर प्रबंधन ने श्रद्धालुओं को आसानी से दर्शन हों इसके लिए विशेष इंतजाम किए थे। नवरात्रि के पहले दिन अन्नपूर्णा मंदिर में श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ी। मंदिर प्रबंधन ने श्रद्धालुओं को आसानी से दर्शन हों इसके लिए विशेष इंतजाम किए हैं। कार्यक्रम में मंत्री कैलाश विजयवर्गीय, तुलसी सिलावट, सांसद शंकर लालवानी, महापौर पुष्यमित्र भार्गव, साधु-संतों सहित अन्य नेता व महिलाएं मौजूद रहे। इस अवसर पर महिलाओं ने रंगोली भी सजाई और सूर्य स्तुति के बाद रामधुन भी बजाई गई। कार्यक्रम के अंत में गुड़-धनिया और नीम के पत्तों का प्रसाद वितरण किया गया। सूर्य को अर्घ्य देने के पहले महिलाओं ने रंगोली बनाई। इसके लिए महिलाएं सुबह 5 बजे ही राजवाड़ा पर पहुंच गई थी। नव वर्ष के स्वागत के लिए हर साल की तरह राजवाड़ा पर जनप्रतिनिधियों ने सूर्य को तांबे के लोटे से जल अर्पित किया और अर्घ्य दिया। हिंदू कैलेंडर के अनुसार चैत्र मास की शुक्ल पक्ष की प्रथम तिथि को मनाया जाने वाला गुड़ी पड़वा हिंदू नववर्ष का प्रमुख पर्व है। यह त्योहार महाराष्ट्र में विशेष उत्साह से मनाया जाता है। कर्नाटक, गोवा और आंध्र प्रदेश में इसे 'उगादी' के नाम से जाना जाता है।

मराठी परिवारों ने सजाई गुड़ी

इंदौर की रहवासी प्रियंका विस्पुते ने अपने घर के सामने विधिवत गुड़ी सजाई है। वे पारंपरिक वेशभूषा में परिवार के साथ त्योहार मना रही हैं। उनके अनुसार यह उनके प्रमुख त्योहारों में से एक है। इस अवसर पर पूरन पोली और श्रीखंड का नैवेद्य चढ़ाया जाता है। नीम के पत्ते और गुड़ का प्रसाद वितरित किया जाता है।

गुड़ी की स्थापना

गुड़ी पड़वा की पूजा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है गुड़ी की स्थापना। पड़वा पर भोर में सूर्य देव को अर्घ्य देने के साथ ही इसकी शुरुआत होती है। फिर घरों के मुख्य दरवाजे या छत पर एक गुड़ी स्थापित की जाता है। गुड़ी को तैयार करने के लिए एक लकड़ी (बांस) की छड़ी पर रंगीन कपड़े, साड़ी बांधते है। उसके ऊपर उल्टा चांदी या तांबे का लोटा (बर्तन) रखते हैं। इसे बताशा या गुड़ की माला, नीम के पत्ते, और फूलों से सजाते हैं। 50 से अधिक गुड़ी पड़वा मना चुकीं ज्योती विस्पुते ने बताया कि शाम को सूर्यास्त से पहले गुड़ी को उतार लेते हैं। इस दौरान गुड़ी को कभी भी जमीन पर नहीं रखते हैं। शहर के चाणक्यपुरी में गुड़ी पड़वा पर सामूहिक रूप से भगवान सूर्य को अर्घ्य दिया।

गुड़ी पड़वा पर विशेष पूजा हुई

गुड़ी को स्थापित करने के बाद, परिवार के सदस्य पूजा के लिए इकट्ठा होते हैं। इस पूजा में गंगाजल से स्नान किया जाता है, फिर भगवान गणेश, भगवान राम और देवी लक्ष्मी की पूजा की जाती है। विशेष रूप से, घर में समृद्धि और सुख-शांति की कामना की जाती है। नीम के पत्ते और गुड़ का प्रसाद बांटा जाता है।

सम्राट विक्रमादित्य के जीवन पर आधारित नाटक का मंचन

विक्रमोत्सव में बताया सूर्य उपासना का महत्व, सीएम के निर्देश पर नववर्ष में हुआ आयोजन

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में विक्रमोत्सव का आयोजन किया गया। आयोजन में मंत्री तुलसी सिलावट, महापौर पुष्यमित्र भार्गव ने गांधी हाल में हिंदू नववर्ष गुड़ी पड़वा के अवसर पर भगवान सूर्य को अर्घ्य देकर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस आयोजन में सम्राट विक्रमादित्य के जीवन पर आधारित नाटक का मंचन किया। इसमें उनकी वीरता, न्यायप्रियता और सांस्कृतिक उत्थान में उनके योगदान को दर्शाया गया। नाटक ने दर्शकों को ऐतिहासिक गौरव से ओत-प्रोत कर दिया। रंगरूपिया थिएटर के प्रसुन्न सोनी और उनकी टीम ने सम्राट विक्रमादित्य के जीवन और गौरव गाथा पर आधारित नाटक का मंचन किया। नाटक में सम्राट विक्रमादित्य की वीरता, न्यायप्रियता और सांस्कृतिक उत्थान में उनके योगदान को दर्शाया गया। इस मौके पर मंत्री तुलसी सिलावट ने सभी को नववर्ष प्रतिपदा की शुभकामना दी और कहा कि मुख्यमंत्री के प्रगति, विकास, संस्कृति, आस्था को लेकर संकल्प को दृष्टिगत रखते हुए आज पूरे प्रदेश में गुड़ी पड़वा पर्व बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है। महापौर ने कहा सीएम डॉ.मोहन यादव के निर्देशानुसार प्रदेश के सभी नगरीय निकायों में विक्रमोत्सव के तहत कोटि सूर्योपासना का आयोजन किया गया।

इस मौके पर भारतीय संस्कृति में सूर्योपासना के महत्व को रेखांकित करते हुए बताया कि सम्राट विक्रमादित्य ने जो विक्रम संवत की शुरुआत की थी वह देश नहीं दुनिया में भी आज भी माना जाता है, जिसके आधार पर भारत की भौगोलिक स्थिति के अनुरूप संचालित पंचांग एवं संस्कृति को समझने का काम किया है।आयोजन में जनप्रतिनिधियों के साथ ही कलेक्टर और नगर निगम आयुक्त भी शामिल हुए। इस प्रोग्राम में विधायक महेंद्र हार्डिया, गोलू शुक्ला, कलेक्टर आशीष सिंह, नगर निगम आयुक्त शिवम वर्मा, महापौर परिषद के सदस्य नंदकिशोर पहाड़िया, निरंजन सिंह चौहान, अपर आयुक्त अभय राजनगांवकर सहित स्कूली छात्र-छात्राएं और शिक्षक उपस्थित थे।

इंदौर में पहली बार राणी सती दादी मां की लीलाकथा

अग्रसेन क्लब ने किया आयोजन, कोलकाता से आए कलाकारों ने किया मंचन

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में श्री अग्रसेन क्लब द्वारा राणी सती दादी मां की लीला का पहला आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम उज्जवल गर्ग के मुखारविंद से प्रारंभ हुआ। दादीधाम, खनूजा गार्डन, खातीवाला टैंक में आयोजित इस कार्यक्रम में दादी को भव्य फूल बंगला अर्पित किया गया। साथ ही मनमोहन 56 भोग का आयोजन भी किया गया। कोलकाता से आए कलाकारों ने दादी के जीवन पर आधारित विभिन्न प्रसंगों का जीवंत मंचन किया। कार्यक्रम में 51 मंगल चौकिया और सुहाग पिटारी का वितरण किया गया। दादीजी का 51 चुनरी मनोरथ संपन्न हुआ। दिव्य दादी अमृत से सिद्ध 1101 इत्र और एक मुखी श्रीफल का वितरण भी किया गया। क्लब की समन्वयक राधा देवी मित्तल, मीना नारायण गोयल और गजेंद्र रिंकू अग्रवाल ने कार्यक्रम की जानकारी दी। इस अवसर पर विधायक गोलू शुक्ला, आशा कैलाश विजयवर्गीय, राजेश गोयल सहित क्लब के कई पदाधिकारी मौजूद रहे। इनमें अध्यक्ष सुरभि राजेश अग्रवाल, सचिव उमेश सपना मंगल, कोषाध्यक्ष राकेश प्रीति गोयल और संरक्षक कमल किशोर गर्ग प्रमुख थे। कार्यक्रम के समापन पर प्रसाद वितरण किया गया।

गणगौर पर्व में दिखी लोक संस्कृति की झलक

जम्बू ब्राह्मण समाज की महिलाओं ने बैंड-बाजे के साथ निकाला बाना

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में इन दिनों निमाड़ मालवा क्षेत्र में गणगौर महोत्सव धूमधाम से मनाया जा रहा है। शनिवार को गांधी हॉल स्थित अभिनव कला समाज परिसर में जम्बू ब्राह्मण समाज की महिलाओं ने फूलपाती और गणगौर गीतों का आयोजन किया। शाम 4 बजे महिलाएं परिसर में एकत्र हुईं। उन्होंने बैंड-बाजों के साथ बाना निकाला। इस दौरान दूल्हा-दुल्हन आकर्षण का केंद्र रहे। महिलाओं ने झालरिया गीतों से धणियर राजा और रणुबाई की आराधना की। कार्यक्रम में कवाड़े यानी कहावतें भी कही गईं। गणगौर पर्व को निमाड़ मालवा में 16 दिन तक उत्सव के रूप में मनाया जाता है। यह पर्व विशेष रूप से विवाहित महिलाओं के लिए होता है। महिलाएं सोलह श्रृंगार से सज-धजकर कार्यक्रम में शामिल हुईं। जम्बू ब्राह्मण महिला संगठन पूरे वर्ष इस तरह के सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करता है। इस अवसर पर भजन-कीर्तन और गणगौर लोकगीत गाए गए। कार्यक्रम के अंत में तमोल का वितरण किया गया। पूरे आयोजन के दौरान लोकगीत और जयकारे गूंजते रहे।

करोड़ों की जमीन विवाद पर हत्या,3 पकड़ाए

इंदौर (एजेंसी)। कनाड़िया में किसान परिवार की 8 बीघा जमीन को लेकर हत्या की घटना सामने आई है। यह जमीन चार भाइयों और दो बहनों के हिस्से में थी। इसे चार लोगों को खेती के लिए दिया गया था, लेकिन बाद में उन्होंने इस पर अपना मालिकाना हक जताया। इस विवाद को लेकर बाबूलाल और अन्य परिजनों ने कलेक्टर से शिकायत भी की थी। दो दिन पहले किसान का शव खेत में पड़ा मिला। पुलिस ने जांच की तो मामला हत्या का निकला। इस संबंध में पांच आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है। जांच में यह सामने आया कि समझौता न करने पर बाबूलाल की हत्या कर दी गई। कनाडिया थाना क्षेत्र के सालीगाम में स्थित खेत की मेड़ पर 27 मार्च को बडियाकीमा निवासी बाबूलाल उर्फ गब्बर परमार का शव मिला। पुलिस ने शव को एमवाय अस्पताल भेजा और बाद में मृतक की पहचान होने पर पोस्टमॉर्टम कराया।

नवरात्र में फलाहार की मांग बढ़ी : अच्छी फसल का असर

नवरात्र में साबूदाना, मोरधन और मूंगफली सस्ते

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में चैत्र नवरात्रि की शुरुआत के साथ फलाहार सामग्री की मांग में जबरदस्त इजाफा हुआ है। सियागंज और मल्हारगंज के होलसेल बाजारों में साबूदाना, मोरधन और मूंगफली दाने की खरीदारी तेज हो गई है। इस साल अच्छी फसल के चलते फलाहार सामग्री के दाम पिछले वर्ष की तुलना में 15 से 25 प्रतिशत तक कम हो गए हैं। साबूदाना, जो पिछले साल 85 रुपए प्रति किलो था, अब 70 रुपए प्रति किलो मिल रहा है। मोरधन के दाम 100 रुपए से घटकर 90 रुपए प्रति किलो हो गए हैं, जबकि मूंगफली दाना 125 रुपए से घटकर 100 रुपए प्रति किलो पर आ गया है।

250 टन साबूदाना और 25 टन मोरधन की खपत का अनुमान

साबूदाना व्यापार से जुड़े सच्चा मोती के राजकुमार साबू के अनुसार, नवरात्रि के दौरान इंदौर और आसपास के क्षेत्रों में 250 टन साबूदाना और 25 टन मोरधन की खपत होने की संभावना है। वहीं, देशभर में 15 हजार टन साबूदाना और 1 हजार टन मोरधन की मांग रहने का अनुमान है। तमिलनाडु और केरल में कंद की अच्छी फसल से साबूदाने के दाम गिरे हैं, जबकि मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र (नासिक) में मोरधन की बंपर पैदावार के कारण इसके दाम में भी कमी आई है।

मंदिरों और भंडारों में खिचड़ी प्रसाद से बढ़ेगी मांग

नवरात्रि के दौरान देवी मंदिरों और भंडारों में खिचड़ी प्रसाद वितरण से मांग और बढ़ने की उम्मीद है। व्यापारियों के अनुसार, इस दौरान ड्रायफ्रूट की मांग भी बनी रहेगी। साबूदाना ऊर्जा का अच्छा स्त्रोत माना जाता है, जिससे उपवास रखने वाले लोगों में इसकी खपत अधिक होती है।

सराफा बाजार में युवती से छेड़छाड़

बैड टच का विरोध करने पर मारपीट की ; बचाव में आई बहन और दोस्त को भी पीटा

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के सराफा बाजार में शनिवार देर रात छेड़छाड़ की घटना हो गई। विरोध करने पर युवती और उसके साथियों के साथ आरोपियों ने मारपीट कर दी। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची। युवती ने मामले में अज्ञात युवक के खिलाफ छेड़छाड़ और मारपीट का मामला दर्ज कराया है। सराफा पुलिस ने साधुवासवानी नगर निवासी युवती की शिकायत पर एक मनचले और उसके साथी के खिलाफ छेड़छाड़ और मारपीट की धाराओं में केस दर्ज किया है। पुलिस के अनुसार, युवती अपनी बहन और दोस्त के साथ छोटा सराफा स्थित एक ढाबे पर खाना खाने गई थी। वहां दुकान से थाली लेते समय आरोपी ने युवती को बैड टच किया। युवती के इग्नोर करने पर युवक ने अश्लील कमेंट्स किए। जब युवती ने विरोध किया, तो उसने दोबारा कंधे पर गलत इरादे से टच किया। युवती के मना करने पर आरोपी ने अपशब्द कहने शुरू कर दिए। जब युवती का दोस्त बीच-बचाव करने आया, तो आरोपी ने उसका हाथ पकड़कर धक्का दे दिया। इसी दौरान युवती की बहन भी बीच में आई, तो आरोपी का साथी भी आ गया। दोनों ने मिलकर युवती और उसकी बहन के बाल पकड़कर उन्हें पीटना शुरू कर दिया। झगड़े के दौरान एक आरोपी ने युवती के मुंह पर लात मार दी, जिससे उसे गंभीर चोट आई और खून बहने लगा। घटना की जानकारी रात में ही पुलिस को दी गई। पुलिस ने युवती का मेडिकल परीक्षण करवाया और आरोपियों की तलाश शुरू कर दी है।

लूट के प्रयास में दो आरोपी गिरफ्तार

इंदौर (एजेंसी)। भंवरकुआ पुलिस ने लूट के प्रयास के मामले में कार्रवाई करते हुए दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। यह मामला एक निजी मोबाइल कंपनी के कलेक्शन एजेंट की शिकायत पर दर्ज किया गया। डीसीपी ऋषिकेश मीना की टीम ने शिकायतकर्ता विजय कुमार चौपड़ा (निवासी नानक पैलेस) की रिपोर्ट पर आरोपियों रोहित और रमेश (निवासी गोमटगिरी, गांधीनगर) के खिलाफ एफआईआर दर्ज की है। विजय कुमार के अनुसार, वह शुक्रवार देर शाम एयरटेल पेमेंट बैंक के कलेक्शन की रकम लेकर अपनी स्कूटर से आईटी पार्क चौराहा की ओर जा रहे थे। जब वह अस्पताल के पास रिंग रोड पर पहुंचे, तभी बाइक सवार बदमाशों ने उनकी स्कूटर को टक्कर मार दी। गिरने के बाद आरोपियों ने स्कूटर छीनने की कोशिश की और विरोध करने पर मारपीट भी की।

हिंदू नव वर्ष पर सिंधी समाज का विशेष उत्सव

चेटी चंड पर बहिराणा साहिब की पूजा, झूलेलाल की भव्य शोभायात्रा निकली

इंदौर (एजेंसी)। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा पर सिंधी समाज अपना नव वर्ष चेटी चंड मना रहा है। यह दिन भगवान झूलेलाल का जन्मदिन भी है। इस अवसर पर समुदाय के लोग विशेष पूजा-अर्चना करते हैं। श्रद्धालु लकड़ी से बने 'बहिराणा साहिब' में ज्योति जलाते हैं।

वे इसे सिर पर रखकर नृत्य करते हैं। फिर पवित्र जल स्त्रोत पर जाकर विधिवत विसर्जन करते हैं। छतरीबाग स्थित झूलेलाल मंदिर की गुरुमां गीता देवी ठाकुर के अनुसार, इस दिन झूलेलाल की मूर्तियों को जल स्त्रोत के पास ले जाकर पूजा की जाती है। साथ ही जल देवता वरुण देव और साईं उदेरोलाल की भी पूजा होती है। मंदिर के सेवादार मंशाराम राजानी बताते हैं कि चेटी चंड नव वर्ष का प्रतीक है। यह चैत्र शुक्ल पक्ष की शुरुआत और नए चंद्रमा के आगमन से जुड़ा है। यह मराठी नव वर्ष गुड़ी पड़वा के साथ मनाया जाता है। इस त्योहार का ऐतिहासिक महत्व भी है। मान्यता है कि एक दुष्ट राजा द्वारा सिंधी धर्म को नष्ट करने के प्रयास के समय भगवान झूलेलाल ने जल देवता के रूप में प्रकट होकर समाज की रक्षा की थी। 30 मार्च को शाम 5 बजे मंदिर से भव्य शोभायात्रा निकली। इसमें भगवान झूलेलाल की प्रतिमा रथ पर विराजमान थी,यात्रा में भक्त पारंपरिक वेशभूषा में शामिल थे।

भावना हत्याकांड-आरोपियों के बैंक खातों की डिटेल निकाल रही पुलिस

करीब 50 बैंक पासबुक और खातों के डिटेल के बैंक को लिखे लेटर, कई खाते फ्रीज मिले

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में हुए भावना हत्याकांड के आरोपियों के बैंक खातों की डिटेल पुलिस निकाल रही है। पुलिस ने बैंकों को लेटर भी लिखे हैं। आरोपियों के पास से करीब 50 बैंक पास बुक मिली थी। पुलिस को ये जानकारी मिली कि इसमें से कई खाते उन्होंने टेलीग्राम के माध्यम से खरीदी थे। इनमें से कई खाते फ्रीज हो चुके है, उसमें जो पैसा है उसका इस्तेमाल आरोपी भी नहीं कर पाए। इन खातों में कितना पैसा है इसकी जानकारी निकाली जा रही है। पूछताछ में ये भी पता चला कि आरोपियों ने भागने के लिए अलग-अलग गाड़ियों का इस्तेमाल किया था। भागने के दौरान वह दो दिन नहाए भी नहीं थे, दो दिन बाद उन्होंने कपड़े बदले।

दोस्त ने आंख में मार दी थी गोली- इंदौर में 21 मार्च को ग्वालियर की रहने वाली भावना उर्फ तनु सिंह को आंख में गोली मार दी थी। इसके बाद आरोपी मुकुल यादव, आशु यादव और स्वास्तिका कार से उसे बांबे हॉस्पिटल ले गए थे। जहां वे उसे भर्ती कर वहां से भाग गए थे। इसके बाद वे पुलिस से बचने के लिए यहां से वहां भागते रहे। मगर पुलिस ने आरोपियों को गिरफ्तार कर पूरे मामले का खुलासा कर दिया था। पुलिस को आरोपियों के ऑनलाइन सट्टे में इन्वाल्व होने की जानकारी मिली थी। पुलिस ने आरोपियों के पास से 28 मोबाइल फोन, 4 लैपटॉप और 50 एडीएम कार्ड सहित अन्य चीजें जब्त की थी।

2 अप्रैल तक रिमांड पर आरोपी- एसीपी आदित्य पटले ने बताया कि भावना हत्याकांड के आरोपी 2 अप्रैल तक पुलिस रिमांड पर हैं। पूछताछ की जा रही है। आरोपियों के पास से करीब 50 बैंक पासबुक मिली थी। ये अधिकतर खाते दतिया के हैं। पूछताछ में ये जानकारी सामने आई है कि आरोपियों ने टेलीग्राम के माध्यम से कई खाते खरीदे थे।

साइबर फ्रॉड या ऑनलाइन सट्टे का पैसा क्लियर नहीं- एसीपी ने बताया कि टेलीग्राम के माध्यम से खाते खरीदे थे। इसके एवज में खाते देने वाले को कमीशन देने की बात भी सामने आई है। इसकी भी जांच की जा रही है। ये खाते साइबर फ्रॉड में इस्तेमाल हुए हैं या नहीं ये क्लियर नहीं है। इसमें साइबर फ्रॉड का पैसा आया या ऑनलाइन बेटिंग ऐप का पैसा इसकी जांच की जा रही है। जो पासबुक इनके पास मिली है उसमें जो नाम है वह इनके रिश्तेदार है या कोई ओर है उनका भी पता लगाया जा रहा है। एसीपी आदित्य पटले ने बताया कि आरोपियों की भागने के दौरान अलग-अलग गाड़ियां बदलने की बात सामने आई है। इसकी जांच की जा रही है क्योंकि भोपाल में विख्यात पाठक से पूछताछ में कुछ और बात सामने आई है और आरोपियों से पूछताछ में कुछ ओर बात सामने आ रही है। अब किसकी बात सच है इसका पता लगाया जा रहा है।एसीपी ने बताया कि घटना को लेकर रिक्रिएशन किया जाएगा। संभवत- रविवार या सोमवार को रिक्रिएशन किया जाएगा। आरोपी 2 अप्रैल तक पुलिस रिमांड पर है। फिलहाल पुलिस सभी एंगल पर जांच कर रही है।

संपादकीय

भूंकप से तबाही

हमारे पड़ोसी म्यांमार और उससे लगे थाईलैंड में शुक्रवार को आए भीषण भूंकप ने इस बात को फिर रेखांकित किया है कि प्रकृति के आगे हम सब बौने हैं। शुक्रवार सुबह 11:50 बजे 7.7 तीव्रता के भूकंप के बाद म्यांमार में भारी तबाही हुई। म्यांमार और थाईलैंड में यह 200 साल का सबसे बड़ा भूकंप था। एक जियोलॉजिस्ट के हवाले से बताया गया कि इस भूकंप का असर 334 एटॉमिक बम में ब्लास्ट के बराबर था। यह भारत में 2001 में गुजरात के भुज में आए विनाशकारी भूकंप के बराबर था। म्यांमार और थाईलैंड के इस भूंकप में अब तक 1644 लोगों की मौत हुई है और 3400 से ज्यादा घायल हुए हैं। सम्पत्ति की बेतहाशा हानि हुई है। म्यांमार में थाईलैंड से भी ज्यादा नुकसान हुआ है। इस भूंकप का केन्द्र 10 किमी जमीन के नीचे था। जो धरती की ऊपरी परत मानी जाती है। भू वैज्ञानिकों के अनुसार म्यांनमार में धरती की सतह के नीचे की चट्टानों में मौजूद एक बहुत बड़ी दरार है, जो देश के कई हिस्सों से होकर गुजरती है। यह दरार म्यांमार के सागाइंग शहर के पास से गुजरती है इसलिए इसका नाम सागाइंग फॉल्ट पड़ा। यह म्यांमार में उत्तर से दक्षिण की तरफ 1200 किमी तक फैली हुई है। इसे 'स्ट्राइक-स्लिप फॉल्ट' कहते हैं, जिसका मतलब है कि इसके दोनों तरफ की चट्टानें एक-दूसरे के बगल से हॉरिजॉन्टल दिशा में खिसकती हैं, ऊपर-नीचे नहीं। यह दरार अंडमान सागर से लेकर हिमालय की तलहटी तक जाती है और पृथ्वी की टेक्टॉनिक प्लेट्स के हिलने-डुलने से बनी है। भारतीय प्लेट उत्तर-पूर्व की ओर बढ़ रही है, जिससे सागाइंग फॉल्ट पर दबाव पड़ता है और चट्टानें बगल में सरकती हैं। म्यांमार में यही हुआ है। वैज्ञानिकों का कहना है कि ये दोनो देश उस इलाके में स्थित है, जिसे भूकंप रोधी नहीं माना जाता। इस बीच दोनों देशों में बचाव और राहत कार्य जारी है। भारत ने भी एक अच्छे पड़ोसी का धर्म निभाते हुए ऑपरेशन ब्रह्मा के तहत दोनो देशो को मानवीय सहायता और रेस्क्यू टीम भेजी है। म्यांनमार में तो यह भूंकप 'गरीबी और आटा गीला' का समान है। यह देश बीते तीन साल से गृहयुद्ध से जूझ रहा है, जब देश की चुनी हुई सरकार को हटाकर सैनिक जुंटा ने सत्ता पर कब्जा कर लिया था। देश में सैनिक सत्ता और विद्रोहियों के बीच लगातार युद्ध जारी है। बताया जाता है कि विद्रोहियो ने देश के बड़े हिस्से पर कब्जा कर लिया है। इस झगड़े में भारत की भूमिका मोटे तौर पर तटस्थ ही रही है। अभी यह तय नहीं है कि इस गृह युद्ध में कौन जीतेगा। फिर भी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने म्यांनमार के सैनिक जुंटा के प्रमुख से बात कर दुख जताया और सहायता की पेशकश की। उधर थाई लैंड में जनहानि भले कम हुआ हो, लेकिन माल का भारी नुकसान हुआ है। वहां की युवा प्रधानमंत्री के सामने इस भूकंप के बाद राहत करना एक बड़ी चुनौती है। उधर संयुक्त राष्ट्र ने रिलीफ प्रोग्राम शुरू करने के लिए म्यांमार को 5 मिलियन डॉलर दिए। यूरोपीय यूनियन ने भी इमरजेंसी सहायता के दौर पर 2.7 मिलियन डॉलर की मदद म्यांमार भेजी है। दुनिया के कुछ और देशों ने भी सहायता का हाथ आगे बढ़ाया है। लेकिन दोनो देशों को इस झटके से उबरने में समय लगेगा। वैसे भी मनुष्य ने, उसकी प्रौद्योगिकी ने चाहे कितनी भी प्रगति कर ली हो, लेकिन प्रकृति के रहस्यों और उसकी लीला को वह बहुत कम समझ पाया है। भूंकपों का थोड़ा बहुत पूर्वानुमान लगाया जा सकता है, लेकिन धरती कब डोलने लगे, यह कोई नहीं जानता।

न्यायपालिका उपदेश न दे, निर्णय करे

नजरिया

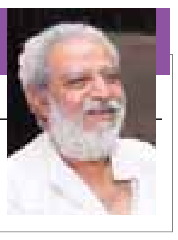

रघु ठाकुर

लेखक समाजवादी चिंतक हैं।

उच्चतम न्यायालय को अपनी अनावश्यक टिप्पणियों व उपदेश से बचना चाहिए। बजाय दिखाने की आभासीय टिप्पणियों के बाध्यकारी निर्णय करना चाहिए और अपने निर्णयों और विचारों से लोकतंत्र के भविष्य व उस पर होने वाले प्रभाव के दृष्टिकोण से व दीर्घकालिक परंपरा निर्माण की दृष्टि से गहराई से विचार करना चाहिए।

भारत के उपराष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़ ने अपने भोपाल प्रवास में कहा-हमारा संविधान देश के सुप्रीम कोर्ट को संविधान की व्याख्या करने की अनुमति देता है, पर व्याख्या के बहाने अधिकारों का हनन नहीं हो सकता। कोर्ट की सार्वजनिक उपस्थिति मुख्य रूप से निर्णयों के माध्यम से होना चाहिए। निर्णय अपने आप में बोलते हैं, इनका वजन होता है। निर्णयों के अलावा कोई अन्य प्रकार की अभिव्यक्ति संस्था की गरिमा को कमजोर करती है।

उन्होंने यह भी प्रश्न उठाया कि लोकतंत्र में क्या कोई कानूनी तर्क हो सकता है कि मुख्य न्यायाधीश को सीबीआई निदेशक के चयन में भागीदारी करना चाहिए? समझ सकता हूं कि यह विधायी प्रावधान इसलिए अस्तित्व में आया कि सरकार ने न्यायिक निर्णय को स्वीकार किया। अब समय आ गया है कि इसे फिर से देखें कि मुख्य न्यायाधीश को किसी भी नियुक्ति में कैसे शामिल कर सकते हैं।

मैं पिछले अनेक वर्षों से इस पर लिखता रहा हूं कि न्यायाधीश का कार्य निर्णय देना है, उपदेश देना नहीं। आजकल न्यायाधीश निर्णय देने के बजाय उपदेशक बन रहे हैं। ये उपदेश प्रतिदिन मीडिया में मोटे अक्षरों में छपते हैं, परंतु जिनका कोई संबंध वास्तविकता से नहीं होता। ऐसे उपदेश आमजन को गुमराह करने वाले व व्यवस्था को बचाने वाले होते हैं क्योंकि इनमें मानने की बाध्यता नहीं होती?

हाल में जस्टिस पारदीवाला और आर महादेवन की पीठ ने एक अपील में एडवोकेट जनरल से कहा कि मंत्री व अफसरों को समझा दें कि अनावश्यक केस धन की बरबादी है। एक हाईकोर्ट के जज साहब ने कहा कि श् ये कैसा कलयुग आ गया है। और उनका दुख समाप्त हो गया।

क्या कोई एडवोकेट जनरल सरकार के मंत्रियों को समझा सकता है? बेहतर होता कि ऐसे समय और धन बरबाद करने वाली अपीलों को जुर्माने सहित खारिज करते, तब वह निर्णय ज्यादा प्रभावकारी होता। यह तो एक उदाहरण है। वरना अब यह अदालतों का दैनिक कार्य बन गया है। छद्म-क्रांतिकारिता, जिसकी भूख राजनीति में है वही न्यायिक व्यवस्था में भी पैदा हो गई है।

मैं जानता हूं कि कुछ लोग यह कहेंगे कि उपराष्ट्रपति जी चूंकि भाजपा सरकार द्वारा मनोनीत हैं अतरू वे सरकार के सरकार के बचाव में तर्क दे रहे हैं। परंतु मैं पृष्ठभूमि देखने के बजाय उनकी बात को तर्क की कसौटी पर देखना-कसना बेहतर समझता हूं।

उपराष्ट्रपति जी की बहुत सी बातों से असहमत होते हुए भी मैं उनके उपरोक्त कथनों से सहमत हूं। अगर सीबीआई के निर्देशक या अन्य पदों की चयन प्रक्रिया में मुख्य न्यायाधीश या उनके प्रतिनिधि बैठते हैं तो वह एक प्रकार का न्यायिक निर्णय जैसा नहीं हो जायेगा? अगर उस निर्णय को तार्किक वैधानिक आधार पर कोई चुनौती देना चाहे तो जिस निर्णय में मुख्य न्यायाधीश शामिल हैं क्या शीर्ष या अन्य अदालत उसे विचार के लिए स्वीकार करेगी?

मान लीजिए कभी कोई शीर्ष अदालत इसके प्रतिकूल निर्णय लेती है तो क्या वह सर्वोच्च न्यायालय और मुख्य न्यायाधीश की प्रतिष्ठा को प्रभावित करने वाला नहीं होगा? दूसरे, यह दृष्टिकोण कि लोकतांत्रिक ढंग से चुनी हुई सरकार सदैव पक्षपाती या गलत निर्णय करेगी, यह भी उचित नहीं है। एक प्रकार से यह निर्वाचित सरकारों के प्रति स्थायी अविश्वास और आरोप जैसा है। क्या न्यायधीशों की नियुक्ति और उसकी प्रक्रिया व कोलेजियम सिस्टम पर उंगलियां नहीं उठायीं। क्या सुप्रीम कोर्ट के रोस्टर लगाने पर ऊंगलियाँ नहीं उठी। स्वतः सुप्रीम कोर्ट के अंदर से याने सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीशों ने भी अपने मुख्य न्यायाधीश के ऊपर सार्वजनिक आरोप लगाए हैं।

क्या सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीशों के चयन में सरकारों की भूमिका नहीं होती? यदि सरकारें न्यायाधीशों का चयन करने में एक महत्वपूर्ण हिस्सा होती हैं तो उनके द्वारा चयनित न्यायाधीश भी क्या अपने चयनकर्ताओं के प्रति उदार नहीं हो सकते? मेरी राय में शीर्ष न्यायालय को सिवाय न्यायाधीशों की चयन प्रक्रिया के अन्य किसी चयन प्रक्रिया का सहभागी नहीं बनना चाहिए। बल्कि चयन प्रक्रिया को कठोरता से संवैधानिक और वैधानिक नियमों की कसौटी पर कसकर निर्णय करना चाहिए। जो भी हो, उपराष्ट्रपति की इस टिप्पणी से देश में फिर एक बार बहस शुरू होगी, क्यों कि यह सत्ता के शीर्ष से आयी है।

आजकल कुछ एनजीओ चुनाव सुधार को लेकर काफी सक्रिय हैं। चुनाव आयोग भी पता नहीं किस आधार पर उन्हें अपने तंत्र का सहयोगी मानता है। इस एनजीओ की पृष्ठभूमि, आय के स्रोत और वैधानिकता क्या है, यह भी जिज्ञासा के प्रश्न हैं? कुछ दिनों से ये एनजीओ राजनीति के अपराधीकरण और चुनाव लड़ने वाले प्रत्याशियों की आपराधिक पृष्ठभूमि के बारे में चुनाव आयोग से दर्ज विचाराधीन मुकदमों के कागजात से लेकर, सूचनाएं अखबारों में जारी करते रहे हैं। इसी आधार पर चुनाव आयोग ने चुनाव सुधार के नाम पर एक नियम बनाया कि प्रत्याशियों को अपने ऊपर चल रहे मुकदमों की जानकारी नामांकन फार्म में देना चाहिए। साथ ही दो राज्यस्तरीय अखबारों व टीवी चौनलों पर प्रसारित करना चाहिए। जहां तक चुनाव आयोग को सूचना देने का प्रश्न है, मैं उससे सहमत हूं। परंतु, उसके प्रकाशन की जिम्मेदारी चुनाव आयोग को लेना चाहिए। विज्ञापन देना बहुत खर्चीला होता है। यह बोझ तो कोई ईमानदार या गरीब प्रत्याशी नहीं उठा सकता। दूसरा पक्ष यह भी है कि पुलिस थानों में दर्ज, व अदालतों में विचाराधीन मुकदमों के आधार पर किसी प्रत्याशी को अपराधी कैसे माना जा सकता है? अगर ऐसा होगा तो वह संविधान कानून व विधिक परम्परा के खिलाफ होगा। पिछले माह सुप्रीम कोर्ट ने जेल में बंद दिल्ली के एक विधानसभा प्रत्याशी के जमानत आवेदन पर सुनवाई करते हुए कहा कि ऐसे अपराधी व्यक्ति को चुनाव लड़ने का क्या अधिकार है? ऐसी टिप्पणियां और भी प्रकरणों में की गई हैं। केवल मुकदमे दर्ज होने या एफआईआर के आधार पर प्रत्याशी को चुनाव के अयोग्य करने के पक्ष में संकेत दिए गये हैं। क्या ऐसी टिप्पणियां उचित हैं? विचाराधीन व्यक्ति को अपराधी कैसे माना जा सकता है, जब तक कि वह अपराधी सिद्ध न हो जाये? कितने ही ऐसे मुकदमे झूठे और राजनीतिक प्रतिस्पर्धा के होते हैं। पुलिस किसी दबाव में या रिश्वत के आधार पर ऐसे मामले बना देती है। आश्चर्य है कि उच्चतम न्यायालय ने अपनी इस टिप्पणी के लोकतांत्रिक व व्यावहारिक पक्ष पर कोई विचार नहीं किया। एक अधिकारयुक्त तानाशाह जैसी टिप्पणी कर दी। ब्रिटिश काल में देश के तमाम राष्ट्रीय नेताओं पर मुकदमे दर्ज हुए थे। आजादी के बाद भी देश के मान्य नेताओं डॉ राममनोहर लोहिया, चौधरी चरणसिंह, मोरारजी देसाई, जार्ज फर्नांडीज, मधु लिमए, इंदिरा गांधी, विजयलक्ष्मी पंडित, और ऐसे कितने ही उदाहरण दे सकते हैं जिनके ऊपर राजनीतिक कारणों से मुकदमे दर्ज किए गए, जबकि वे अपराधी नहीं थे, अपराधी सिद्ध भी नहीं हुए। अगर आज के उच्चतम न्यायालय के जजों का नजरिया उस समय होता तो ये नेता कोई चुनाव भी नहीं लड़ सकते थे, न सत्ता के शीर्ष पर पहुंच सकते थे। इसके और भी खतरनाक पक्ष हैं। आज राजनीति में घात प्रतिघात का चलन बहुत बढ़ गया है। अगर निर्णय पूर्व केवल पुलिस में दर्ज या विचाराधीन मुकदमों के आधार पर व्यक्तियों को अपराधी मानकर चुनाव लड़ने से रोका जायेगा तो भारतीय लोकतंत्र एकदलीय, एक सत्ता और एक व्यक्ति की तानाशाही में बदल सकता है। राजनीतिक सत्ता के इशारे पर किसी भी प्रत्याशी के खिलाफकोई गलत प्रकरण दर्ज किए जा सकते हैं और वे चुनाव लड़ने से अयोग्य घोषित हो सकते हैं।

उच्चतम न्यायालय को अपनी अनावश्यक टिप्पणियों व उपदेश से बचना चाहिए। बजाय दिखाने की आभासीय टिप्पणियों के बाध्यकारी निर्णय करना चाहिए और अपने निर्णयों और विचारों से लोकतंत्र के भविष्य व उस पर होने वाले प्रभाव के दृष्टिकोण से व दीर्घकालिक परंपरा निर्माण की दृष्टि से गहराई से विचार करना चाहिए।

घिबली व एनीमे- जापानी 'कल्चरल सुपरपावर' से भारत को सीख

तकनीक क्षमता

शिवेश प्रताप

(लेखक आईआईएम कलकत्ता से शिक्षित व लोकनीति विश्लेषक हैं)

अचानक ही घिबली का सोशल मीडिया पर एक उफान दिख रहा है, यह ट्रेंड कर रहा है। इस घिबली ट्रेंडिंग की दीवानगी के बीच हमें भारत की आत्मनिर्भरता की पीड़ा पर भी विचार करना चाहिए। एक नागरिक दायित्व के रूप में यदि हम भारत में बने किसी सोशल मीडिया प्लेटफार्म या AI के लिए ऐसा प्रयास दिखाएँ तो भारत, भारतीयता एवं भारत के नागरिकों के साथ सोशल मीडिया पर हो रहे दोहरे व्यवहार के विरुद्ध हम एक संगठित शक्ति के रूप में खड़े दिख सकते हैं। लेकिन दुर्भाग्य से हम भारतीय ऐसा नहीं करते हैं।

एनीमे ने जापान को एक 'कल्चरल सुपरपावर' के रूप में स्थापित किया, इसकी दीवानगी पूरे विश्व में दिख रही है। स्टूडियो घिबली न केवल जापान की एनीमे इंडस्ट्री का एक प्रमुख स्तंभ है, बल्कि यह जापान की सांस्कृतिक सॉफ्ट पावर को वैश्विक स्तर पर मजबूत करने का एक प्रमुख माध्यम भी है। इसकी शुरुआत 1985 में हायाओ मियाज़ाकी और इसाओ ताकाहाता ने की थी। स्टूडियो ने अपनी गहरी भावनात्मक कहानियों, पर्यावरणीय संदेशों, सांस्कृतिक मूल्यों और असाधारण एनीमेशन के माध्यम से पूरी दुनिया में जापानी संस्कृति और विचारधारा का प्रसार किया।

विचारणीय है की 145 करोड़ की आबादी वाले भारत से ऐसे नए विचार, अभिनव नवाचार और व्यवहार बाहर क्यों नहीं आते हैं? क्या इतनी विपुल आबादी का देश दूसरे देशों की उत्पाद क्रांति का खाद-पानी मात्र ही बनकर रहेगा या अपने स्वत्व के बोध से ऐसे सोशल मीडियाई और डिजिटल नवाचारों का भी उदय भी करेगा, जहाँ भारतीय दोयम दर्जे के नागरिक बन अपने संस्कृति, परंपरा और समाज के लिए ट्रोल न किये जाएँ?

हमारा रचनात्मक जगत पश्चिमी विश्व के अंधे अनुकरण में किस कदर डूबा है इसकी बानगी अभी हाल ही में एक विवादित कोमेडी शो के दौरान एक अत्यंत अशोभनीय टिपण्णी के साथ उजागर हुई जहाँ यह संवाद भी पश्चिमी टीवी शो की नक़ल कर के बोला गया था। भारत में अभिनय, फिल्म उद्योग तो छोडिये रियलिटी शो में भी संवाद नक़ल से आ रहे हैं।

जापान ने एनीमे के माध्यम से सॉफ्ट पावर को एक रणनीतिक उपकरण के रूप में इस्तेमाल किया है। सॉफ्ट पावर का तात्पर्य है कि किसी देश की सांस्कृतिक, राजनीतिक, और वैचारिक ताकतें दूसरों को आकर्षित और प्रभावित कर सकें।

जापान के सांस्कृतिक ब्रांड 'एनीमे' का उपयोग

टोटोरो फॉरेस्ट और स्प्राइटेड अवे से प्रेरित लोकेशन्स जापान में पर्यटकों के आकर्षण का प्रमुख केंद्र हैं। एनीमे के माध्यम से लाखों लोगों ने जापानी भाषा और संस्कृति को सीखने में रुचि दिखाई है। जापानी सरकार ने एनीमे को कूल जापान इनिशिएटिव का हिस्सा बनाया है, जिसमें 2025 तक 1 ट्रिलियन येन का निवेश किया गया है।

स्टूडियो घिबली का योगदान

स्टूडियो घिबली ने जापानी सॉफ्ट पावर को तीन तरीकों से मजबूत किया है। फिल्मों में गहरे नैतिक और मानवीय संदेश होते हैं, जो वैश्विक दर्शकों से जुड़ते हैं। घिबली की फिल्मों ने 120 से अधिक देशों में प्रदर्शित होकर जापानी संस्कृति को लोकप्रिय बनाया। Totoro जैसे कैरेक्टर्स जापान के सांस्कृतिक आइकन बन गए हैं।

स्टूडियो घिबली और एनीमे ने जापान को केवल आर्थिक लाभ ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और कूटनीतिक मजबूती भी प्रदान की है। एनीमे अब एक वैश्विक भाषा बन चुकी है, जो जापान की परंपराओं और मूल्यों को दुनिया भर में पहुंचा रही है। घिबली का योगदान, जापान की सॉफ्ट पावर को नई ऊंचाइयों तक ले जाने में मील का पत्थर साबित हुआ है।

श्री युगो साको से बहुत कुछ सीख सकता था भारत

1980 के दशक के अंत में, रामायण से प्रभावित होकर जापानी निर्देशक युगो साको ने प्रसिद्ध भारतीय एनिमेटर राम मोहन के साथ मिलकर इस महाकाव्य की एक एनीमे-शैली में निर्देशित करने का निर्णय लिया। इस इंडो-जापानी संयुक्त निर्माण का नाम 'रामायणः द लीजेंड ऑफ प्रिंस राम' था। लगभग .13 मिलियन के बजट के साथ निर्मित यह फिल्म पाँच वर्षों में पूरी हुई और 1992 में रिलीज़ हुई। इस फिल्म में भगवान राम की कहानी को अद्भुत दृश्यों, विस्तृत पात्र-डिज़ाइन, और संगीतकार वानराज भाटिया द्वारा तैयार किए गए एक प्रभावशाली बैकग्राउंड स्कोर के साथ प्रस्तुत किया गया। इसे हिंदी, अंग्रेजी और जापानी सहित 20 से अधिक भाषाओं में डब किया गया और यह केवल भारत और जापान में ही नहीं, बल्कि पूरे दक्षिण-पूर्व एशिया, यूरोप और उत्तरी अमेरिका में भी दर्शकों तक पहुँची।

इस एनिमेटेड रामायण को विशेष बनाने वाली बात इसकी सांस्कृतिक विवरणों पर बारीकी से ध्यान देना था। युगो साको ने प्रामाणिकता सुनिश्चित करने के लिए 10 से अधिक भारतीय विद्वानों से परामर्श लिया और एनिमेशन शैली में जापानी एनीमे और भारतीय कला के तत्वों को शामिल किया। यह फिल्म 1993 में कान्स फिल्म फेस्टिवल में प्रदर्शित हुई और अपनी सांस्कृतिक सीमाओं को पार करने वाली कहानी के रूप में आलोचकों द्वारा सराही गई।

यह फिल्म निर्माण में वैश्विक सहयोग का एक प्रमुख उदाहरण बन गई और इसे धर्म (कर्तव्य), साहस और समर्पण जैसे रामायण के मूल्यों को वैश्विक दर्शकों तक पहुँचाने के लिए प्रशंसा प्राप्त किया। इस फिल्म की स्थायी विरासत यह दर्शाती है कि कैसे पारंपरिक भारतीय महाकाव्य, आधुनिक कहानी कहने के माध्यमों के साथ, सांस्कृतिक और भाषाई बाधाओं को पार कर सकते हैं और भारत की आध्यात्मिक धरोहर को वैश्विक मंच पर प्रदर्शित कर सकते हैं।कितने दुर्भाग्य की बात है की भारत ने यदि युगो साको के इस कार्य से सीखा होता तो आज इस उद्योग में भारत की भी एक बड़ी हिस्सेदारी होती लेकिन पश्चिम के अन्धानुकरण ने हमें अपने अभिनवता को उजागर ही नहीं होने दिया।

भारत के लिए सीख

भारत अपनी समृद्ध और विविध सांस्कृतिक विरासत के माध्यम से वैश्विक स्तर पर अपनी सांस्कृतिक सॉफ्ट पावर को सुदृढ़ कर सकता है। जैसे जापान ने एनीमे और स्टूडियो घिबली के माध्यम से अपनी संस्कृति को विश्वभर में लोकप्रिय बनाया है, भारत भी रामायण और महाभारत जैसे अपने प्राचीन महाकाव्यों को उच्च-गुणवत्ता वाले एनिमेटेड श्रृंखला, फिल्मों और डिजिटल कहानी कहने के माध्यम से प्रस्तुत कर सकता है। मल्टीमीडिया संस्करण, गेमिफाइड लर्निंग टूल्स और वर्चुअल अनुभवों के साथ एक इंटरएक्टिव डिजिटल इकोसिस्टम में विस्तारित किया जा सकता है। इसके अलावा, बॉलीवुड और क्षेत्रीय सिनेमा को मात्र नकलची डायलाग एवं विदेशी फैशन के अंधे अनुकरण से हटकर सिनेमा को रणनीतिक रूप से प्रचारित करना चाहिए, ताकि भारत के मूल्य, परंपराएं और आधुनिक आकांक्षाएं विश्व के दर्शकों के सामने प्रस्तुत की जा सकें।

भारत जापान की कूल जापान इनिशिएटिव से प्रेरणा लेकर 'कूल इंडिया' जैसे अभियान शुरू कर सकता है, जो भारतीय सांस्कृतिक विरासत, कला रूपों और नवाचारों को वैश्विक स्तर पर बढ़ावा देने पर केंद्रित हो। इस पहल के तहत भारत योग, आयुर्वेद, पारंपरिक शिल्प, शास्त्रीय संगीत और नृत्य जैसी अपनी ताकतों का उपयोग कर सकता है। भारतीय पौराणिक कथाओं, लोककथाओं और इतिहास पर आधारित उच्च-गुणवत्ता वाली डिजिटल सामग्री, जैसे एनिमेटेड श्रृंखला, डॉक्यूमेंट्री और वर्चुअल रियलिटी अनुभव, वैश्विक दर्शकों को आकर्षित कर सकते हैं। इसके साथ ही, अंतरराष्ट्रीय स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म्स, सांस्कृतिक महोत्सवों और संग्रहालयों के साथ साझेदारी करके भारत अपनी कहानियों और सांस्कृतिक खजाने को व्यापक दर्शकों तक पहुंचा सकता है।

इस प्रयास को और मजबूत बनाने के लिए भारत प्रमुख विदेशी शहरों में सांस्कृतिक केंद्र और उत्कृष्टता के हब स्थापित कर सकता है, जहां भारतीय कला, शिल्प, प्रदर्शन और कार्यशालाओं का आयोजन किया जाए। इन प्रयासों को युवा दर्शकों को ध्यान में रखते हुए डिज़ाइन किया जाना चाहिए, ताकि भारतीय संस्कृति को आकर्षक और प्रासंगिक बनाया जा सके। यह न केवल भारत की सांस्कृतिक कूटनीति को सुदृढ़ करेगा, बल्कि भारत की वैश्विक छवि को एक प्रगतिशील और गहरी जड़ों वाले राष्ट्र के रूप में प्रस्तुत करेगा। आधुनिक मीडिया तकनीकों को भारत की समृद्ध विरासत के साथ जोड़कर, भारत एक वैश्विक सॉफ्ट पावर नेता के रूप में अपनी पहचान बना सकता है, ठीक वैसे ही जैसे जापान ने अपनी एनीमे और डिज़ाइन इंडस्ट्री के माध्यम से किया है।

त्रासदी से कैसे उबरेगा थाईलैंड, म्यांमार

भूकंप

आरबी त्रिपाठी

लेखक स्तंभकार हैं।

पर्यटन उद्योग पर केन्द्रित थाईलैंड तथा अनिश्चितता के दौर से गुज़र रहे म्यांमार को हाल के भूकंप की त्रासदी ने झकझोर कर रख दिया है। भूकंप से जान माल की भारी क्षति पहुंचने की खबरों के बीच भारत से त्वरित रूप से मदद का हाथ खास तौर पर म्यांमार के लिए बढ़ाया गया है। हालांकि नुक़सान को लेकर अभी तक कोई स्पष्ट और अधिकृत जानकारी सामने नहीं आ पाई है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक म्यांमार में सैन्य शासन की वज़ह से बचाव-राहत कार्य प्रभावित हो रहे हैं।

उधर थाईलैंड एक पर्यटन उद्योग प्रधान देश है। यहाँ की अर्थ व्यवस्था का मुख्य श्रोत पर्यटन उद्योग है। इसे सुनामी की भीषण त्रासदी के बाद फिर से भूकंप से हुए नुक़सान से जूझना पड़ रहा है। प्रारंभिक सूचनाओं के मुताबिक थाईलैंड के दक्षिण में 6.4 तीव्रता वाला भूकंप तथा ऑफ्टर शॉक आया जिसमें लोगों के मारे जाने,मलबे में दब जाने या लापता होने के समाचार मिल रहे हैं। थाईलैंड की राजधानी बैंकाक में इमरजेंसी लगाने, बचाव कार्य में रोबोट जैसे उपकरण की मदद लेने, फ्लाइट्स रद्द करने तथा बड़ी संख्या में वहां फंसे पर्यटकों के सुरक्षित होने की बात की जा रही है, इनमें भारतीय पर्यटक भी शामिल हैं। पर्यटन केन्द्रित थाईलैंड की राजधानी बैंकाक समेत पटाया से लेकर अनेक पर्यटन केंद्र तथा नीलाभ समंदर के 'बीच' आदि पर्यटकों को लुभाते हैं। बरसों पहले से यहाँ 'वीजा ऑन अराइवल' की सुविधा के चलते एयरपोर्ट पर ही वीजा बन जाता है और इधर-उधर भटकने की जरूरत नहीं होती।

इस प्राकृतिक आपदा के समय मुझे अपनी तकरीबन 22 साल पहले की गई थाईलैंड यात्रा की अच्छी बुरी स्मृतियां और अनुभव की याद ताजा हो उठी है। उस वक्त बैंकाक और पटाया के अतिरिक्त अन्य स्थानों, अभयारण्य, जंगली जानवरों और समुद्री जीवों के खेलों-करतबों की स्मृति सजीव हो उठी है। हालांकि यह भी सच है कि सुनामी के समय थाईलैंड के प्रमुख बीच समंदर की गहराईयों में समा जाने की सूचनाएं भी सामने आई थी जिनका अस्तित्व ही उस भीषण त्रासदी में समाप्त हो गया।

टाइगर, सिंह, भालू , गेंडे जैसे खतरनाक जंगली जानवरों का वहाँ पर्यटक आसानी से दीदार कर सकते हैं। टाइगर को जंजीर से बांधकर घुमाते हुए देखा जा सकता है। टाइगर के शावकों को पर्यटकों की गोद में बैठा दिया जाता है जबकि चिंपाजी भी आपके साथ मस्ती के मूड में नजर आते हैं। वहाँ के प्रमुख अभयारण्य के भ्रमण के दौरान दर्जन भर से ज्यादा टाइगर, सिंह आदि पर्यटकों की गाड़ी को चारों ओर से ऐसे घेर लेते हैं कि बस लोहे की जाली को तोड़कर हमला करने ही वाले हों। व्हेल मछली को करतब दिखाये हुए देखा जा सकता है। सबसे अच्छी अनुभूति हमारे राष्ट्रीय पक्षी मोर को नृत्य करते देखकर होती है। वहाँ के प्रमुख पर्यटन केंद्र पटाया को लेकर तरह-तरह की चर्चायें सुनी और दृश्य देखने में आते हैं इसके बावजूद पर्यटक वहाँ भी रात के समय परिवार के साथ तथा ज्यादातर नई नई शादी वाले जोड़े दिखाई देते हैं। बैंकाक सहित अन्य पर्यटन केन्द्रों पर बने बौद्ध मंदिरों के साथ विशाल स्लीपिंग बुद्ध मंदिर, भगवान शिव के अर्ध नारीश्वर स्वरूप को दर्शाने वाले मंदिर पर्यटकों के आकर्षण के केन्द्र हैं। कुछेक मंदिरों में रामायण काल की झलक मिलती है लेकिन बौद्ध धर्म का बोलबाला अधिक है।

बैंकाक एक साफ सुथरा शहर है जहां मुख्य मार्गों पर गंदगी कचरा, पन्नियां आदि पड़े नहीं दिखाई देते। लेकिन शहर के बाहरी इलाकों में स्लम एरिया जैसी बस्तियां नजर आती है। वहाँ के लोग क्या क्या नहीं खाते मत पूछियेगा। राहत की बात है कि भारतीय भोजन भी सुलभ है। हां, पीने का पानी बहुत महंगा मिलता है। स्नैचिंग की वारदातें आम है। इनसे बचकर रहना होता है।

एक और बात कहना चाहूंगा कि थाईलैंड के लोग बड़े जीवट हैं। महिलाएं पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करती हुई दिखती है। इसका आभास आपको बैंकाक के व्यस्त एयरपोर्ट से लेकर अन्य जगहों पर भी होता है। सो, थाईलैंड हाल के भूकंप की विनाशकारी त्रासदी से भी जल्द उबर जायेगा यह उम्मीद की जा सकती है। इस प्राकृतिक आपदा का असर वहां के पर्यटन उद्योग पर कितना पड़ेगा यह तो आने वाला वक्त ही बतायेगा। जबकि म्यांमार के लिए अभी कुछ कहना जल्दबाजी होगी।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी.जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा. लि., राउखेड़ी, देवास रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईं कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक - उमेश त्रिवेदी
संपादक (म.प्र.) -विनोद तिवारी
कार्यकारी प्रधान संपादक - अजय बोकिल
स्थानीय संपादक - हेमंत पाल
प्रबंध संपादक - अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

विक्रम और वेताल की मीडिया यात्रा

व्यंग्य

डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा उरतृप्त

लेखक व्यंग्यकार हैं।

राजा विक्रमादित्य ने जैसे ही वेताल को कंधे पर लादा, वह कुटिल हंसी हँसते हुए बोला, राजन! चलो तुम्हें आज की दुनिया का एक नया किस्सा सुनाऊँ। यह कथा एक प्रसिद्ध न्यूज़ चैनल के न्यूज़ एंकर की भर्ती प्रक्रिया पर आधारित है। सुनने के बाद, अगर तुमने उत्तर न दिया, तो मैं तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े कर दूँगा।

विक्रम ने गंभीर स्वर में कहा, बोलो वेताल, मैं उत्तर दूँगा।

वेताल ने कहना शुरू किया-

राजधानी के सबसे प्रसिद्ध न्यूज़ चैनल 'राष्ट्र की पुकार' ने घोषणा की कि उन्हें नए न्यूज़ एंकर की आवश्यकता है। चयन प्रक्रिया अत्यंत गोपनीय और सख्त थी, जिसे केवल बुद्धिमान, सतर्क और कुशल पत्रकार ही पार कर सकते थे। लेकिन असली योग्यता कुछ और थी।

भर्ती के लिए तीन उम्मीदवार आए-राघव, सुरेश, और मोहन। तीनों ही योग्य थे, लेकिन क्या वे योग्यतम थे? निर्णय के लिए उन्हें चैनल के प्रधान संपादक भक्तिभूषण आचार्यजी के समक्ष प्रस्तुत किया गया।

आचार्यजी ने तीनों को बुलाया और पहला प्रश्न किया, सत्य क्या है? राघव, जो पुराने ज़माने के पत्रकारिता मूल्यों में विश्वास रखता था, बोला, सत्य वही है, जो निष्पक्ष हो और जनता के भले के लिए हो। आचार्यजी का चेहरा सख्त हो गया। यह तो बेवकूफी है! निष्पक्ष पत्रकारिता नाम की कोई चीज़ नहीं होती। जाओ, तुम असफल रहे।

अब सुरेश की बारी थी। उसने सोचा और चतुराई से जवाब दिया, सत्य वह है, जिसे हम बार-बार दोहराकर सत्य बना दें।

आचार्यजी मुस्कुराए। अच्छा है, लेकिन पर्याप्त नहीं। हमें इससे भी अधिक प्रतिबद्धता चाहिए। अब मोहन की बारी थी। उसने गर्व से उत्तर दिया, सत्य वह है, जिसे सत्ता सत्य माने।

आचार्यजी खुशी से उछल पड़े। तुम सही पत्रकार बनने की राह पर हो! आचार्यजी ने अगला परीक्षण शुरू किया। उन्होंने तीनों को एक नकली बहस में भाग लेने को कहा। विषय था-देश में महंगाई नहीं बढ़ी, यह सिर्फ़ अफ़वाह है। राघव ने आँकड़ों और रिपोर्ट्स का हवाला देते हुए बताया कि महंगाई वाकई बढ़ रही है।

आचार्यजी गुस्से में बोले, तुम्हारी आवाज़ इतनी धीमी क्यों है? एंकर को सबसे ज़्यादा बोलना चाहिए, अतिथियों को नहीं! जाओ, तुम असफल रहे।

अब सुरेश ने अपनी बारी ली। उसने ज़ोर से बोलना शुरू किया, बीच-बीच में अतिथियों को टोकने लगा, लेकिन आचार्यजी अब भी संतुष्ट नहीं थे। फिर मोहन आया। उसने ऐसे ज़ोर से चीखना शुरू किया कि स्क्रीन के शीशे तक चटकने लगे। हर सवाल के जवाब में वह सिर्फ़ यही बोलता, देशद्रोही मत बनो! देश के खिलाफ मत बोलो!

आचार्यजी ताली बजाते हुए बोले, वाह! तुम तो न्यूज़ एंकर बनने के लिए ही जन्मे हो। अब सबसे कठिन परीक्षा थी। आचार्यजी ने तीनों से कहा, मान लो, तुम्हारेपास एक वीडियो है जिसमें सरकार के एक मंत्री घोटाले में लिप्त पाए गए हैं। तुम क्या करोगे?

राघव ने कहा, मैं जनता को सच बताऊँगा। आचार्यजी ने सिर पीट लिया। अरे मूर्ख, तुम मीडिया में किसलिए आए हो? सत्य बोलने के लिए तो संत बनना चाहिए था! बाहर जाओ। सुरेश ने कहा, मैं वीडियो को थोड़ा संपादित करके दिखाऊँगा ताकि मामला बहुत बड़ा न लगे।

आचार्यजी बोले, अच्छा प्रयास है, लेकिन अभी भी तुम्हें सीखने की जरूरत है।

मोहन ने गर्व से कहा, मैं वीडियो को पूरी तरह से गायब कर दूँगा और उल्टा विपक्ष को इस घोटाले का दोषी साबित कर दूँगा! आचार्यजी हर्षित होकर बोले, अरे! यही तो असली पत्रकारिता है! तुम पास हुए। अब तुम हमारे चैनल के न्यूज़ एंकर हो। वेताल हँसते हुए बोला, राजन! बताओ, इस कथा से हमें क्या शिक्षा मिलती है? विक्रम गंभीर स्वर में बोले, इससे हमें यह शिक्षा मिलती है कि आज की पत्रकारिता में सत्य और निष्पक्षता गौण हो गई है। अब सफलता उसी की होती है जो सत्ता का वफादार बने, सच को मनचाहा मोड़ दे, और जनता की आवाज़ को अपनी चीख से दबा दे। इतना सुनते ही वेताल फिर से उड़कर पेड़ पर जा लटका और बोला, राजन! तुमने फिर उत्तर दे दिया। अब मुझे फिर से पकड़ो! विक्रम मुस्कुराए और फिर वेताल को पकड़ने चल पड़े।

जैन-हिंदू फैसला-1
विनय झैलावत
(पूर्व असिस्टेंट सॉलिसिटर जनरल एवं वरिष्ठ अधिवक्ता)

हिंदू अधिनियम के प्रावधान जैनियों पर लागू होंगे

परिवार न्यायालय ने विभिन्न उच्च न्यायालयों के हवाले से कहा कि यह सही है कि विभिन्न प्रावधानों में जैन धर्म के अनुयायियों को भी हिंदू के रूप में परिभाषित किया गया है। लेकिन, जैन धर्म अपना एक विशिष्ट इतिहास है। मूलतः जैन धर्म एवं हिंदू धर्म के मूलभूत सिद्धांतों में कई भिन्नताएं हैं। जैन धर्म में उल्लेखित विवाह विधि हिंदू धर्म में उल्लेखित विवाह विधि से भिन्न है।

मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय की इंदौर खंडपीठ के न्यायमूर्ति सुश्रुत अरविंद धर्माधिकारी और न्यायमूर्ति संजीव एस कलगांवकर की खंडपीठ ने चर्चित एवं महत्वपूर्ण मामले में फैसला देते हुए परिवार न्यायालय के उस आदेश को निरस्त कर दिया, जिसमें पारिवारिक न्यायालय अधिनियम, 1984 की धारा 19(1) के तहत प्रथम अतिरिक्त प्रधान न्यायाधीश, पारिवारिक न्यायालय, इंदौर द्वारा पारित 8 फरवरी 2025 के आदेश को चुनौती दी गई। इसके तहत परिवार न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश ने हिंदू विवाह अधिनियम, 1955 की धारा 13 बी के तहत दायर आवेदन को यह निष्कर्ष निकालते हुए वापस कर दिया था कि हिंदू विवाह अधिनियम के प्रावधान उन पक्षकारों पर लागू नहीं होते हैं, जो जैन समुदाय के सदस्य हैं। इस परिवार न्यायालय के फैसले को आने के बाद से ही न्यायविदों एवं अभिभाषकों द्वारा इस फैसले पर आश्चर्य व्यक्त किया जा रहा था।

इस प्रकरण में उभयपक्षों का विवाह 17 जुलाई 2017 को हिंदू रीति-रिवाजों के अनुसार हुआ था। वैवाहिक कलह के कारण प्रतिवादी ने 18 अप्रैल 2018 को अपना वैवाहिक घर छोड़ दिया और अपने माता-पिता के साथ रहने लगी। दोनों पक्ष पिछले छह वर्षों से अलग रह रहे थे। उन्होंने अपने विवाह को भंग करने का निर्णय लिया। इसलिए, हिंदू विवाह अधिनियम की धारा 13 बी के तहत विवाह विच्छेद के लिए एक याचिका पारिवारिक न्यायालय इंदौर के समक्ष प्रस्तुत की गई। पारिवारिक न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश अल्पसंख्यक मामलों के मंत्रालय की दिनांक 27 जनवरी 2014 की एक अधिसूचना पर विचार किया। इसमें जैन समुदाय को अल्पसंख्यक समुदाय के रूप में अधिसूचित किया गया था। जैन समुदाय के सदस्यों की धार्मिक प्रथाओं की हिंदू धर्म से तुलना करते हुए परिवार न्यायालय ने यह निष्कर्ष निकाला कि जैन समुदाय के सदस्यों द्वारा अपनाई जाने वाली प्रथाएं विशेष रूप से विवाह के संबंध में, भिन्न हैं। इसलिए, जैन समुदाय के सदस्य हिंदू कानून से बंधे नहीं हैं। परिवार न्यायालय के न्यायाधीश ने जैन समुदाय के सदस्यों द्वारा अपनाए जाने वाले रीति-रिवाजों और अनुष्ठानों की विशिष्ट विशेषताओं का उल्लेख करते हुए निष्कर्ष निकाला कि हिंदू विवाह अधिनियम, 1955 के प्रावधान जैन समुदाय के सदस्यों पर लागू नहीं होते हैं। इसलिए, वे पारिवारिक न्यायालय अधिनियम की धारा 7 के तहत अपने रीति-रिवाजों और अनुष्ठानों के अनुसार विवाह विच्छेद के लिए आवेदन कर सकते हैं।

उच्च न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत अपील में उक्त आदेश का इन आधारों पर विरोध किया गया है कि हिंदू विवाह अधिनियम, 1955 की धारा 2 के अनुसार, अधिनियम के प्रावधान पक्षकारों पर लागू होते हैं। जैन समुदाय को अल्पसंख्यक समुदाय घोषित करने वाली अधिसूचना के मद्देनजर हिंदू विवाह अधिनियम, 1955 में कोई ऐसा संशोधन नहीं किया गया जिसके कारण जैन समुदाय को अधिनियम के दायरे से बाहर रखा जा सके। उक्त आदेश कानून और संविधान के विरुद्ध है। इन आधारों पर यह प्रार्थना की गई थी कि आरोपी आदेश को रद्द किया जाए और अपीलकर्ता को विवाह विच्छेद की राहत प्रदान की जाए। उच्च न्यायालय के समक्ष वर्तमान अपील में निर्धारण हेतु मुख्य बिन्दु यह थे कि, क्या अल्पसंख्यक मामलों के मंत्रालय द्वारा जारी दिनांक 27 जनवरी 2014 की अधिसूचना के मद्देनजर जैन समुदाय को अल्पसंख्यक समुदाय के रूप में अधिसूचित किया गया है। यह भी प्रश्न था कि क्या अपीलकर्ता जैन समुदाय का सदस्य होने के नाते हिंदू विवाह अधिनियम, 1955 के आवेदन से बाहर रखा जा सकता है! कुटुम्ब न्यायालय, इंदौर ने हिंदू विवाह अधिनियम, 1955 की धारा 13 बी के अंतर्गत दायर याचिका को कुटुम्ब न्यायालय अधिनियम, 1984 की धारा 7 के अंतर्गत प्रस्तुत करने के लिए वापस करने में कोई अवैधानिकता या अनौचित्य किया है?

परिवार न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश ने विभिन्न उच्च न्यायालयों के निर्णयों पर भरोसा करते हुए कहा था कि, यह सही है कि विभिन्न प्रावधानों में जैन धर्म के अनुयायियों को भी हिंदू के रूप में परिभाषित किया गया है। लेकिन जैन धर्म अपना एक विशिष्ट इतिहास है। मूलतः जैन धर्म एवं हिंदू धर्म के मूलभूत सिद्धांतों में कई भिन्नताएँ हैं। हिंदू धर्म की मान्यताओं के अनुसार ब्रह्माण्ड की रचना ब्रह्मा द्वारा की गई थी। जबकि, जैन धर्म के अनुसार यह मान्यता नहीं है कि ब्रह्माण्ड की रचना ब्रह्मा द्वारा की गई थी। जैन धर्म के अनुसार ब्रह्माण्ड की रचना कभी नहीं हुई थी, क्योंकि ब्रह्माण्ड शाश्वत है। हिंदू धर्म के अनुसार आत्मा और परमात्मा को अलग-अलग माना गया है। यह माना जाता है कि जीवन का अन्त होने पर आत्मा का पुनः परमात्मा में विलय हो जाता है। जबकि जैन धर्म के अनुसार प्रत्येक आत्मा स्वयं परमात्मा होती है। हिंदू धर्म में कई देवी-देवताओं की पूजा की जाती है, जबकि जैन धर्म में तीर्थंकरों की पूजा की जाती है। हिंदू धर्म में विभिन्न जातियों और वर्गों का समावेश है, जबकि

जैन धर्म में जाति और वर्ग के आधार पर कोई विभाजन नहीं है। हिंदू धर्म में वेद, उपनिषद और स्मृति जैसे ग्रंथों को पवित्र माना जाता है, किंतु जैन धर्म द्वारा वेद एवं हिंदू धर्म के अन्य ग्रंथों को स्वीकार नहीं किया जाता है और जैन धर्म के पास 'आगम' और 'सूत्र' जैसे अपने पृथक पवित्र ग्रंथ हैं।

इसके अतिरिक्त जहां तक दोनों धर्मों में विवाह की अवधारणा का प्रश्न है, तो जैन धर्म में विवाह का मुख्य उद्देश्य स्वयं के धर्म से संबंधित मानव जाति की निरंतरता बनाए रखना है। जैन धर्म की इस अवधारणा में कोई धार्मिक उद्देश्य शामिल नहीं माना जाता है। हिंदू धर्म में विवाह की अवधारणा के अनुसार विवाह को एक पवित्र धार्मिक संस्कार माना गया है। इस संबंध में सर्वोच्च न्यायालय के न्याय दृष्टांत डॉली रानी विरूद्ध मनीष कुमार चंचल को भी उद्धृत किया गया। जहां तक जैन धर्म के अनुयायियों को दिये गये अल्पसंख्यक समुदाय के स्तर का प्रश्न है, तो इस संबंध में भी जैन धर्म के अनुयायियों द्वारा स्वयं को अल्पसंख्यक घोषित किये जाने की मांग एक शताब्दी से भी अधिक पुरानी रही है। जैन धर्म के अनुयायियों द्वारा मार्च-अप्रैल 1947 में ही संविधान सभा के सामने जैन धर्म के अनुयायियों को अल्पसंख्यक धार्मिक समुदाय के रूप में मान्यता की मांग की गई थी। उक्त प्रकृति की मांग लगातार निरंतर रहने के आधार पर ही वर्ष 2014 में केंद्र सरकार द्वारा जैन धर्म को अल्पसंख्यक धार्मिक समुदाय के रूप में मान्यता प्रदान की गई है। जैन धर्म के अनुयायियों को बहुसंख्यक हिंदू धर्म के अनुयायियों से एक पृथक मान्यता प्रदान की गई है।

ऐसी स्थिति में परिवार न्यायालय ने यह माना कि जैन धर्म के अनुयायियों को भी अपनी धार्मिक एवं सामाजिक मान्यताओं तथा परंपराओं का स्वतंत्र रूप से पालन करने का संवैधानिक अधिकार प्राप्त है। ऐसी स्थिति में हजारों वर्ष पुराने जैन धर्म के अनुयायियों को विपरीत विचारधारा वाले हिंदू धर्म की विधियों का पालन करने के लिये विवश किया जाना निश्चित रूप से जैन धर्म के अनुयायियों को प्राप्त धार्मिक स्वतंत्रता के संवैधानिक अधिकार से वंचित करने के समतुल्य है। उच्च न्यायालय के समक्ष इस आशय का भी तर्क किया गया है कि जैन धर्म के अनुयायी द्वारा भी विवाह के समय हिंदू विवाह अधिनियम की धारा 7 में उल्लेखित सप्तपदी संस्कार का पालन किया जाता है। इस कारण ऐसी अनुयायी को हिंदू विवाह अधिनियम की धारा 13 के अंतर्गत भी अनुतोष पाने का अधिकार है।

इस संबंध में दसवीं शताब्दी में आचार्य श्री वर्धमान सूरीश्वरजी महाराज द्वारा रचित ग्रंथ ''आचार्य दिनकर ग्रंथ'' का उल्लेख किया जाना आवश्यक है। इसके चौदहवें खंड में जैन मान्यताओं के अनुसार विवाह के लिये किये जाने वाले संपूर्ण अनुष्ठानों का उल्लेख किया गया है। इसके अनुसार जैन विवाह विधि में स्थापना विधि, आत्मरक्षा, मंत्रस्नान, क्षेत्रपाल पूजा, मनधोड़ बंधन, अरहत पूजन, सिद्ध पूजन, गांधार पूजन, शास्त्र पूजन, चौबीस यक्ष याक्षिणी पजून, दस दिगपालन पूजन, सोलह विद्यादेवी पूजन, बार राषि पूजन, नवग्रह पूजन, सत्यविष नक्षत्र पूजन, चोरण प्रतिष्ठा, विधि प्रतिष्ठा, हस्तमिलाप, प्रदक्षिणा (चार बार), वरमाला, अभिसिंचन, सात प्रतिज्ञा, आरती एवं क्षमायाचना किये जाने का उल्लेख किया गया है। इससे स्पष्ट है कि जैन धर्म में उल्लेखित विवाह विधि हिंदू धर्म में उल्लेखित विवाह विधि से भिन्न है। यह भी कहा गया कि जैन धर्म एक ऐसा धर्म है, जो हिंदू धर्म की बुनियादी वैदिक परंपराओं और मान्यताओं का विरोध करता है और वैदिक परंपरा पर आधारित नहीं है। जबकि हिंदू धर्म पूर्ण रूप से वैदिक परंपरा पर आधारित है।

उच्च न्यायालय ने अपने महत्वपूर्ण फैसले में कहा कि उपरोक्त संपूर्ण विश्लेषण में यह तथ्य निश्चित रूप से प्रमाणित है कि जैन धर्म निर्विवाद रूप से हिंदू धर्म का हिस्सा नहीं है। जैन धर्म के अनुयायियों की लगभग 100 वर्ष पुरानी मांग स्वीकार करते हुए केंद्र सरकार द्वारा भारत के राजपत्र में दिनांक 27 जनवरी 2014 को प्रकाशित अधिसूचना में यह तथ्य भी प्रमाणित है कि केंद्र सरकार द्वारा जैन समुदाय अर्थात जैन धर्म के अनुयायियों को अल्पसंख्यक समुदाय के रूप में अधिसूचित किया जा चुका है। अतः ऐसी स्थिति में हिंदू धर्म की मूलभूत वैदिक परंपराओं को सिरे से नकारने वाले और पूर्व उल्लेखित वर्ष 2014 की राजपत्र अधिसूचना के पश्चात स्वयं को बहुसंख्यक हिंदू समुदाय से पृथक अल्पसंख्यक समुदाय के रूप में स्थापित कर चुके जैन धर्म के किसी अनुयायी को उनके धर्म से विपरीत मान्यताओं वाले धर्म से संबंधित व्यक्तिगत विधि का लाभ दिया जाना उचित प्रतीत नहीं होता है।

अतः स्पष्ट है कि उक्त न्याय सिद्धांत के आलोक में हिंदू धर्म के मूलभूत सिद्धांतों का विरोध करने वाले और बहुसंख्यक हिंदू समुदाय से स्वयं को स्वेच्छा से अलग कर अल्पसंख्यक समुदाय के रूप में स्थापित कर चुके जैन धर्म के किसी पक्षकार द्वारा अपने हजारों वर्ष पूर्व से सुस्थापित वैभवशाली एवं गौरव से परिपूर्ण जैन धर्म में व्यक्तिगत विधि से संबंधित विवादों के संबंध में प्रचलित एवं सुस्थापित धार्मिक एवं सामाजिक परंपराओं का अभिवचन करते हुए निष्चित रूप से ऐसे विवाद के संबंध में कुटुम्ब न्यायालय अधिनियम, 1984 की धारा 7 के अंतर्गत कुटुम्ब न्यायालय के समक्ष प्रकरण प्रस्तुत किया जा सकता है।

...और क्या कह रही है ज़िंदगी
ममता तिवारी
लेखक साहित्यकार हैं।

सुनो ! नन्ही गुड़िया की लंबी कहानी

नन्ही को आजकल स्कूल में
'गुड टच' बैड टच के बारे में सिखाया जा रहा है
माँ खुश है उसका जीवन संवारा जा रहा है
मुश्किल ये थी एक दिन में
जाने कितने लोग उसका बदन छूते थे
पिता, भाई, पड़ोसी, बस ड्रायवर, ट्यूटर
नन्ही अब सबका स्पर्श समझने लगी
ये सीख उसका आत्मविश्वास बढ़ाने लगी
वो खुश थी ऐसी बातें वो घर आकर
माँ बाप को बता सकती है
बुलाने पर कानून पुलिस उसकी मदद को आ सकती है

और वो भयानक दिन आ ही गया
जब ट्यूटर ने उसके बदन को हाथ लगाया
उसने सब बच्चों को जाने को कहा
नन्ही अकेली रह गई
पर माँ ने कहा था अकेले मत रहना
उसने नन्ही का हाथ जोरों से पकड़ा था
नन्ही जी जान से हाथ छुड़ाने लगी
दरिंदे की उंगलियाँ उसके शरीर पर रेंगने लगी
पूरी ताकत से हाथ छुड़ा वो घर की तरफ दौड़ने लगी
दूर जा, घर से पहले, फूट फूट कर रोने लगी
नन्ही अब इस बात का रोज़ शिकार होने लगी
जाने क्यों वो अपराध बोध से भरने लगी
उसे लगा जो बात उसके साथ हो रही है
उसे करने वाला ज़रा भी भयभीत शर्मिंदा नहीं
तो क्या सारा कुसूर मेरा हैं?
और इक दिन, उस दरिंदे ने, नन्हीं की

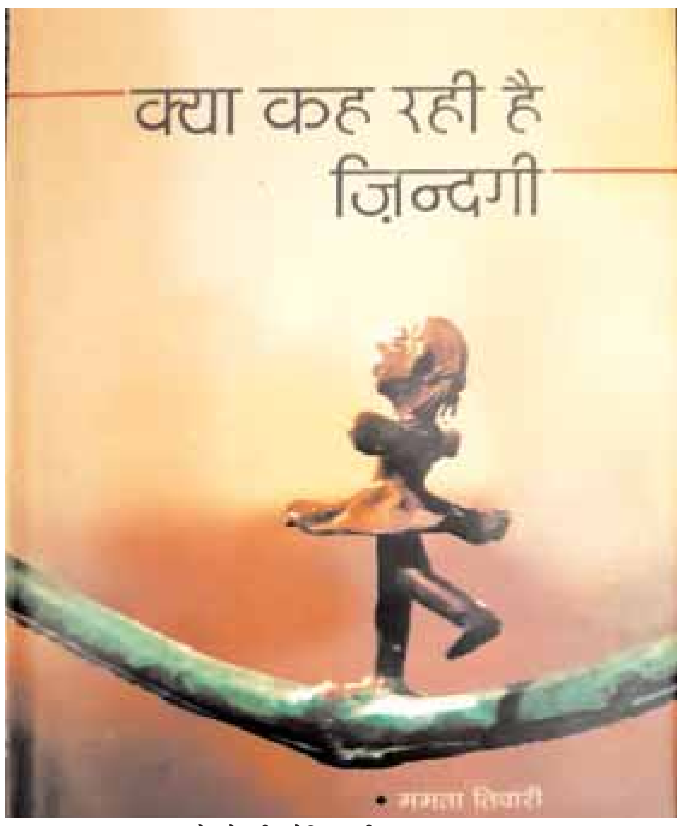

सलवार का नाड़ा खोलने की कोशिश की
नन्हीं का विवेक जागा
उसने पास पड़ा रूल उसके सिर पे दे मारा
नन्हें हाथों से सलवार पकड़े
नन्हीं दौड़ पड़ी माँ की गोद में छुपने

घर में घुसते ही पापा, माँ को
अखबार पढ़ सुना रहे थे
पेपर में लिखा था, शरीर पर हाथ फेरना
नाड़ा खोलना/अपराध की श्रेणी में नहीं आता
माँ ने रोती नन्हीं को गले से लगा पूछा
तो क्या अब हम पुलिस के पास हीं जा सकते?
दरिंदे को सजा नहीं दिला सकते?
मजबूर पिता ने गुस्से में अखबार पटका, कहा
हम अब नन्ही के कपड़े उतरने का इंतजार करेंगे?
क्या-क्या कहती है जिंदगी!

पुनश्चः- एक हफ्ते पहले 17 मार्च को उदास दिल से ये नज़्म लिखी गई थी तब विचित्र से आदेश से दिल कांप उठा था। दस दिन बाद जैसे दुआ कुबूल हो गई। 27 मार्च को बच्चों के निजी अंग पकड़ना दुष्कर्म की कोशिश नहीं है, हाइकोर्ट के इस फैसले पर सुप्रीम कोर्ट की रोक लगी। सुप्रीम कोर्ट ने कहा - यह हाईकोर्ट का असंवेदनशील निर्णय था।

सिर्फ आम नागरिकों के लिए है महंगे सस्ते का खेल

जुगलबंदी
समीर लाल 'समीर'
लेखक कनाडा निवासी प्रख्यात ब्लॉगर और वरिष्ठ व्यंग्यकार हैं।

एक समाचार पढ़ा। चीन के एक शहर के नामी रेस्टोरेंट में एक चिकन की डिश मिलती है। कहते हैं स्वाद में लाजबाब और अन्य चिकन की डिशों से एकदम हटकर। एक पूरे चिकन का 1/6 हिस्सा होता है आपकी प्लेट में और दाम भारतीय मूल्य में 5500 रुपये। एकदम इसी रेसिपी से बनी इतने ही नाप की नार्मल चिकन से बनी डिश 300 रुपये की। दाम का इतना भारी अंतर सिर्फ चिकन की प्रजाति बदल जाने के कारण है। बताते हैं कि इस चिकन का नाम सनफ्लावर चिकन है।

इस प्रजाति के चिकन को दक्षिणी चीन के गोऊँगडोंग प्रोविन्स में जहाँ पैदा करके बड़ा किया जाता है, वह शहर से दूर एकदम शांत इलाके में सनफ्लावर के खेतों में है। वहाँ कोई ध्वनि प्रदूषण नहीं होता और ये चिकन क्लासिकल संगीत सुनकर बड़े होते हैं। खाने के लिए इनको सनफ्लावर के फूल के बीच का हिस्सा दिया जाता है और पीने के लिए सनफ्लावर के तने का जूस। इसीलिए इनके पंजे, चोंच और त्वचा भी पीली होती है। इसी खासियत के चलते इनका दाम इतना मंहगा है।

विचार आया कि चलो मान लेते हैं कि ऑर्गेनिक चीजों का जमाना है। फल फूल खिलाकर ऑर्गेनिक रूप से पाला गया जानवर तो क्या, ऑर्गेनिक फल और सब्जियां तक मंहगे होते हैं मगर दाम का इतने भारी अंतर को जायाज ठहराने के लिए उनको क्लासिकल संगीत सुनाने का फैसला किसने लिया होगा और उससे उनके विकास में क्या फरक पड़ा होगा? साथ ही उनको ध्वनि प्रदूषण से दूर रखने की क्या उपयोगिता रही होगी- जबकि मुर्गियाँ तो जब तक जागती हैं कुड़ कुड़ करती ही रहती हैं। आप कभी किसी भी चिकन फार्म पर चले जाओ तो पाओगे कि वो तो खुद ही ध्वनि प्रदूषण फैला रही होती हैं। अगर रिकार्डिंग की जगह उनको कोई क्लासिकल संगीतज्ञ लाईव बैठ कर क्लासिकल संगीत सुनाए तो थोड़ी देर में उन मुर्गियों के हल्ले गुल्ले में क्लासिकल छोड़ कर रैप गाने लग जाएगा।

कभी कभी सोचता हूँ कि ये बेचारे तो 60-70 दिन की जिंदगी जीने के लिए ही आए हैं। फिर तो इनको कट कर किसी थाली की शोभा और किसी की जुबान का स्वाद ही बढ़ाना है। ऐसे में जो अगर इनको कुछ सुनाना ही था तो नित दिन भर गीता का ज्ञान सुनाते रहते और शाम को चाणक्य नीति का कैसेट बजा देते। कम से कम गीता का ज्ञान सुनकर सदगति को प्राप्त होते। शायद अगले जन्म में इंसानों के रूप में जन्मते। कुड़ कुड़ करने की आदत तो जाती नहीं और साथ में चाणक्य नीति का ज्ञान - एकदम बेहतरीन नेता बनते। कौन जाने मंत्री ही बन जाते और फिर सरकारी यात्रा पर चीन जाकर सनफ्लावर चिकन खा रहे होते। मंत्री जी को इससे क्या फरक पड़ता है कि कितना मंहगा है। सरकारी खर्च है तो मंहगा होने की किसे चिंता। मंहगा होना ही चाहिए। मंहगे सस्ते का खेल तो सिर्फ आम नागरिकों के लिए है।

पिछले दिनों ऐसे एक नेता जी से चर्चा हो रही थी जिन्होंने एक ही मंत्री काल मे अपनी आने वाली तीन पुश्तों को बिना कमाए रईसी में जिंदगी बिताने का इंतजाम कर लिया है और अगर अगली बार भी जीत कर मंत्री बन गए तब तो न जाने क्या कहर बरपा रहे होंगे। चर्चा के दौरान उन्होंने एक बड़े ज्ञान की बात कह डाली। उन्होंने ने बताया कि कोई भी वस्तु अपने दाम से मंहगी या सस्ती नहीं होती है वो आपकी औकात से मंहगी और सस्ती होती है। आपकी औकात है, आपके पास रुपया है तो दस लाख की गाड़ी भी सस्ती है वरना तो किसी के लिए तीन हजार की साईकिल भी मंहगी होती है।

शायद यही वजह होगी जो इन नेताओं को कहीं मंहगाई नजर ही नहीं आती।

कला-संस्कृति
रमेश सर्राफ धमोरा
सहायक प्राध्यापक, श्री शंकराचार्य प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी, भिलाई

राजस्थान का प्रमुख लोकोत्सव है गणगौर पर्व

गणगौर एक प्रमुख त्योहार है। यह मुख्य रूप से राजस्थान, हरियाणा, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के ब्रज क्षेत्र में मनाया जाता है। गणगौर दो शब्दों गण और गौर से बना है। इसमें गण का अर्थ भगवान शिव और गौर का अर्थ माता पार्वती से है। इस दिन अविवाहित कन्याएं और विवाहित स्त्रियां भगवान शिव, माता पार्वती की पूजा करती हैं। साथ ही उपवास रखती हैं। कई क्षेत्रों में भगवान शिव को ईसर जी और देवी पार्वती को गौरा माता के रूप में पूजा जाता है। गौरा जी को गवरजा जी के नाम से भी जाना जाता है। धर्मग्रंथों के अनुसार श्रद्धाभाव से इस व्रत का पालन करने से अविवाहित कन्याओं को इच्छित वर की प्राप्ति होती है और विवाहित स्त्रियों के पति को दीर्घायु और आरोग्य की प्राप्ति होती है।

राजस्थान की राजधानी जयपुर में गणगौर उत्सव दो दिन तक धूमधाम से मनाया जाता है। सरकारी कार्यालयों में आधे दिन का अवकाश रहता है। ईसर और गणगौर की प्रतिमाओं की शोभायात्रा राजमहल से निकलती है। इनको देखने बड़ी संख्या में देशी-विदेशी सैनानी उमड़ते हैं। ढूंढाड़ की भांति ही मेवाड़, हाड़ौती, शेखावाटी सहित इस मरुधर प्रदेश के विशाल नगरों में ही नहीं बल्कि गांव-गांव में गणगौर पर्व मनाया जाता है एवं ईसर-गणगौर के गीतों से हर घर गुंजायमान रहता है।

कहा जाता है कि चैत्र शुक्ला तृतीया को राजा हिमाचल की पुत्री गौरी का विवाह शंकर भगवान के साथ हुआ था। उसी की याद में यह त्यौहार मनाया जाता है। गणगौर व्रत गौरी तृतीया चैत्र शुक्ल तृतीया तिथि को किया जाता है। इस व्रत का राजस्थान में बड़ा महत्व है। कहते हैं इसी व्रत के दिन देवी पार्वती ने अपनी उंगली से रक्त निकालकर महिलाओं को सुहाग बांटा था। इसलिए महिलाएं इस दिन गणगौर की पूजा करती हैं। कामदेव मदन की पत्नी रति ने भगवान शंकर की तपस्या कर उन्हें प्रसन्न कर लिया तथा उन्हीं के तीसरे नेत्र से भष्म हुए अपने पति को पुनः जीवन देने की प्रार्थना की। रति की प्रार्थना से प्रसन्न हो भगवान शिव ने कामदेव को पुनः जीवित कर दिया तथा विष्णुलोक जाने का वरदान दिया। उसी की स्मृति में प्रतिवर्ष गणगौर का उत्सव मनाया जाता है। गणगौर पर्व पर विवाह के समस्त नेगचार व रस्में की जाती है।

होलिका दहन के दूसरे दिन गणगौर पूजने वाली लड़कियां होली दहन की राख लाकर उसके आठ पिण्ड बनाती हैं एवं आठ पिण्ड गोबर के बनाती हैं। उन्हें दूब पर रखकर प्रतिदिन पूजा करती हुई दीवार पर एक काजल व एक रोली की टिकी लगाती हैं। शीतलाष्टमी तक इन पिण्डों को पूजा जाता है। फिर मिट्टी से ईसर गणगौर की मूर्तियां बनाकर उन्हें पूजती हैं। लड़कियां प्रातः ब्रह्ममुहुर्त में गणगौर पूजते हुये गीत गाती हैंः-

गौर ये गणगोर माता खोल किवाड़ी, छोरी खड़ी है तन पूजण वाली।

गीत गाने के बाद लड़कियां गणगौर की कहानी सुनती है। दोपहर को गणगौर के भोग लगाया जाता है तथा कुए से लाकर पानी पिलाया जाता है। लड़कियां कुए से ताजा पानी लेकर गीत गाती हुई आती हैंः-

म्हारी गौर तिसाई ओ राज घाट्यारी मुकुट करो,
बीरमदासजी रो ईसर ओराज, घाटी री मुकुट करो,
म्हारी गौरल न थोड़ो पानी पावो जी राज घाटीरी मुकुट करो।

लड़कियां गीतों में गणगौर के प्यासी होने पर काफी चिन्तित लगती है एवं गणगौर को जल्दी से पानी पिलाना चाहती है। पानी पिलाने के बाद गणगौर को गेहूं चने से बनी घूघरी का प्रसाद लगाकर सबको बांटा जाता है और लड़कियां गीत गाती हैं-

म्हारा बाबाजी के माण्डी गणगौर, दादसरा जी के माण्ड्यो रंगरो झूमकड़ो,
ल्यायोजी - ल्यायो ननद बाई का बीर, ल्यायो हजारी ढोला झुमकड़ो।

रात को गणगौर की आरती की जाती है तथा लड़कियां नाचती हुई गाती हैं। गणगौर पूजन के मध्य आने वाले एक रविवार को लड़कियां उपवास करती हैं। प्रतिदिन शाम को क्रमवार हर लडकी के घर गणगौर ले जायी जाती है। जहां गणगौर का ''बिन्दौरा'' निकाला जाता है तथा घर के पुरुष लड़कियों को भेंट देते हैं। लड़कियां खुशी से झूमती हुई गाती हैंः-

ईसरजी तो पेंचो बांध गोराबाई पेच संवार ओ राज म्हे ईसर थारी सालीछां।

गणगौर विसर्जन के पहले दिन गणगौर का सिंजारा किया जाता है। लड़कियां मेहन्दी रचाती हैं। नये कपड़े पहनती हैं, घर में पकवान बनाये जाते हैं। सत्रहवें दिन लड़कियां नदी, तालाब, कुए, बावड़ी में ईसर गणगौर को विसर्जित कर विदाई देती हुई दुःखी हो गाती हैं-

गोरल ये तू आवड़ देख बावड़ देख तन बाई रोवा याद कर।

गणगौर की विदाई का बाद कई महिनो तक त्यौहार नहीं आते इसलिए कहा गया है-''तीज त्यौहारा बावड़ी ले डूबी गणगौर''। अर्थात् जो त्यौहार तीज (श्रावणमास) से प्रारम्भ होते हैं उन्हें गणगौर ले जाती है। ईसर-गणगौर को शिव पार्वती का रूप मानकर ही बालाऐं उनका पूजन करती हैं। गणगौर के बाद बसन्त ऋतु की विदाई व ग्रीष्म ॠतु की शुरुआत होती है। दूर प्रान्तों में रहने वाले युवक गणगौर के पर्व पर अपनी नव विवाहित प्रियतमा से मिलने अवश्य आते हैं। जिस गोरी का साजन इस त्यौहार पर भी घर नहीं आता वो सजनी नाराजगी से अपनी सास को उलाहना देती है। ''सासू भलरक जायो ये निकल गई गणगौर, मोल्यो मोड़ों आयो रे''।

आज आवश्यकता है इस लोकोत्सव को अच्छे वातावरण में मनाये। हमारी प्राचीन परम्परा को अक्षुण बनाये रखे। इसका दायित्व है उन सभी सांस्कृतिक परम्परा के प्रेमियों पर है जिनका इससे लगाव है। जो ऐसे पर्वो को सिर्फ पर्यटक व्यवसाय की दृष्टि से न देखकर भारत के सांस्कृतिक विकास की दृष्टि से देखने के हिमायती हैं। अब राजस्थान पर्यटन विभाग की वजह से हर साल मनाए जाने वाले इस गणगौर उत्सव में शामिल होने कई देशी-विदेशी पर्यटक भी पहुँचने लगे हैं।

प्रधानमंत्री मोदी की मन की बात, जिले के 18 मंडलों के 821 बूथ क्रेंद्रों पर सुनी गई

पीएम मोदी के मन की बात का कार्यक्रम जीवन मूल्यों में बदलाव लाने के लिए प्रेरकः सावित्री ठाकुर

धार। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मन की बात के कार्यक्रम का 120 वां एपिसोड का सीधा प्रसारण रविवार को जिले के सभी मंडल प्रभारी एवं जिला पदाधिकारियो 18 मंडलों के अध्यक्ष एवं सभी जनप्रतिनिधि भाजपा कार्यकर्ताओं ने प्रमुख रूप से अनेक बूथों पर देखा व सुना गया।

भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा ने बताया कि धार जिला मुख्यालय के कुशाभाऊ ठाकरे मंडल व बूथ नम्बर 107 पर केंद्रीय राज्यमंत्री एवं क्षेत्रीय सांसद सावित्री ठाकुर, धार विधायक नीना वर्मा, भाजपा जिला अध्यक्ष महंत निलेश भारती, ग्रामीण जिला अध्यक्ष चंचल पाटीदार, जिला पंचायत अध्यक्ष सरदार मेड़ा ने कार्यकर्ताओं के साथ प्रधानमंत्री मोदी के मन की बात के कार्यक्रम का श्रवण किया। हिंदू नववर्ष के अवसर पर अतिथियों ने सभी कार्यकर्ताओं को बधाई दी।

श्रीमती सावित्री ठाकुर ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मन की बात का

कार्यक्रम जीवन मूल्यों में बदलाव लाने के लिए प्रेरक है। मन की बात प्रेरणा देने वाला कार्यक्रम तो है ही साथ देश भर के अनेक नवाचार को आत्मसात करने का मौका भी देता है तथा एक सफलता की कहानी पेश कर आमजनो को अपने जीवन मे बेहतर करने की प्रेरणा व मार्गदर्शन भी देता है।

जिला अध्यक्ष महंत भारती ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आज के कार्यक्रम में हमारे देश के छोटे-छोटे नेनिहालो को गर्मी की छुट्टियां कैसे बिताना चाहिए जो बच्चो के लिए प्रेरक है तथा कृष्ण कमल के फूल का जिक्र भी किया साथ ही खेलो इंडिया के बारे में युवाओं को मार्गदर्शन दिया तथा जल संरक्षण के लिए अपने प्रेरणादायी उद्बोधन दिया।

उन्होंने युवाओं से अपील की है कि उन्हें मन की बात का प्रत्येक एपिसोड देखना चाहिए ताकि देश के प्रत्येक विषय की जानकारी मिले व हमारा ज्ञानवर्धन भी होगा।

इस अवसर पर भाजपा नगर मंडल अध्यक्ष जयराज देवड़ा, जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा, पूर्व नगर पालिका उपाध्यक्ष कालीचरण सोनवानिया, पूर्व मंडल अध्यक्ष नितेश अग्रवाल, रॉकी आहूजा, बूथ अध्यक्ष मुन्नालाल कौशल विक्रम बाला रौंदले सहित महिला मोर्चा कार्यकर्ता आदि उपस्थित रहे।

गुढ़ी पड़वा, नववर्ष के उपलक्ष्य में मेढ़ क्षत्रिय स्वर्णकार समाज धार ने घर- घर जाकर मिठाई, गुड़-धनिया बांटी

समाज में पहली बार की गई इस पहल की सभी ने की सराहना

धार। गुढ़ी पड़वा, नववर्ष के उपलक्ष्य में मेढ़ क्षत्रिय स्वर्णकार समाज धार के पदाधिकारियों ने समाज जनों के घर- घर जाकर मिठाई, गुड़ धनिया बांटकर समाज जनों का मुंह मीठा करा कर सभी को पावन पर्व की बधाई दी।

मेढ़ क्षत्रिय स्वर्णकार समाज धार के अध्यक्ष सतीश सोनी, उपाध्यक्ष प्रीतेश सोनी, सचिव पीयूष सोनी, राजेन्द्र सोनी, विनोद सोनी, चण्डीदास जी, पी. सी. सोनी, संजय सोनी, महेश सोनी, के. के. सोनी, रमेश सोनी आदि ने धार स्थित समाज के प्रत्येक घर जाकर सभी को इस पावन पर्व की बधाई दी और मिठाई, गुड़, धनिया भेंट किए। समाज अध्यक्ष सतीश सोनी ने बताया कि मेढ़ क्षत्रिय स्वर्णकार समाज धार में समाज जनों में परस्पर मिलन और सहयोग का भाव कायम रहे इसलिए समाज के प्रत्येक घर जाकर सभी से मिल कर मिठाई, गुड़, धनिया भेंट कर बधाई दी। समाज के इतिहास में पहली बार की गई इस पहल की सभी ने सराहना कर समाज हित में कार्य करने और परस्पर सहयोग कर समाज को आगे बढ़ाने का सभी ने संकल्प भी लिया।

जन परिषद की ग्यारहवीं मीट वियतनाम में हुई

भोपाल। पर्यावरण पर केंद्रित, अग्रणी संस्था जन परिषद की ग्यारहवीं अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस, वियतनाम की हो ची मिन्ह सिटी में जन परिषद के अध्यक्ष एवं पूर्व डीजीपी एन के त्रिपाठी, सुप्रसिद्ध शिक्षाविद श्रीमती नयनतारा पाठक, श्रीमती लक्ष्मी त्रिपाठी एवं मिस यूनिवर्स टाइटैनिक ब्यूटी सुश्री हर्षल बजाज की उपस्थिति में संपन्न हुई। कॉन्फ्रेंस को संबोधित करते हुए संस्था के अध्यक्ष त्रिपाठी ने जन परिषद की 36 वर्षों

की यात्रा की अनेक उपलब्धियों का जिक्र करते हुए कहा कि सबके सम्मिलित प्रयासों एवं जन परिषद के रचनात्मक प्रयासों से संस्था जन परिषद सामाजिक भावनाओं की पर्याय बन गई है। श्रीमती नयन तारा पाठक ने पर्यावरण संरक्षण के प्रति संवेदना जताते हुए कहा कि

एक एक व्यक्ति को इस अभियान से जुड़ना चाहिए। सुश्री हर्षल बजाज ने जन परिषद के रचनात्मक कार्यों की प्रशंसा की। इस अवसर पर सर्व श्री एन के त्रिपाठी, श्रीमती नयन तारा पाठक, सुश्री हर्षल बजाज, वरिष्ठ पत्रकार श्री गोविंद चौरसिया, अशोक निगम समेत करीब आठ डेलीगेट्स को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन रामजी श्रीवास्तव ने एवं आभार प्रदर्शन श्रीमती भट्ट ने किया।

विश्व संवाद केंद्र में डॉक्यूमेंट्री फ़िल्म 'चंबल: सत्य और मिथ्या' की स्क्रीनिंग

भोपाल। सतपुड़ा चलचित्र समिति के साप्ताहिक फ़िल्म आस्वादन एवं संवाद अनुष्ठान के अंतर्गत शनिवार को विश्व संवाद केंद्र, भोपाल में युवा निर्देशक आशुतोष भार्गव की डॉक्यूमेंट्री फ़िल्म 'चंबलः सत्य और मिथ्या' की स्क्रीनिंग हुई। इस फ़िल्म को हाल ही में ग्वालियर शॉर्ट फ़िल्म फेस्टिवल में स्पेशल जूरी अवॉर्ड मिला है। फ़िल्म में चंबल के वास्तविक इतिहास और प्रचलित धारणाओं के अंतर को बखूबी दर्शाया गया है।

इस अवसर पर वरिष्ठ फ़िल्म समीक्षक विनोद नागर ने फ़िल्म के निर्देशक आशुतोष भार्गव से फ़िल्म निर्माण के विविध पहलुओं पर दिलचस्प बातचीत की। कार्यक्रम में श्री लोकेन्द्र सिंह, श्री मुकेश अवस्थी, श्री सुरेंद्र ठाकरे, कुबेर सिंह, मनोहर मालवीय के साथ फ़िल्म विधा के छात्र और दर्शक उपस्थित रहे।

फ़िल्म आस्वादन एवं संवाद श्रृंखला की इस 111 वीं कड़ी में राजगढ़ जिले की सामाजिक कुरीति पर बनी सौरभ कुमार निर्देशित डॉक्यूमेंट्री फिल्म 'झगड़ा नातरा' भी प्रदर्शित की गई। यह फ़िल्म समाज में व्याप्त कुरीतियों और उनके प्रभाव को उजागर करती है।

टिकारी आयुर्वेद चिकित्सालय में हर सोमवार को शल्य चिकित्सक डॉ. रवि चौकीकर देंगे सेवाएं

बैतूल। शासकीय आयुर्वेद चिकित्सालय टिकारी बैतूल में अब एनोरेक्टल रोगों का विशेषज्ञ इलाज मिलेगा। आयुष विभाग बैतूल के अंतर्गत संचालित इस चिकित्सालय में हर सोमवार को डॉ. रवि चौकीकर अपनी सेवाएं देंगे। डॉ. चौकीकर ने एम.एस. (शल्य तंत्र) की डिग्री आयुर्वेद शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान (आईटीआरए) जामनगर, गुजरात से प्राप्त की है। डॉ. रवि चौकीकर बवासीर (पाइल्स), फिशर, फिस्टुला (भगंदर), पाइलोनाइडल साइनस जैसी समस्याओं का इलाज करेंगे। इसके अलावा मूत्रवह संस्थान के रोग जैसे प्रोस्टेट, पथरी, त्वचा के रोग, सभी प्रकार की गांठें और घावों का भी इलाज किया जाएगा। मरीजों को पारंपरिक क्षारसूत्र पद्धति से एनोरेक्टल रोगों का इलाज मिलेगा, जो बिना सर्जरी के कारगर उपचार प्रदान करता है। वर्तमान में डॉ. चौकीकर की पदस्थापना एकीकृत प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र सह आयुर्वेद औषधालय बोरगांव में है, लेकिन हर सोमवार को वे टिकारी आयुर्वेद चिकित्सालय में उपलब्ध रहेंगे। इससे बैतूल और आसपास के मरीजों को राहत मिलेगी और उन्हें बेहतर आयुर्वेदिक उपचार अपने जिले में ही मिल सकेगा।

धूमधाम से मनाई गई भगवान झूलेलाल जयंती, निकाली वाहन रैली

50 यूनिट से अधिक हुआ रक्तदान, समाज की प्रतिभाओं का किया सम्मान

बैतूल। पूज्य सिंधी पंचायत बैतूल के तत्वावधान में प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी भगवान झूलेलाल की जयंती का पर्व चेट्रीचंड्र पूरे बैतूल जिले में धूमधाम एवं हर्षोल्लास से मनाया गया। इस अवसर पर बैतूल शहर में पूज्य सिंधी पंचायत बैतूल के बैनर तले विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। पूज्य सिंधी पंचायत बैतूल के जिलाध्यक्ष नरेंद्र हिराणी ने बताया कि सर्वप्रथम सुबह 9 बजे झूलेलाल मंदिर मोहन कॉलोनी सिविल लाइन में महाआरती का आयोजन किया गया। उसके पश्चात 10 बजे समाज के युवाओं द्वारा विशाल वाहन रैली मोहन कॉलोनी से निकाली गई। रैली में सैकड़ों की संख्या में शामिल समाज के युवा, भक्तगण भगवान झूलेलाल की जय के नारों का उद्घोष करते हुए झंडे लेकर चल रहे थे। यह भव्य रैली कोठीबाजार, गंज, बडोरा आदि स्थानों से होते रामकृष्ण बगिया सिविल लाइन में संपन्न हुई।

ब्लड डोनेट कैंप में 50 यूनिट से अधिक हुआ रक्तदान– रामकृष्ण बगिया सिविल लाईन में प्रातः 10 बजे से 4 बजे तक रक्तदान का कार्यक्रम भी आयोजित किया गया, जिसमें सिंधी पंचायत बैतूल के सदस्यों द्वारा जिला अस्पताल के ब्लड बैंक की वैन में पहुंचकर बढ़चढ़कर रक्तदान किया गया। इस दौरान खबर लिखे जाने तक 50 यूनिट से ज्यादा का रक्तदान किया जा चुका था।

सिंधी समाज के 100 से ज्यादा लोग सम्मानित

रामकृष्ण बगिया में दोपहर 1 बजे से समाज का प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित किया गया। जिसमें समाज के 100 से ज्यादा विद्यार्थियों, युवाओं, बड़े-बुजुर्गों को स्मृति चिंह एवं प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस दौरान विशेष रूप से विद्यार्थियों में सर्वप्रथम हाल ही में एमबीबीएस कर डॉक्टर बनी समाज की प्रतिभाशाली बिटिया नंदिनी पिता

धीरज हिराणी को सम्मानित किया गया, तत्पश्चात् डाली बजाज पिता बृजलाल बजाज जिन्होंने कंपनी सेक्रेटरी की प्रतिष्ठित परीक्षा अव्वल दर्जे में उत्तीर्ण कर बॉम्बे में नौकरी प्राप्त की। इसी क्रम में प्रतिभाशाली हर्ष मोटवानी पिता स्व. हितेन्द्र मोटवानी का भी सम्मान किया गया, जिन्होंने चार्टर्ड एकाउंटेंट की प्रतिष्ठित परीक्षा उत्तीर्ण कर समाज का गौरव बढ़ाया और इसके अलावा इस अवसर पर विशेष रूप से प्रतिष्ठित मोबाइल व्यवसायी अशोक तलेड़ा का भी विशेष सम्मान किया गया, जिन्होने पिछले 51 वर्षो से बहराणा साहब का विसर्जन संपन्न करवाने की जिम्मेदारी बखूबी निभाते आ रहे हैं। इन चार विशेष सम्मानों सहित उन बच्चों को भी सम्मानित किया गया, जिन्होंने अपनी प्रतिभा के बल पर 75 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त कर उल्लेखनीय सफलता हासिल की। इस आयोजन के पश्चात् लंगर-प्रसादी का वितरण किया गया। जिसमें जनप्रतिनिधियों, विभिन्न समाज के गणमान्य नागरिकों सहित समाज के हजारों की संख्या में शामिल श्रद्धालुओं ने प्रसादी ग्रहण की।

बहराणा साहेब की निकाली भव्य शोभायात्रा

इसके बाद शाम 5 बजे से भगवान झूलेलाल मंदिर मोहन कालोनी से बहराणा साहेब की भव्य प्रतिमा की शोभायात्रा निकाली गई। यात्रा में समाज के वरिष्ठों के अलावा युवा, महिलाएं, बच्चे शामिल हुए। इस दौरान जगह-जगह पुष्प वर्षा एवं जलपान द्वारा शोभायात्रा का जोरदार स्वागत किया गया। शोभायात्रा शहर के विभिन्न मार्गो से होते हुए देर शाम विवेकानंद वार्ड भगूढाना स्थित माचना एनीकेट पर पहुंची। जहां देर शाम पवित्र ज्योत का विसर्जन किया

गया। इन कार्यक्रमों के मौके पर वरिष्ठ भाजपा नेता मुकेश खंडेलवाल, पूर्व विधायक निलय डागा, विदेश मंत्रालय भारत सरकार में राजभाषा सलाहकार प्रवीण गुगनानी सहित पूज्य सिंधी पंचायत के वरिष्ठ चंदूमल थारवानी, बलराम जसूजा, अन्नू जसूजा, विजय तलेड़ा, सुरेश हिराणी, धीरज हिराणी, दिलीप हिराणी, अनिल हिराणी, गोलू हिराणी, शरद तलेड़ा समेत अन्य सिंधी समाज के लोगों का झूलेलाल जयंती को सफल बनाने में सराहनीय योगदान रहा। कार्यक्रम के अंत में पूज्य सिंधी पंचायत बैतूल के सचिव गजानंद (बंटी) मोटवानी ने विभिन्न समाज संगठनों, पधारे जनप्रतिनिधियों, प्रबुद्धजनों, गणमान्य नागरिकों, सामाजिक बंधुओं से मिले सहयोग के लिए उन सभी का आभार व्यक्त किया है।

चार माह पहले अर्जुनगोंदी जंगल में मिली थी जली हुई खोपड़ी, पुलिस ने रहस्य को सुलझाया

7 आरोपियों की गिरफ्तारी

बैतूल। लगभग चार महीने पहले शाहपुर क्षेत्र के अर्जुनगोंदी जंगल में मिली जली हुई खोपड़ी के रहस्य को पुलिस ने सुलझा लिया है। इस मामले में पुलिस ने 7 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। रविवार को पुलिस कंट्रोल रूम में आयोजित पत्रकार वार्ता में घटना का खुलासा करते हुए बताया कि 10 दिसंबर 2024 को वन विभाग द्वारा थाना शाहपुर को सूचना दी गई कि अर्जुनगोंदी जंगल स्थित जठान देव मंदिर के पास एक नाले के ऊपर एक जली हुई मानव खोपड़ी पड़ी है। सूचना पर पुलिस टीम घटनास्थल पर पहुँची। एसडीओपी शाहपुर मयंक तिवारी, सीन ऑफ क्राइम टीम प्रभारी

निरीक्षक आबिद अंसारी एवं जिला वैज्ञानिक अधिकारी नर्मदापुरम ऋषिकेश यादव ने थाना प्रभारी मुकेश ठाकुर की उपस्थिति में घटनास्थल का सूक्ष्म निरीक्षण किया गया। जांच के दौरान पाया गया कि अज्ञात मृतक के शव को टायर और लकडियों की सहायता से पूरी तरह जलाया गया था। घटनास्थल से एक जली हुई खोपड़ी, कुछ हड्डियों के अवशेष एवं एक स्टील का कड़ा बरामद किया गया। साक्ष्यों को वैज्ञानिक विधि से संकलित कर उनका फोटोग्राफी एवं वीडियोग्राफी कराई गई तथा अज्ञात मृतक की पहचान हेतु मामला दर्ज कर जांच प्रारंभ की गई।

डीएनए टेस्ट से मृतक की हुई पहचान– थाना कोतवाली बैतूल में 21 दिसंबर 2024 को रिंकेश चौहान निवासी कुंड बकाजन थाना चिचोली की गुमशुदगी दर्ज की गई थी, जिसमें परिजनों द्वारा रिंकेश की पहचान के लिए हाथ में चुडा (स्टील का कडा) पहनना बताया गया। पुलिस ने मृतक के परिजनों का रक्त नमूना लेकर मृतक की शिनाख्त पूर्ण किये जाने के लिए रिंकेश के परिजनों का डीएनए नमूने लेकर एफएसएल जांच के लिए भेजा। जांच रिपोर्ट में अर्जुनगोंदी जंगल में मिली जली हुई खोपड़ी एवं मृतक रिंकेश चौहान के परिजनों का डीएनए मिलान होना पाया गया, जिससे शव की पुष्टि रिंकेश चौहान के रूप में हुई। मामले की जांच के लिए एक विशेष टीम गठित की गई।

लगभग 4 महीने चली मामले की जांच– लगभग 4 महीने की गहन जांच के बाद पुलिस को जानकारी मिली कि 30 नवंबर 2024 को रिंकेश चौहान न्यायालय पेशी के लिए बैतूल गया था। ग्राम बासपानी के आशीष परते को चेंट और अन्य साथी के साथ गौवंश के मामले में पुलिस को सूचना देने पर गांव से उठाकर चेंट के कमरे में बंद कर उल्टा लटकाकर रिंकेश, चेंट तथा अन्य साथियों ने मारा था। पेशी निपटाकर वह मुलताई मेला देखने गया, फिर झीटापाटी गाँव में अपने दोस्त गब्बर के घर रुका। यह बात नितिन के साले अपचारी बालक ने नितिन को बताई। नितिन रिश्ते में आशीष परते का भतीजा लगता है, फिर नितिन ने फोन से आशीष परते को बताया कि रिंकेश झीटापाटी गाँव में अपने दोस्त गब्बर के घर रुका है। इस सूचना के आधार पर मुख्य आरोपी आशीष परते एवं उसके साथियों ने रिंकेश को अगवा कर लिया।

विक्रमोत्सव 2025 -इतिहास के मंच पर जीवंत हुआ सम्राट विक्रमादित्य का युग

धार। धार के विक्रम ज्ञान मंदिर में गुड़ी पड़वा के पावन अवसर पर महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ एवं धार जिला प्रशासन के सहयोग से भव्य आयोजन हुआ। इस ऐतिहासिक आयोजन का मुख्य आकर्षण था त्रिकर्षि नाट्य संस्था, भोपाल द्वारा प्रस्तुत सम्राट विक्रमादित्य के युग पर आधारित भव्य नाट्य मंचन, जिसने उपस्थित जनसमूह को इतिहास की स्वर्णिम गाथा से जोड़ दिया।

संस्कृति की धरोहर बनी नाट्य प्रस्तुति... – नाट्य मंचन की शुरुआत में वर्तमान समय के युवाओं के नववर्ष मनाने के तरीके और हमारी प्राचीन संस्कृति के बीच का अंतर दिखाया गया। इसके बाद मंच पर इतिहास की परतें खुलीं और दर्शकों को यह बताया गया कि विक्रम संवत का प्रारंभ क्यों और कैसे हुआ।20 से अधिक कलाकारों ने अपनी सजीव प्रस्तुति से ऐसा समां बाँधा कि दर्शकों को लगा जैसे वे स्वयं विक्रमादित्य के दरबार में उपस्थित हैं। हर दृश्य के साथ तालियों की गूंज बढ़ती गई, और मंच पर इतिहास जीवंत होता गया।

गरिमामयी उपस्थिति और प्रेरक संदेश– कार्यक्रम में केंद्रीय राज्य मंत्री श्रीमती सवित्री ठाकुर, धार विधायक नीना वर्मा, कलेक्टर प्रियंक मिश्रा, नीलेश भारती, चंचल पाटीदार,नगर पालिका अध्यक्ष नेहा बोड़ाने, जिला पंचायत अध्यक्ष सरदार सिंह मेड़ा, सीईओ अभिषेक चौधरी,एसडीएम रोशनी पाटीदार, कार्यक्रम समन्वयक डॉ. दीपेंद्र शर्मा, राष्ट्रीय कवि संदीप शर्मा सहित कई गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे। मुख्य अतिथि केंद्रीय राज्य मंत्री

श्रीमती सवित्री ठाकुर ने कहा हमारी परंपरा और संस्कृति को आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाना हमारा कर्तव्य है। सम्राट विक्रमादित्य के जीवन से हमें कर्तव्यनिष्ठा और राष्ट्रप्रेम की सीख मिलती है। उन्होंने बताया कि पद सिर्फ प्रतिष्ठा नहीं, बल्कि एक बड़ी जिम्मेदारी होती है। विधायक नीना वर्मा ने कहा मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की यह एक अद्भुत पहल है। इस आयोजन से हर पीढ़ी यह समझ सकी कि हम क्यों भारतीय नववर्ष मनाते हैं और विक्रम संवत की शुरुआत कैसे हुई। इस तरह के सांस्कृतिक आयोजनों से हमारी जड़ों को मजबूती मिलती है।

संस्कृति के पुनर्जागरण की नई पहल– कलेक्टर प्रियंक मिश्रा ने कहा नाटक के माध्यम से निश्चित रूप से सभी को हमारा स्वर्णिम इतिहास जानने का अवसर मिला है। इससे विक्रम संवत के महत्व को व्यापक रूप से समझने का अवसर मिला।उन्होंने कहा कि अप्रैल-मई में मां देवी अहिल्याबाई होलकर की जयंती को भी पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाया जाएगा और इसमें सभी की भागीदारी अपेक्षित है।

कार्यक्रम के शुभारंभ में अतिथियों ने मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण किया। केंद्रीय मंत्री श्रीमती ठाकुर और विधायक नीना वर्मा ने एक बालिका को मंच पर बुलाकर मां सरस्वती का पूजन करवाया, जिससे बाल मन में भी संस्कृति के प्रति श्रद्धा उत्पन्न हो।इस अवसर पर विक्रम संवत के इतिहास पर आधारित पुस्तक अतिथियों को भेंट की गई।

भोपाल के संस्थान की उत्कृष्ट प्रस्तुति– भोपाल के त्रिकर्षि नाट्य संस्था के कलाकारों ने जिस शैली, संवाद और अभिनय कौशल के साथ सम्राट विक्रमादित्य की गाथा को मंच पर उतारा, उसने सभी दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।नाटक में यह बताया गया कि वर्तमान समय में युवा किस तरह आधुनिक नववर्ष मनाते हैं, लेकिन हमारी प्राचीन संस्कृति और विरासत से अपरिचित रहते हैं। इसके बाद विक्रम संवत की ऐतिहासिक यात्रा को बड़े प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया।मंच पर कलाकारों ने महाराजा विक्रमादित्य के शासन, न्यायप्रियता, नीति और त्याग को इतनी जीवंतता से निभाया कि दर्शकों को ऐसा अनुभव हुआ मानो वे स्वयं उस युग का हिस्सा बन गए हों।

संस्कृति और इतिहास का भव्य संगम– नाटक की प्रभावशाली प्रस्तुति ने यह सिद्ध कर दिया कि हमारी संस्कृति सिर्फ अतीत का गौरव नहीं, बल्कि भविष्य की प्रेरणा भी है। सम्राट विक्रमादित्य की गाथा ने हर दर्शक के हृदय में देश और संस्कृति के प्रति नई चेतना और उत्साह का संचार किया। कार्यक्रम का संचालन जिला पुरातत्व, पर्यटन एवं संस्कृति परिषद के नोडल अधिकारी प्रवीण शर्मा ने किया।

पैग़ाम

जावेद आलम
(लेखक वरिष्ठ पत्रकार व अनुवादक हैं)

ईदुल्फ़ित्र: हर साल एक नए संसार में क़दम रखना

त्योहार इंसानों को नई ऊर्जा व सकारात्मक पैग़ाम देते हैं। ख़ासतौर से ईदुल्फित्र के माध्यम से तो रोज़ेदार जैसे हर साल एक नई दुनिया में क़दम रखता है। एक माह के रोज़ों की कठिन तपस्या के ईनामस्वरूप अल्लाह ने अपने नेक बंदों को ईदुल्फित्र की सौग़ात दी है। इसके मूल में आत्मा व शरीर की शुद्धि, दिल से मैल की सफ़ाई, त्याग, पारस्परिक मेलजोल, इंसानियत के नाते हमदर्दी व मदद के जज़्बात उभारना, भाईचारा व हर हाल में रब का शुक्र अदा करना जैसी बातें शामिल हैं।

अरबी शब्द ईद का अर्थ पलट कर आना भी है और ख़ुशी भी। सो स्वाभाविक रूप से ईद ख़ुशियां मनाने व बांटने का दिन है। माहे-रमज़ान की एक माही इबादतों के बाद थके-मांदे इंसान को नई ऊर्जा देने के ख्याल से ईदुल्फ़ित्र अता की गई है। यह ख़ुशी का दिन है और इस्लाम ख़ुशी को भी संयम के साथ मनाने के सीख देता है। यह नहीं कि ईद है तो आप धूम-धड़ाका कर-कर के पूरी दुनिया सर पर उठा लें। दूसरे धर्म वालों के इलाकों में जा कर हुड़दंगबाज़ी करें, उनकी इबादतगाहों का निरादर करने जैसे घृणित व अशांति फैलाने वाले प्रयास करें। बल्कि ईदुल्फ़ित्र में विशेष नमाज़ पढ़ने व ख़ासतौर से फ़ित्रा अदा करने का हुक्म है।

ईद की यह विशेष नमाज़ नियमित नमाज़ों के अलावा है, जो सिर्फ़ ईद के दिन ही पढ़ी जाती है। इसके पीछे फ़लसफ़ा यह है कि अल्लाह तआला के हुक्म से तुमने रमज़ान का पाक महीना संयम व धर्म परायणता के साथ ख़ासी बंदिशों में गुज़ारा। तुम्हारी यह इबादतें बख़्शिश (मोक्ष) का ज़रिया बन सकती हैं, सो इस मौक़े पर अपने रब के दरबार में तुम्हें विशेष सजधज के साथ हाज़िर होकर शुक्राना अदा करना है। साथ ही यह कि अब तुम तुम्हारी नियमित दीनचर्या की ओर लौट रहे है, सो यहां से विशेष नमाज़ अदा कर के, जी भर के दुआएं मांग कर जाओ ताकि तुम्हें दोनों लोक में सफलता मिले।

इदुल्फ़ित्र से जुड़ा फ़ित्रा दरअसल एक निश्चित राशि है, जो हर खाते-पीते मुसलमान को ईद की नमाज़ से पहले अदा करना ज़रूरी है। यह राशि ग़रीब, कमज़ोर मुसलमानों को दिए जाने का हुक्म है, ताकि वे भी ईद की ख़ुशियों में शरीक हो सकें। इसी तरह अगर गुंजाइश हो तो ईद की नमाज़ के लिए नए कपड़े पहनने, नहाने, मिस्वाक यानी दातून करने, ख़ुश्बू लगाने के तरीक़े बताए गए हैं। फ़ित्रे के बारे में निर्देश है कि इसे पहले अदा कर दिया जाए, ताकि कमज़ोर तब्क़ा भी ईद की तैयारियां कर लेवे।

पैग़ंबरे-इस्लाम हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलयहि व सल्लम ईदुल्फ़ित्र की नमाज़ के लिए जाने से पहले विषम संख्या में खजूर खा कर जाया करते थे, सो खजूर या उसके स्थान पर कुछ मीठा खा कर जाने का हुक्म है। भारतीय उप-महाद्वीप में सिवैयां व शीर ख़ुर्मा खा कर जाने की परंपरा है। साथ ही इस ख़ुशी के मौक़े पर अपने-अपने इलाक़े के विभिन्न पकवान भी भरपूर आत्मीयता से खाए व खिलाए जाते हैं।

ऐसे लज़ीज़ पकवानों से, नए कपड़ों व अन्य साज़ो-सामान से समाज का ग़रीब तब्क़ा वंचित न रह जाए, इसके लिए सदक़ा-ए-फ़ित्र अदा करने के विशेष निर्देश हैं। ऐसे ही लोगों का ख़याल रखने, उनकी दिलजूई का सामान करने के साथ अपने क़रीबी रिश्तेदारों, दोस्तों के लिए दावतों का आयोजन भी किया जाता है। इन दावतों का सिलसिला लंबा चलता है। वैसे ईदुल्फ़ित्र की पहचान सिवैयां व शीरख़ुर्मा कई इलाक़ों में अगली ईद यानी ईदुज़्ज़ुहा आने तक खाए व खिलाए जाते हैं।

आपसी हमदर्दी, भाईचारा, रिश्ते निभाने जैसे अच्छे कामों के साथ हर मौक़े पर अपने रब को याद रखने व उसके बताए रास्तों पर चलने का पैग़ाम देती ईदुल्फ़ित्र दुनिया में भी अमन व शांति क़ायम करने का ज़रिया बन जाए आमीन!

अप्रैल के पहले सप्ताह एमपी में ओले-बारिश

भोपाल, इंदौर-जबलपुर संभाग में गिरेगा पानी; 40-50 किलोमीटर प्रतिघंटा की रफ्तार से आंधी का अनुमान

भोपाल (नप्र)। अप्रैल के पहले सप्ताह में मध्यप्रदेश में ओले, बारिश और आंधी का अलर्ट है। 1 और 2 अप्रैल को भोपाल, इंदौर, जबलपुर, नर्मदापुरम समेत प्रदेश के पूर्वी हिस्से यानी रीवा, शहडोल संभाग में भी बारिश हो सकती है। कुछ जिलों में ओले गिरने और 40 से 50 किलोमीटर प्रतिघंटा की रफ्तार से आंधी भी चल सकती है। सीनियर मौसम वैज्ञानिक डॉ. दिव्या ई. सुरेंद्रन ने बताया कि वेस्टर्न डिस्टरबेंस (पश्चिमी विक्षोभ), साइक्लोनिक सर्कुलेशन सिस्टम की वजह से मौसम बदल सकता है। 30 मार्च को दिन-रात के तापमान में ज्यादा बढ़ोतरी नहीं होगी। भोपाल, इंदौर, उज्जैन, ग्वालियर-जबलपुर में दिन का पारा 35-36 डिग्री सेल्सियस के आसपास ही रह सकता है। रात में भी पारा कम ही रहेगा।

अगले 3 दिन ऐसा रहेगा मौसम

31 मार्चः सोमवार को दिन में मौसम का मिजाज बदला रहेगा। दिन में धूप तो खिलेगी लेकिन तेज गर्मी रहने के आसार नहीं हैं।

1 अप्रैलः हरदा, खंडवा, बुरहानपुर में ओले गिर सकते हैं। भोपाल, राजगढ़, शाजापुर, इंदौर, देवास, बड़वानी, खरगोन, सीहोर, नर्मदापुरम, बैतूल, छिंदवाड़ा, पांढुर्णा, सिवनी, मंडला और बालाघाट में हल्की बारिश, आंधी और गरज-चमक के आसार हैं।

2 अप्रैलः बड़वानी, खरगोन, खंडवा, बुरहानपुर, हरदा, छिंदवाड़ा, पांढुर्णा, सिवनी, मंडला, बालाघाट में कहीं-कहीं ओले गिर सकते हैं। सतना, रीवा, मऊगंज, सीधी, सिंगरौली, मैहर, कटनी, उमरिया, शहडोल, अनूपपुर, डिंडौरी, जबलपुर, नरसिंहपुर, बैतूल, नर्मदापुरम, भोपाल, सीहोर, राजगढ़, शाजापुर, इंदौर, देवास में गरज-चमक, आंधी की स्थिति रह सकती है।

जल गंगा संवर्धन कार्यक्रम का शुभारंभ ,दिलाई शपथ

सुबह सवेरे सोहागपुर ।मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद के तत्वावधान में संभाग,जिला समंवयक, समाजसेवी आनंद दुबे , जीवन दुबे के मार्गदर्शन में विकास खंड समन्वयक किशोर कड़ोले आदि जन अभियान परिषद के कार्यालय में छात्र छात्राओं की रैली निकालने के उपरांत जल व्यर्थ ना बहाने एवं नशामुक्ति की शपथ दिलाकर 3 माह चलने वाले जल गंगा संवर्धन कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर जन अभियान परिषद के संभाग, जिला समन्वयक के अलावा समाजसेवियों ने विस्तृत उद्बोधनों के माध्यम से छात्र छात्राओं का मार्गदर्शन किया। इस अवसर पर निर्मल विकास सेवा समिति, नव रंग युवा मंडल , मित्र संघ सोहागपुर के प्रमुख मेंटरों गजेंद्र ठाकुर, सचिन विश्वकर्मा, श्याम सिंह मीना, मंजु पंवार, निशा चौरसिया, संदेश मिश्रा , कमल किरार के अलावा मुख्यमंत्री सामुदायिक नेतृत्व क्षमता विकास पाठ्यक्रम के छात्र,छात्राओं आदि उपस्थित थे। विकास खंड समन्वयक किशोर कड़ोले ने बताया कि इस कार्यक्रम में ग्राम विकास प्रस्फुटन समिति के सदस्यों, समाजसेवीयों एवं जनप्रतिनिधियों का सहयोग लिया जाएगा। जिसमें छात्र छात्राओं के माध्यम से जल संरचनाओं की साफ सफाई, बोरीबंधान, तालाब गहरी करण, रैली, प्रभात फेरी, ग्राम चौपाल एवं नरवाई को जलाने से रोकने के लिए चौपाल आदि कार्यक्रम किए जाएंगे ।बिना सुरक्षा किट के खंबे पर चढ़ कर बिजली सुधार रहे कर्मचारी की मौत,लोगों ने किया चक्का जाम

विद्युत विभाग में कार्यरत युवक की करंट लगने से मौत

देवास। विद्युत विभाग के ठेकेदार के अधीन काम करने वाला शुभम परिवार में एक मात्र घर चलाने वाला था। घर में गर्भवती पत्नी और 4 साल का छोटा बच्चा है। शुभम की मौत का समाचार सामने आने पर परिचितों और कालोनीवासियों ने शव को सड़क पर रखकर चक्का जाम कर अपना विरोध प्रकट किया। इस मामले में विद्युत विभाग के ठेकेदार की बड़ी लापरवाही सामने आई है जो आउट सोर्स कर्मचारियों को किसी तरह के सुरक्षा संसाधन उपलब्ध नहीं कराते प्रशासन द्वारा मामले को शांत करने के प्रयास-किए गए साथ ही में घटना में जिम्मेदार विद्युत विभाग ने परिवार की आर्थिक सहायता करने का दिया आश्वाशन दिया है। इधर ठेकेदार के फोन घटना के बाद से ही बन्द आ रहे हैं ।सेन समाज ने भी प्रशासन से की घटना में जिम्मेदार ठेकेदार पर एफआईआर की मांग।

दिनदहाड़े हुई सनसनीखेज लूट का पर्दाफाश, मात्र 48 घंटे में सफलता, सोसायटी का सहकर्मी निकला मास्टरमाइंड

देवास। देवास जिले के थाना टोंकखुर्द क्षेत्र में एक सनसनीखेज लूट की घटना सामने आई थी, जिसमें लुटेरों ने दिनदहाड़े एक सोसायटी से करीब ?32,62,700/- की राशि लूट ली थी। इस लूट के मामले ने पुलिस महकमे में हलचल मचा दी थी। लेकिन, देवास पुलिस ने महज 48 घंटों के भीतर इस मामले का पर्दाफाश कर दिया और लूट की राशि का एक बड़ा हिस्सा बरामद करने में सफलता प्राप्त की।

लूट की घटना का विवरणः घटना टोंकखुर्द थाना क्षेत्र के एक सोसायटी कार्यालय से जुड़ी थी, जहां एक व्यक्ति ने रुपये की बड़ी रकम लेकर भागने का प्रयास किया। इस घटना के बाद पुलिस को सूचना मिलने के तुरंत बाद उन्होंने मामले की गंभीरता को समझते हुए विशेष टीम बनाई और घटनास्थल से जुड़ी सभी जानकारी एकत्र की। पुलिस द्वारा जांच के दौरान यह पता चला कि लूट की योजना सोसायटी के अंदर ही एक सहकर्मी ने बनाई थी, जो घटना का मास्टरमाइंड निकला। इस वारदात में कुल ?32,62,700/- की राशि लूटी गई थी, जिसमें से पुलिस ने ?31,71,000/- की राशि बरामद की।

गिरफ्तार आरोपियों के नाम-पुलिस ने मामले में चार मुख्य आरोपियों को गिरफ्तार किया है, जिनके नाम निम्नलिखित हैंः तोहिद शाह (पिता- तैय्यब शाह), उम्र 28 वर्ष, निवासी नई आबादी, थाना टोंकखुर्द। ज़ आमिन शाह (पिता- आबिद शाह), उम्र 43 वर्ष, निवासी नई आबादी, थाना टोंकखुर्द। कुन्दन सोलंकी (पिता- हरीश सोलंकी), उम्र 28 वर्ष, निवासी मालवीय नगर, थाना टोंकखुर्द। राम कुशवाह (पिता- दशरथ कुशवाह), उम्र 32 वर्ष, निवासी गलेती मोहल्ला, थाना टोंकखुर्द। इन आरोपियों ने मिलकर इस लूट की घटना को अंजाम दिया था, और मुख्य आरोपी तोहिद शाह एक सोसायटी में काम करने वाला सहकर्मी था, जिसने पूरी योजना बनाई और अपने अन्य साथियों के साथ मिलकर इस लूट को अंजाम दिया।

पुलिस की कार्रवाई-देवास पुलिस द्वारा तेजी से की गई कार्रवाई में आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया गया और लूटी गई रकम में से अधिकांश राशि को बरामद कर लिया गया है। यह सफलता पुलिस के लिए बड़ी जीत मानी जा रही है, क्योंकि दिनदहाड़े हुई इस लूट के बाद शहर में सुरक्षा के लिहाज से कई सवाल उठ रहे थे।

करोड़ों रुपए की साइबर ठगी के मामले में भोपाल से दंपती को हिरासत में लिया

भोपाल (नप्र)। भोपाल के न्यू मार्केट से शनिवार की शाम को मुंबई पुलिस ने दंपती को हिरासत में लिया है। बताया जा रहा है कि पुलिस को करोड़ों रूपए की साइबर ठगी के एक मामले में उनकी तलाश थी ।लोकेशन के आधार पर दोनों को हिरासत में लिया गया है। कार्रवाई में भोपाल क्राइम ब्रांच का भी सहयोग लिया गया है। जानकारी के मुताबिक सुधांशु नाम के व्यक्ति व उसकी पत्नी को हिरासत में दिया गया है।

ग्वालियर में लेडी डॉक्टर ने सुसाइड किया

हॉस्टल के कमरे में फंदे पर लटका मिला शव; पिता ने जताई हत्या की आशंका

ग्वालियर (नप्र)। ग्वालियर के गजराराजा मेडिकल कॉलेज के जमुना हॉस्टल में शनिवार रात मेडिकल छात्रा ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। मृतका जयारोग्य अस्पताल के न्यूरोलॉजी विभाग से डीएम (डॉक्टरेट ऑफ मेडिसिन) की पढ़ाई कर रही थी। इससे पहले वह एमडी कर चुकी थी।

घटना की सूचना पर पुलिस और फोरेंसिक टीम मौके पर पहुंची। शुरुआती जांच के बाद शव को मॉर्च्युरी में रखवा दिया गया। डॉ. रेखा रघुवंशी (31) अशोकनगर की रहने वाली थी।

रात में स्टडी के बाद किया सुसाइड

हॉस्टल की अन्य छात्राओं के मुताबिक शनिवार रात में डॉ. रेखा ने खाना खाया, फिर स्टडी करने के बाद सोने चली गई। देर रात करीब 12 बजे जब क्लास मेट रूम में पहुंची तो देखा कि रेखा रेलिंग से बंधे फंदे पर लटकी हुई थीं।

उसने पाया कि रेखा की मौत हो चुकी है। छात्रा ने फौरन हॉस्टल वॉर्डन को इसकी सूचना दी। खबर मिलते ही हॉस्टल प्रशासन और मेडिकल कॉलेज के डीन डॉ. आरकेएस धाकड़ मौके पर पहुंचे।

सुसाइड नोट नहीं मिला, मोबाइल जब्त

डॉ. रेखा के भाई रोहित ने बताया कि शुक्रवार को उससे बातचीत हुई थी, लेकिन उसने किसी परेशानी का जिक्र नहीं किया था। रविवार सुबह पिता और भाई ग्वालियर पहुंचे, जहां बेटी का शव देखकर वे रो पड़े।

डॉ. रेखा रघुवंशी (मृतक)

पुलिस ने घटनास्थल की बारीकी से जांच की, लेकिन कोई सुसाइड नोट नहीं मिला। मृतका का मोबाइल जब्त कर लिया गया है, जिससे जांच में मदद मिलने की उम्मीद है।

डॉक्टरों का पैनल करेगा पोस्टमॉर्टम

महिला डॉक्टर की मौत के स्पष्ट कारणों का पता लगाने के लिए पोस्टमॉर्टम डॉक्टरों के एक पैनल से कराया जाएगा। पुलिस आसपास के लोगों और क्लास मेट्स से भी पूछताछ कर रही है, लेकिन अब तक आत्महत्या के पीछे की वजह स्पष्ट नहीं हो सकी है। कंपू थाना पुलिस के मुताबिक डॉ. रेखा के आत्महत्या के कारणों की जांच जारी है। परिजन से बातचीत के बाद ही आगे की स्थिति स्पष्ट हो सकेगी।

सगाई हो चुकी थी, अगले साल शादी थी

डॉ रेखा की मौत के बाद पिता भानुप्रताप सिंह ने हत्या की आशंका जताई है। उन्होंने बताया कि उनकी बेटी की सगाई पहले ही हो चुकी थी और फरवरी 2026 में शादी होने वाली थी। यह रिश्ता युवती और परिवार की सहमति से तय हुआ था।

ईंटखेड़ी में हिट एंड रन बुजुर्ग महिला की मौत, आरोपी फरार

भोपाल (नप्र)। ईंटखेड़ी इलाके में शनिवार दोपहर एक भीषण हिट एंड रन की घटना हुई। एक तेज रफ्तार कार ने बाइक सवार एक मां और उसके बेटे को जोरदार टक्कर मारी, जिसमें 70 वर्षीय बुजुर्ग महिला की मौके पर ही मौत हो गई। हादसे के बाद आरोपी चालक ने वाहन सहित घटनास्थल से फरार हो गया। पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है और आरोपी की तलाश के लिए घटनास्थल के आसपास के सीसीटीवी फुटेज का विश्लेषण कर रही है, लेकिन अभी तक कार का पता नहीं लगाया जा सका है ।जानकारी के अनुसार, जैतपुरा निवासी 70 वर्षीया संपत बाई अपने बेटे के साथ बाइक से कहीं जा रही थीं।

समर्थन मूल्य पर उपार्जित गेहूँ का सुरक्षित भण्डारण सुनिश्चित करें : खाद्य मंत्री राजपूत

भोपाल (नप्र)। खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री श्री गोविंद सिंह राजपूत ने विभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया है कि मौसम विभाग द्वारा प्रदेश में आगामी दिनों असामयिक वर्षा होने का पूर्वानुमान जारी किया गया है। अतः रबी विपणन वर्ष 2025-26 में अभी तक उपार्जित गेहूँ का परिवहन एवं भण्डारण सुनिश्चित करें। इस तरह के प्रयास करें कि किसी भी उपार्जन केन्द्र पर असामयिक वर्षा से गेहूँ भीगना नहीं चाहिए। 7 लाख मीट्रिक टन से अधिक का गेहूँ उपार्जन-मंत्री श्री राजपूत ने कहा है कि अभी तक 7 लाख 98 हजार 461 मीट्रिक टन गेहूँ का उपार्जन किया जा चुका है। इसमें से 6 लाख 96 हजार 625 मीट्रिक टन उपार्जित गेहूँ का परिवहन एवं भण्डारण किया जा चुका है। शेष मात्रा 1 लाख 1 हजार 836 मीट्रिक टन गेहूँ का परिवहन एवं भण्डारण अति शीघ्र करवायें।

कलेक्टर्स को निर्देशित किया गया है कि उपार्जन केन्द्रों पर उपलब्ध गेहूँ का परिवहन कर गोदामों में सुरक्षित भण्डारण के लिये जरूरी हो तो अन्य परिवहनकर्ताओं के ट्रकों को इस कार्य में लगाएं। गोदाम स्तरीय उपार्जन केन्द्रों पर खुले में भण्डारित गेहूँ को समितियों के माध्यम से गोदामों में भण्डारण सुनिश्चित करें। उपार्जन केन्द्रों पर गेहूँ की स्टेक लगाकर पक्के प्लेटफार्म पर भण्डारित करायें और उसे तिरपाल से कवर करवायें। नियुक्त नोडल अधिकारी अपने-अपने केन्द्र पर उपस्थित रहकर सभी जरूरी व्यवस्थाएं सुनिश्चित करें।

रोइंग और कराटे चैंपियनशिप में म.प्र.के खिलाड़ियों का प्रदर्शन

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश के खिलाड़ियों ने राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में शानदार प्रदर्शन करते हुए राज्य का नाम रोशन किया है। ऑल इंडिया इंटर यूनिवर्सिटी रोइंग चैंपियनशिप 2025 और चौथी किओ राष्ट्रीय सीनियर व अंडर-21 कराटे चैंपियनशिप 2025 में मध्यप्रदेश के खिलाड़ियों ने कुल 21 पदक (11 स्वर्ण, 1 रजत और 9 कांस्य) जीतकर ऐतिहासिक सफलता हासिल की है। बता दें कि 21 से 27 मार्च तक चंडीगढ़ में आयोजित ऑल इंडिया इंटर यूनिवर्सिटी रोइंग चैंपियनशिप में मध्यप्रदेश रोइंग अकादमी के खिलाड़ियों ने 4 स्वर्ण और 5 कांस्य सहित कुल 9 पदक जीते। वहीं 26 से 29 मार्च तक हैदराबाद में आयोजित चौथी किओ राष्ट्रीय कराटे चैंपियनशिप में मध्यप्रदेश ने 7 स्वर्ण, 1 रजत और 4 कांस्य सहित कुल 12 पदक जीतकर ओवरऑल चैंपियन का खिताब हासिल किया।

प्रॉपर्टी डीलर ने खुद को गोली मारी, मौत

जबलपुर (नप्र)। जबलपुर में एक प्रॉपर्टी डीलर ने खुद को गोली मारकर आत्महत्या कर ली। शनिवार रात में उन्होंने पत्नी के साथ खाना खाया। इसके बाद सो गए थे। रविवार तड़के उठकर दूसरे कमरे में गए। वहां लाइसेंसी रिवॉल्वर से खुद को शूट कर लिया।

घटना रविवार अलसुबह की है। प्रॉपर्टी डीलर राकेश कथोरिया (62) भरत कॉलोनी में अपनी पत्नी के साथ रहते थे। उनके बच्चे जबलपुर से बाहर रहते हैं। घटना के दौरान राकेश घर पर पत्नी के साथ थे।फायरिंग की जानकारी मिलते ही गढ़ा थाना पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने शव को मेडिकल कॉलेज भिजवाया। पुलिस को मौके से सुसाइड नोट नहीं मिला है। घटना की जांच की जा रही है।फायरिंग की आवाज सुनकर पत्नी दौड़कर पहुंची

राकेश कथोरिया का व्यापार अच्छा चल रहा था। संपन्न परिवार होने के कारण समाज में भी उठना-बैठना था। फायरिंग की आवाज सुनते ही पत्नी दौड़कर आई, देखा तो राकेश जमीन पर खून से लथपथ पड़े थे। पत्नी ने कहा कि सबकुछ अच्छा चल रहा था। उनकी बातों से ऐसा भी लगा भी नहीं कि वो किसी तरह की परेशानी में है।

पास में रखा था शराब से भरा गिलास-जिस कमरे में राकेश ने खुद को गोली मारकर आत्महत्या की है, उस कमरे में शराब से भरा एक गिलास भी रखा हुआ मिला है। आशंका है कि राकेश ने आत्महत्या करने से पहले शराब पी और फिर गोली मार ली।घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची। मामले की जांच की जा रही हैं।

इटारसी में 3 मकानों में आग, दिव्यांग जिंदा जला

फायर ब्रिगेड की 20 गाड़ियों ने 3 घंटे की मशक्कत के बाद बुझाई आग

इटारसी (नप्र)। इटारसी के नेहरूगंज इलाके में शनिवार-रविवार की दरमियानी रात करीब 3 बजे तीन मकानों में आग लग गई। हादसे में एक दिव्यांग व्यक्ति की मौत हो गई।

आग सबसे पहले राजेंद्र सिंह राजपूत के कच्चे मकान में लगी। फिर मिनटों में ही पड़ोस के दो अन्य मकानों में भी फैल गई। सूचना मिलते ही इटारसी, होशंगाबाद और ऑर्डनेंस फैक्ट्री से फायर ब्रिगेड की करीब 20 गाड़ियां मौके पर पहुंचीं। 3 घंटे की मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया जा सका।थाना प्रभारी गौरव सिंह बुंदेला ने बताया कि हादसे में राजेंद्र सिंह राजपूत की मौत हो गई। वे दिव्यांग थे, इस कारण भाग नहीं सके। आग से एडवोकेट रवि सावदकर और अजय गंगराड़े के मकानों को भी नुकसान पहुंचा है। तीनों घरों में रखा

गृहस्थी का सामान जलकर खाक हो गया।

पिता सो रहे थे, बचा नहीं पाए-राजेंद्र सिंह राजपूत की बेटी नंदिनी ने बताया- आग सबसे पहले पिताजी के कमरे में लगी। वे सो रहे थे। जब तक हम पहुंचते, आग पूरी तरीके से कमरे में फैल चुकी थी। लपटों ने उन्हें अपनी चपेट में ले लिया। हमने उन्हें बचाने की कोशिश की, लेकिन सफल नहीं हो सके।

बेटे की शादी का सामान जला-एडवोकेट रवि सावदकर ने बताया, बेटे की शादी 17 मई को होना तय है। इसके लिए 5 लाख रुपए का सामान खरीदा था, जो आग में जल गया।नायब तहसीलदार हीरू कुमरे ने कहा कि फायर ब्रिगेड की 20 गाड़ियों की मदद से आग पर काबू पाया गया। घटना का कारण फिलहाल स्पष्ट नहीं हो सका है।

स्कूल शिक्षा मंत्री सिंह ने शासकीय कन्या शाला गाडरवारा का किया निरीक्षण

भोपाल (नप्र)। स्कूल शिक्षा मंत्री श्री उदय प्रताप सिंह ने शनिवार को नरसिंहपुर जिले के शासकीय कन्या शाला गाडरवारा का निरीक्षण किया। उन्होंने एक अप्रैल से नये शैक्षणिक सत्र की तैयारियों के संबंध में जानकारी प्राप्त की। स्कूल प्रशासन ने बताया कि कन्या शाला में करीब एक हजार छात्राओं के नाम अध्ययन के लिये दर्ज है।

मंत्री श्री सिंह ने शाला भवन निर्माण की स्थिति की जानकारी नगर पालिका अधिकारी से प्राप्त की। उन्होंने निर्देश दिये कि निर्माणाधीन काम गुणवत्ता के साथ तय समय-सीमा में पूरा किया जायें। मंत्री श्री सिंह ने शिक्षा विभाग के अधिकारियों से एक अप्रैल से 4 अप्रैल 2025 तक चलने वाले 'स्कूल चलें हम अभियान' और 'प्रवेशोत्सव कार्यक्रम' में होने वाली गतिविधियों की जानकारी प्राप्त की।

श्रद्धेय हेडगेवार जी के विचार और राष्ट्र सेवा के संस्कार मार्गदर्शक रहेंगे : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने मां भारती की सेवा के लिए संकल्पित राष्ट सेवकों के संगठन 'राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ' के संस्थापक, श्रद्धेय केशव बलिराम हेडगेवार जी की जयंती पर शत-शत नमन कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राष्ट्र चिंतक, मातृभूमि के गौरव स्व. हेडगेवार का अनुशासित जीवन कोटि-कोटि स्वयंसेवकों को प्रेरित करता रहेगा। श्रद्धेय हेडगेवार जी के विचार, चिंतन और राष्ट्र सेवा के उनके संस्कार हमारे लिए जीवन पर्यंत मार्गदर्शक बने रहेंगे।

उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने प्रदेशवासियों को दी ईद-उल-फितर की शुभकामनाएं

भोपाल(नप्र)। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने प्रदेशवासियों को ईद-उल-फितर की शुभकामनाएं दी हैं। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि ईद का पर्व त्याग, सेवा और भाईचारे का प्रतीक है।

यह त्योहार हमें समाज में एकता और सौहार्द्र को मजबूत करने की प्रेरणा देता है। उपवास और इबादत के इस पवित्र महीने के बाद ईद का त्योहार सभी के जीवन में खुशहाली और समृद्धि लाए, ऐसी कामना है।

॥ मंदिरम् ॥ 70

तेली का मंदिर, ग्वालियर

तेली का मंदिर, जिसे तेलिका मंदिर के नाम से भी जाना जाता है , भारत के मध्य प्रदेश में ग्वालियर किले के भीतर स्थित एक हिंदू मंदिर है। शिव, विष्णु और मातृकाओं को समर्पित , इसका समय विभिन्न प्रकार से 8वीं शताब्दी की शुरुआत और 9वीं शताब्दी की शुरुआत के बीच का बताया गया है। यह एक हिंदू मंदिर के लिए एक असामान्य डिजाइन है, क्योंकि इसमें सामान्य वर्ग के बजाय एक आयताकार गर्भगृह है। यह नागर शैली और वल्लभी प्रसाद के वास्तुशिल्प तत्वों को एकीकृत करता है। यह मंदिर गुर्जर प्रतिहार - गोपागिरी शैली की उत्तर भारतीय वास्तुकला पर आधारित है।

मुख्यमंत्री ने विक्रम संवत् 2082 के आरंभ पर सूर्य को अर्घ्य दिया

विक्रम ध्वज, गुड़ी का दत्त अखाड़ा घाट पर पूजन-अर्चन किया

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने रविवार को उज्जैन में प्रातः भारतीय नव वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, विक्रम नव संवत्सर 2082 के आरंभ के अवसर पर उदीयमान सूर्य देव को अर्घ्य दिया और हिंदू नव वर्ष पर विक्रम ध्वज, गुड़ी का दत्त अखाड़ा घाट पर पूजन-अर्चन किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रदेशवासियों और देशवासियों को भारतीय नववर्ष की मंगलकामनाएं दी।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भारतीय संस्कृति के अंतर्गत पर्व और त्योहारों का निर्धारण मंगल तिथियां के आधार पर होता है। खगोलीय गतिविधियों की दृष्टि से गुड़ी पड़वा अर्थात् प्रतिपदा, वर्ष की पहली मंगल तिथि है। इस मंगल तिथि का अभिवादन कहीं चेटीचंड, कहीं वर्ष प्रतिपदा और कहीं गुड़ी पड़वा सहित अन्य अनेक नाम से किया जाता है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया की यह प्राचीन सनातन संस्कृति की अनुपम परंपरा है। इसी तिथि पर चंहुओर खुशियों, समृद्धि और हर्षोल्लास का वातावरण होता है। गुड़ी पड़वा पर घर-घर स्थापित होने वाला कलश हमारी पवित्र आत्मा को अभिव्यक्त करता है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि समृद्धि और विकास का नव संवत्सर सभी के जीवन में सुख- समृद्धि और आनंद का भाव लाए, ईश्वर से यही कामना है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने पूजन-अर्चन उपरांत माँ क्षिप्रा की गोद में नौका विहार कर व्यवस्थाओं का अवलोकन किया। इसके बाद देव दर्शन कर साधु-संतों और श्रद्धालुओं से मुलाकात की। उन्होंने दत्त अखाड़ा के पीठाधीश्वर संत श्री सुंदरपुरी महाराज जी से आशीर्वाद प्राप्त कर सत्संग किया।

दत्त अखाड़ा के पीठाधीश श्री संत श्री सुंदरपुरी महाराज ने मुख्यमंत्री का शॉल पहनाकर स्वागत कर आशीर्वाद दिया। संत श्री ने मुख्यमंत्री डॉ. यादव से कहा कि यह हिंदू नव वर्ष ही वास्तव मे प्रकृति का नव वर्ष है, जिसमें प्रकृति नव श्रृंगार करती है। पेड़ पौधों मे नवीन पत्ते आते है, प्रकृति में उत्साह और नव संचार का प्रवाह होता है। उज्जैन की इस प्राचीन, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक धरोहर को संभालने और संवारने के प्रयासों की संतश्री सुंदर पूरी महाराज ने प्रशंसा कर आशीर्वाद दिया।

इस पावन अवसर पर विधायक श्री अनिल जैन कालूहेड़ा, नगर निगम सभापति श्रीमती कलावती यादव, जिला भाजपा अध्यक्ष श्री संजय अग्रवाल, साधु संत, जन प्रतिनिधि और हिंदू संस्कृति के ध्वज वाहक महिला, पुरुष बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

चैत्र नवरात्र में प्रथम दिन माता मंदिरों में उमड़े श्रद्धालु

लगे छप्पन भोग,सलकनपुर में 108 ज्योति जलीं

भोपाल/सीहोर/मैहर/नर्मदापुरम/उज्जैन (नप्र)। हिंदू नव वर्ष विक्रम संवत्सर 2082 और चैत्र नवरात्रि आज रविवार से शुरू हो गए हैं। प्रदेशभर में नवरात्रि के पहले दिन देवी दुर्गा के माता शैलपुत्री रूप की पूजा की गई। मैहर के शक्तिपीठ शारदा मंदिर, दतिया स्थित पीतांबरा पीठ, उज्जैन की हरसिद्धि, अवंतिका माता, सलकनपुर स्थित मां विजयासन देवी धाम समेत सभी देवी मंदिरों में भक्तों की भीड़ उमड़ पड़ी है।

सलकनपुर माता मंदिर के आचार्य पंडित सोमेश परसाई ने बताया, नव वर्ष के राजा सूर्य हैं। मंत्री भी सूर्य ही हैं इसलिए जो लोग धर्म-कर्म करते हैं, उनको यह साल विशेष फलदायी होगा। गुढ़ी पड़वा पर विधि-विधान से मां भगवती की आराधना करें। चैत्र नवरात्र में मां दुर्गा की आराधना विशेष फल देती है।

नलखेड़ा सिद्ध पीठ में माता के बाहर से दर्शन-आगर मालवा जिले के नलखेड़ा स्थित सिद्ध पीठ पीतांबरा मां बगलामुखी मंदिर में बड़ी संख्या में श्रद्धालु दर्शन के लिए पहुंचे हैं। दर्शनार्थियों को बाहर से ही दर्शन करवाए जा रहे हैं। यहां भक्तों की सुविधाओं के लिए पानी और पार्किंग की विशेष व्यवस्था की गई है।

रतलाम में मां कालिका का आकर्षक श्रृंगार-रतलाम में मां कालिका माता मंदिर पर दर्शन के लिए सुबह से भक्तों की भीड़ है। माता रानी का आकर्षक श्रृंगार किया गया है। मंदिर में ज्योत जलाई गई।

देवास माता टेकरी पर उमड़ी श्रद्धालुओं की भीड़-देवास में प्रसिद्ध माता टेकरी पर माता चामुण्डा व माता तुलजा भवानी के दर्शन के लिए भक्तों का तांता लगना शुरू हो गया। प्रशासनिक स्तर से माता टेकरी पर श्रद्धालुओं के लिए सारी व्यवस्था की गई है। गर्मी को देखते हुए पूरे परिक्रमा मार्ग पर पानी के साथ श्रद्धालुओं के लिए कार्पेट और छांव के लिए जगह-जगह टेंट लगाए गए हैं।

उमरिया के मां बिरासनी शक्तिपीठ में कलेक्टर ने की पूजा-उमरिया में मां बिरासनी शक्तिपीठ में कलेक्टर धरणेन्द्र कुमार ने घट कलश स्थापना कर पूजन किया। सीईओ जिला पंचायत, अपर कलेक्टर, एसडीएम ने भी मंदिर पहुंचकर मां बिरासनी के दर्शन किए।

बोहरा समुदाय ने मनाई ईद-उल-फित्र पर्व

फोटो: प्रवीण वाजपेई

भोपाल (नप्र)। रमजान माह की इबादतों के समापन के बाद रविवार सुबह बोहरा समाज ने हर्षोल्लास के साथ ईद-उल-फित्र का पर्व मनाया। शहर की प्रमुख मस्जिदों में सुबह 6 बजे ईद की नमाज अदा की गई, जिसमें समाज के हजारों लोग शामिल हुए।

ईद की नमाज के बाद समाज के लोगों ने एक-दूसरे को गले लगाकर ईद की मुबारकबाद दी और पारंपरिक पकवान शीर खुरमा का आनंद लिया। परंपरा के अनुसार, बच्चों को ईदी भी दी गई।

भोपाल जिले में करीब 7 हजार बोहरा समाज के लोग निवास करते हैं। उन्होंने हैदरी मस्जिद अलीगंज, बद्री मस्जिद, सेफिया कॉलेज, अहमदी मस्जिद भोपाल टॉकीज, हुसैनी मस्जिद पीरगेट, बुरहारी मस्जिद करौंद और नूर महल मरकज में नमाज अदा की।

समाज के लोगों ने इस अवसर पर अच्छे अमल (अच्छे काम) जारी रखने का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि ईद सिर्फ एक त्योहार नहीं, बल्कि यह भलाई और भाईचारे को बढ़ावा देने का अवसर भी है।

भक्ति और आस्था के साथ निकली भगवान झूलेलाल की शोभायात्रा

भोपाल में जयकारों के बीच हर्षोल्लास से मनाया चैटीचंड महोत्सव

भोपाल (नप्र)। चैतीचंड महोत्सव के पावन अवसर पर विजयनगर उत्थान सिंधी पंचायत, लालघाटी द्वारा भगवान झूलेलाल जी के अवतरण दिवस पर भव्य शोभायात्रा का आयोजन किया गया। यह शोभायात्रा श्री गंगा हरि सेवा धाम दरबार, विजय नगर लालघाटी से प्रारंभ होकर विजय नगर, वल्लभनगर, ओम नगर एवं सावन नगर के मुख्य मार्गों से गुजरी। इस दौरान सैकड़ों श्रद्धालुओं ने उत्साहपूर्वक भाग

लिया। शोभायात्रा में श्रद्धालु भक्ति-भाव में लीन होकर भगवान झूलेलाल जी के जयकारे लगाते हुए आगे बढ़े। महिलाओं, पुरुषों एवं बच्चों ने पारंपरिक परिधानों में शोभायात्रा की शोभा बढ़ाई। जगह-जगह श्रद्धालुओं ने पुष्पवर्षा कर भगवान झूलेलाल जी का स्वागत किया।

पूजा-अर्चना और प्रसाद वितरण- इस पावन अवसर पर विधि-विधान से भगवान झूलेलाल जी की पूजा-अर्चना एवं आरती की गई। पूजा के उपरांत श्रद्धालुओं के बीच प्रसाद वितरित किया गया। इस आयोजन में विजय नगर सिंधी उत्थान पंचायत के संरक्षक रमेश भंभानी, मुख्य सलाहकार हीरानंद गनवानी, अध्यक्ष कैलाश शर्मा, वासुदेव जेठानी, इंद्रदास मेघानी एवं आनंद सबधानी,सुनील तनवानी सहित बड़ी संख्या में गणमान्यजन उपस्थित रहे।

एमसीयू में नि :शुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन

भोपाल। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल (एमसीयू) के महिला विकास प्रकोष्ठ द्वारा पंडित खुशीलाल आयुर्वेदिक चिकित्सा महाविद्यालय, भोपाल के सहयोग से नालंदा पुस्तकालय भवन में निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में विवि की महिला प्रोफेसर्स, अधिकारियों, कर्मचारियों और छात्राओं सहित 130 से अधिक महिलाओं ने स्वास्थ्य परीक्षण करवाया। तीन प्रमुख महिला विशेषज्ञ डॉक्टरों, डॉ. गीता सुकुमारन, डॉ. मौशमी और डॉ. शालू ने अपने जूनियर डॉक्टरों एवं अन्य चिकित्सा कर्मियों के साथ इस शिविर में हिस्सा लिया। इस दौरान गायनाकोलॉजी और पंचकर्म विशेषज्ञों ने महिलाओं को स्वास्थ्य संबंधी परामर्श दिया और निःशुल्क औषधियाँ वितरित कीं।

इसके अतिरिक्त, डाबर कंपनी द्वारा भी एक विशेष स्टॉल लगाया गया, जहां महिलाओं को कुछ आवश्यक औषधियाँ निःशुल्क प्रदान की गईं। इस आयोजन की सराहना करते हुए प्रतिभागियों ने कहा कि यह शिविर न केवल स्वास्थ्य जागरूकता बढ़ाने में सहायक साबित हुआ, बल्कि महिलाओं को समय पर विशेषज्ञ चिकित्सा परामर्श प्राप्त करने का भी एक महत्वपूर्ण अवसर मिला। महिला विकास प्रकोष्ठ ने इस सफल आयोजन के लिए विवि प्रशासन और पंडित खुशीलाल आयुर्वेदिक चिकित्सा महाविद्यालय के प्रिंसिपल डॉ. उमेश शुक्ल का आभार व्यक्त किया। शीघ्र ही पुरुष कर्मचारियों और विद्यार्थियों के लिए भी इसी प्रकार का स्वास्थ्य परीक्षण शिविर आयोजित किया जाएगा।

सरकार कृषि उपभोक्ताओं के बिजली बिलों का 93 प्रतिशत सब्सिडी के रूप में वहन करेगी : ऊर्जा मंत्री तोमर

भोपाल (नप्र)। नियामक आयोग द्वारा 29 मार्च 2025 को जारी विद्युत दरों के अनुसार क्रमशः 3 हॉर्स पॉवर, 5 हॉर्स पॉवर एवं 10 हॉर्स पावर के पंप पर कृषि उपभोक्ताओं को पूरे वर्ष में 30,730 रूपये, 54,671 रूपये एवं 1,15,655 रूपये का देयक बनता है। इसमें राज्य शासन द्वारा कृषि पंपो पर की गई सब्सिडी की घोषणा अनुसार किसानों को मात्र 750 रूपये प्रति हॉर्स पॉवर प्रति वर्ष अर्थात् किसानों को 3 हार्स पॉवर पंप पर 2250 रूपये, 5 हार्स पॉवर के पंप पर 3750 रूपये एवं 10 हार्स पॉवर के पंप पर 7500 रूपये का ही भुगतान करना होगा।

37 लाख कृषि उपभोक्ताओं को मिल रहा है सब्सिडी का लाभ- श्री तोमर ने बताया कि सरकार द्वारालिये गये निर्णय के अनुसार कृषि उपभोक्ताओं को विद्युत नियामक आयोग द्वारा जारी दरों पर सब्सिडी स्वीकृत की गई है। इसके अनुसार उपभोक्ता द्वारा दी जाने वाली राशि (रू. 750 प्रति हॉर्स पॉवर) एवं आयोग द्वारा जारी दरों का अंतर सरकार द्वारा वहन किया जायेगा।

उज्जैन विक्रम व्यापार मेले की छूट अब 9 अप्रैल तक

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के निर्देश पर विक्रम व्यापार मेले की अवधि आगामी 9 अप्रैल तक बढ़ाई गई है। इसी अनुक्रम में के परिवहन सचिव श्री मनीष सिंह ने आदेश जारी किए है। मध्यप्रदेश मोटरयान कराधान अधिनियम के तहत प्रदत्त शक्तियों को प्रयोग में लाते हुये, राज्य सरकार द्वारा परिवहन विभाग की अधिसूचना दिनांक 14 जनवरी, 2025 के माध्यम से ऐसे सभी गैर-परिवहन यानों (मोटर साइकिल, मोटर कार, निजी उपयोग के लिये ओमनी बस) तथा हल्के परिवहन यानों के वर्ष 2024-25 में उज्जैन विक्रम व्यापार मेला की मेला अवधि के दौरान विक्रय पर उनके देय जीवनकाल मोटरयान कर की दर में 50 प्रतिशत की छूट मेला अवधि 30 मार्च 2025 तक प्रदान की गई थी।अधिनियम में प्रदत्त शक्तियों को प्रयोग में करते हुये, राज्य सरकार ने अधिसूचना में विहित की गई शर्तों के अध्यधीन रहते हुए अधिसूचना के माध्यम से दी गई छूट की समय-सीमा 9 अप्रैल 2025 तक बढ़ा दी है।

कही-सुनी

रवि भोई

(लेखक पत्रिका समवेत सृजन के प्रबंध संपादक और स्वतंत्र पत्रकार हैं।)

क्या भूपेश बघेल की गिरफ्तारी होगी ?

ईडी के बाद सीबीआई के छापे से पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के भविष्य को लेकर चर्चाओं का बाजार गर्म है। कोई कह रहा है केंद्रीय एजेंसियां भूपेश बघेल को गिरफ्तार कर लेंगी, तो कुछ कह रहे हैं अभी गिरफ्तारी नहीं होगी। 2028 के विधानसभा चुनाव के पहले कुछ एक्शन हो सकता है। नतीजा चाहे जो हो, भूपेश बघेल के निवास पर एक पखवाड़े के भीतर दो बार केंद्रीय एजेंसियों के छापे से राज्य का राजनीतिक माहौल गरमाया हुआ है। भूपेश बघेल के साथ उनके राजनीतिक सलाहकार रहे विनोद वर्मा, ओएसडी, भूपेश राज में प्राइम पोस्ट पर रहे चार आईपीएस और दो एडिशनल एसपी के यहां सीबीआई के छापे से लोगों की नजर में पिछली सरकार महाभ्रष्ट दिखने लगी है। राज्य बनने के बाद पहली बार सीबीआई ने आईपीएस अफसरों पर हाथ डाला है। सीबीआई के एक्शन से अभी तो आईपीएस अफसरों की साख पर बट्टा लग गया है। सीबीआई की कार्रवाई के बाद अफसरों के निलंबन का कयास लगने लगा है। ऐसा होता है तो छत्तीसगढ़ के लिए ऐतिहासिक घटना हो जाएगी। शराब घोटाले के बाद महादेव एप का जिन्न जागने से फिलहाल तो भूपेश बघेल की मुसीबतें बढ़ गई हैं। अब आने वाले समय में भूपेश बघेल इसका कितना राजनीतिक फायदा उठा सकते हैं, यह तो समय बताएगा? भूपेश बघेल पंजाब में कांग्रेस के प्रभारी महासचिव हैं। इस छापे का पंजाब कांग्रेस पर क्या प्रभाव पड़ेगा, लोग इसका भी आंकलन कर रहे हैं। वैसे भ्रष्टाचार की लपटों में एक पूर्व मुख्यमंत्री और आईपीएस अफसरों के घिरने से छत्तीसगढ़ में गड्ढा ही गड्ढा नजर आने लगा है।

महादेव एप मामले में बचे दो आईपीएस

चर्चा है कि महादेव एप मामले में सीबीआई के रडार में आने से दो आईपीएस बाल-बाल बच गए। भूपेश बघेल के राज में दोनों आईपीएस रायपुर और दुर्ग जिले में पदस्थ रहे और महादेव एप को लेकर चर्चा में भी रहे। कहते हैं सुर्खियों में नहीं रहने के कारण ये दोनों आईपीएस अफसर सीबीआई की नजर में नहीं चढ़े, भले ही शुरूआती दिनों में इनके नाम उछले थे। अब लोग इसे किस्मत का खेल बता रहे हैं। पिछले दिनों सीबीआई ने छत्तीसगढ़ कैडर के चार आईपीएस आरिफ शेख, डॉ आनंद छाबड़ा, डॉ अभिषेक पल्लव और प्रशांत अग्रवाल के निवास पर छापे की कार्रवाई की।

छत्तीसगढ़ विद्युत मंडल में दो अध्यक्ष

खबर है कि छत्तीसगढ़ विद्युत मंडल में अब दो अध्यक्ष होंगे। मंडल में जेनरेशन और डिस्ट्रीब्यूशन के अध्यक्ष डॉ रोहित यादव रहेंगे। ट्रांसमिशन के अध्यक्ष सुबोध सिंह होंगे। राज्य बनने के बाद यह पहला मौका है कि जब विद्युत मंडल में दो अध्यक्ष काम देखेंगे। अब तक ट्रांसमिशन,जेनरेशन और डिस्ट्रीब्यूशन के प्रबंध संचालक अलग-अलग थे। छत्तीसगढ़ विद्युत मंडल में दो अध्यक्ष पदस्थ करने के पीछे विष्णुदेव साय सरकार की जो भी मंशा हो, पर मंडल में दो अध्यक्ष की पदस्थापना को लेकर चर्चाओं का बाजार गर्म है। लोग इसे छत्तीसगढ़ विद्युत मंडल के निजीकरण की दिशा में कदम बता रहे हैं। अब आने वाले समय में ही साय सरकार की रणनीति सामने आएगी।

अभिषेक माहेश्वरी को चाहने वाले भाजपा में भी

कहते हैं महादेव एप मामले में एएसपी अभिषेक माहेश्वरी के निवास पर सीबीआई के छापे से भाजपा के कुछ लोगों को गहरा सदमा लगा है। बताते हैं भाजपा के भीतर ही कुछ लोग अभिषेक माहेश्वरी की अच्छी पोस्टिंग के लिए लगे थे। चर्चा है कि इन लोगों ने सरकार के नीति-निर्धारकों से अभिषेक माहेश्वरी की मेल-मुलाक़ात भी करवाई थी और अचानक सीबीआई के छापे से वे भौंचक हो गए। हल्ला है कि भूपेश बघेल के राज में अभिषेक माहेश्वरी की सरकार में तूती बोलती थी। खबर है कि अभिषेक माहेश्वरी की पोस्टिंग बस्तर में थी, पर वे ज्यादातर समय राजधानी में ही नजर आते थे।

आधे से अधिक जिलों के कलेक्टर बदलेंगे ?

चर्चा है कि पांच अप्रैल के बाद राज्य के आधे से अधिक जिलों के कलेक्टर बदल सकते हैं। मंत्रालय स्तर पर भी कुछ अफसरों के विभागों में हेरफेर की कयास लगाई जा रही है। रायपुर, बिलासपुर, मुंगेली, जांजगीर, कोरबा समेत कुछ अन्य जिलों के कलेक्टरों को बदले जाने की हवा उड़ रही है। रायपुर कलेक्टर गौरव सिंह मंत्री ओ पी चौधरी के साथ कुंभ स्नान के बाद सुर्ख़ियों में हैं। भाजपा की पारिवारिक पृष्ठभूमि वाले गौरव सिंह भूपेश बघेल के राज में कुछ -कुछ महीनों के लिए दो-तीन जिलों के कलेक्टर रहे। बिलासपुर कलेक्टर अवनीश शरण की पोस्टिंग चुनाव आयोग ने विधानसभा चुनाव के दौरान की थी। साय सरकार ने उन्हें यथावत रखा।अवनीश शरण सचिव स्तर पर पहुंच गए हैं। मुंगेली कलेक्टर राहुल देव जुलाई 2022 से वहां पदस्थ हैं। भूपेश बघेल के राज में पोस्टिंग के चलते इनके बदले जाने की चर्चा है। अब देखते हैं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की छत्तीसगढ़ यात्रा के बाद किस तरह से प्रशासनिक उलटफेर होता है।

भाजपा नेता नरेश गुप्ता छाए

भूपेश बघेल और आईपीएस अफसरों के घर पर सीबीआई छापे के बाद भाजपा नेता नरेश गुप्ता काफी चर्चा में हैं। नरेश गुप्ता ने इस साल 18 फ़रवरी को महादेव एप में भ्रष्टाचार और महादेव एप के प्रमोटरों का पुलिस अफसरों से संबंध को लेकर सीबीआई के डायरेक्टर को पत्र लिखा था। नरेश गुप्ता ने शिकायत में जिन नेता और अफसरों के नामों का उल्लेख किया था, सीबीआई ने उन्हीं के यहां कार्रवाई की। इससे नरेश गुप्ता सुर्ख़ियों में आ गए हैं। बताते हैं भूपेश बघेल व अन्य लोगों के खिलाफ सीबीआई की दिल्ली टीम ने कार्रवाई की। सीबीआई की टीम शिकायत के आधार पर सबूत जुटाए। बताते हैं सीबीआई की टीम कार्रवाई से करीब एक पखवाड़े पहले छत्तीसगढ़ में सक्रिय थी।

विधायक पति भाजपा से निष्कासित

कहते हैं डॉ रमनसिंह के राज में संसदीय सचिव रह चुके सिद्धनाथ पैकरा की राजनीतिक आकांक्षा अचानक जाग गई और वे बलरामपुर जिला पंचायत में अधिकृत प्रत्याशी के खिलाफ मैदान में उतर गए। भाजपा के बहुमत वाले जिला पंचायत में उनकी हार तो तय थी, सो हार गए। सिद्धनाथ पैकरा की पत्नी उद्धेश्वरी पैकरा सामरी से भाजपा की विधायक हैं। 2023 के चुनाव में भाजपा ने पराजय के डर से सिद्धनाथ पैकरा की टिकट काटकर उनकी पत्नी को उम्मीदवार बनाया और वे जीत गईं। पार्टी के फैसले के खिलाफ जाने के कारण भाजपा ने सिद्धनाथ पैकरा को छह साल के लिए निष्कासित कर दिया है।

आईपीएस के काल डिटेल से सीबीआई वाले सांसत में

कहते हैं महादेव एप में उलझे एक आईपीएस का काल डिटेल देखकर सीबीआई के अफसर चक्कर खा गए। बताते हैं ये अफसर अपने बैच मैट से रोजाना कई-कई बार बात करते रहे हैं। महादेव एप के फेर में पड़े अफसर अपने जिस बैच मैट से बात करते थे, वे आजकल भाजपा सरकार में बड़े पावरफुल हैं। खबर है कि अब सीबीआई वाले बातचीत के कारण तलाशने में लगे हैं। वैसे महादेव एप वाले अफसर भूपेश राज में पावर में थे तो उन्होंने अपने बैच मैट की मदद की थी, शायद वे अब कर्जा उतार रहे हों। जो भी हो, काल डिटेल चर्चा का विषय है।

बड़े नक्सली नेता दुबके

कहते हैं कि सुरक्षाबलों के आक्रामक तेवर से घबरा कर नक्सलियों के बड़े नेता दुबक गए हैं या बस्तर इलाका छोड़कर चले गए हैं। खबर है कि नक्सलियों के टाप लीडर बस्तर और आंध्रप्रदेश के अपने ठिकानों को छोड़कर विदेश चले गए हैं। चर्चा है कि कुछ नेपाल और श्रीलंका चले गए हैं। बड़े नेता और रणनीतिकार न होने से सुरक्षाबलों के हाथों नक्सली लगातार मारे जा रहे हैं। बस्तर में जवान लगातार आपरेशन चला रहे हैं और पहले के मुकाबले सुरक्षाबलों की संख्या भी काफी बढ़ गई है।